# RNT Journal of Social Science & Humanities

Vol.:1, No.: 1, January, 2021

ISSN : 2456-9720

RNT (Ravindra Nath Tagore) P.G. College
Kapasan, Chittorgarh (Raj.)
Email : rntkapasan1@gmail.com

RNT Journal of

# Social Science & Humanities

Vol.:1, No.: 1, January, 2021 ISSN : 2456-9720

**RNT (Ravindra Nath Tagore) P.G. College**
Kapasan, Chittorgarh (Raj.)
Email : rntkapasan1@gmail.com

# रविन्द्रनाथ टेगोर सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी पत्रिका


## मुख्य सम्पादक

**डॉ. वसीम खान**
निदेशक आर.एन.टी. ग्रुप ऑफ कॉलेजस्

## सम्पादक मण्डल (समिति)

प्रो. एस.एन.शर्मा, अकादमिक निदेशक (मो.9640706740)

प्रो. एस.एन.ए. जाफरी अधिष्ठाता, वरिष्ठ सलाहकार शोध एवं प्रोजेक्ट (मो. 9983505675)

डॉ. अफसार अली प्राचार्य (मो. 807683946)

डॉ. मधु कुमावत प्राचार्या (मो. 8239589903)

डॉ. ओमप्रकाश सुखवाल उपाचार्य सलाहकार समिति (मो. 9460040448)

प्रो. पल्लव नन्दवाना (दिल्ली विश्वविद्यालय)

प्रो. एच.एल.चन्डालिया (मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय), उदयपुर

प्रो. ए.पी.दुबे (सागर विश्वविद्यालय), मध्यप्रदेश

प्रो. अमिता सोलकी (बी.एम.एल.बी विश्वविद्यालय), गाजियाबाद

प्रो. संजय लोढा (मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय), उदयपुर

प्रो. अमीर रियाज (अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय), उत्तर प्रदेश

प्रो. इशाक मोहम्मद कायम खानी (मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय), उदयपुर

प्रो. जे.के. ओझा (मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय), उदयपुर

प्रो. सरवत निशा खान (मीरा गर्ल्स विद्यालय), उदयपुर

प्रो. के.एस.गुप्ता (मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय), उदयपुर

प्रो. माताप्रसाद (जे.आर.आर.एस. विश्वविद्यालय, जयपुर)

प्रो. एम.एन अंसारी (यु.जी.सी. सदस्य)

# पत्रिका के बारे में

रविन्द्रनाथ टैगोर सामाजिक विज्ञान व मानविकी एक षटमासिक पत्रिका है। इस पत्रिका का मुख्य उदेश्य शिक्षा के क्षेत्र मे होने वाले विभिन्न शोध कार्यों व नवाचारों से सुधीपाठकों को अवगत कराना है। शिक्षा जगत मे होने वाली विभिन्न गतिविधियों पर वैचारिक आदान–प्रदान के लिए भी यह पत्रिका एक मंच प्रदान करती है।

शिक्षा के क्षेत्र में सफल नेतृत्व हेतु प्राचार्यों को दुरदर्शा, लोकतात्रिक, उत्साही, ईमानदार, न्यायप्रिय, साहसिक, सवेदनशील, सेवाभावी, निरहकारी व चरित्रवान बनाने जैसे गुणों को विकसित करते हुए टीम भावना से कार्य कराना भी इस पत्रिका का उद्देश्य है।

आर.एन.टी. टीम के सदस्यों में निष्ठा व लगन जगाने के लिए प्रभावी सचार माध्यमों की उपादेयता की जानकारी कराना भी इस पत्रिका का एक उद्देश्य है।

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखको के अपने विचार है इसलिए इस में सपादक मण्डल व महाविद्यालय का कोई उतरदायित्व नहीं है। इन शोध आलेखो का बिना पूर्व अनुमति के पुनर्मुद्रण मान्य नही होगा।

# अनुक्रमणिका


| | | |
|---|---|---|
| 1. | चंदबरदायी - एक राव ( भट्ट ) योद्धा<br>अरविंद राव | 1 |
| 2. | भारत में बढ़ता लिंगभेद मानवीय सभ्यता के लिए घातक है।<br>हीरालाल अहीर | 5 |
| 3. | हिन्दी शिक्षण में प्रदत्त कार्य<br>मधु कुमावत | 8 |
| 4. | मानव विकास सूचकांक में भारत<br>ओम प्रकाश सुखवाल | 12 |
| 5. | भारत में भाषा नीतिः समस्या एवं समाधान<br>पिन्टु शर्मा | 16 |
| 6. | आधुनिक हिन्दी कृष्णकाव्य में कृष्ण का बदलता स्वरूप<br>सरिता वैष्णव | 22 |
| 7. | आधुनिक प्रदूषण<br>शिव नारायण शर्मा | 25 |
| 8. | नई शिक्षा नीति में डिजिटल स्वरुप लेती हिन्दी एवं सम्भावनाएं<br>श्रवण कुमार शर्मा, नीलम शर्मा | 30 |
| 9. | आधुनिकता के दर्पण में खोता हुआ बचपन<br>यासमीन | 33 |

# चंदबरदायी - एक राव ( भट्ट ) योद्धा

अरविंद राव
रविन्द्रनाथ टैगोर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कपासन

*चदबरदाई के जीवन चरित्र पर विभिन्न विद्वानों ने अलग–अलग विचार प्रकट किए। चदबरदाई की जन्मस्थली सारह यानी पजाब प्रदेश है। तथा सार अर्थात शक्ति के पुत्र होने से वे अपने आपको सारह गोत्र का बताते हैं राजस्थान के अजमेर में गुरु प्रसाद से इन्होंने छद, भाषा संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, पैशाची, ब्रजभाषा, शौरसेनी अथवा मगधी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया। सम्राट चौहान के दरबारी महाकवि चंदबरदाई का मूल नाम पृथ्वी चद था। जिसका प्रमाण जयानक भट्ट (राव) कृत पृथ्वीराज विजय के विजय सर 11 श्लोक संख्या 62 से प्राप्त होता है। हमारी मातृभाषा प्रारभिक हिंदी के जनक एवं प्रसिद्ध महाकाव्य पृथ्वीराज रासो के रचयिता महाकवि चदबरदाई का सपूर्ण जीवन वीरता, साहस, भक्ति, साधना एवं राष्ट्रीय भावना से परिपूर्ण ज्वलंत प्रेरणास्पद है। प्रस्तुत शोध में चदबरदाई के कवि होने के साथ अन्य कई विशेषताओं से अवगत किया है। पृथ्वीराज चौहान के परम सखा, सलाहकार, सामत, राजकवि चदबरदाई ने अपनी प्रतिभा के बल पर ज्वाला देश की जागीर प्राप्त कर भट्ट के स्थान पर राव या राजा की उपाधि प्राप्त की। चदबरदाई माता ज्वाला देवी के परम भक्त थे। इन्होंने अपने ग्रंथ पृथ्वीराज रासो में स्थान स्थान पर अपने काव्य की तुलना महाभारत से कि । इन्हें द्वितीय वेदव्यास भी कहा जाता है। भैरव बेताल सहित 52 वीरों की उपासना की, इसके बल पर पृथ्वीराज चौहान ने अनेक युद्धों में विजय प्राप्त की।*

## जीवन परिचय

चदबरदायी के जीवन चरित्र पर भिन्न–भिन्न विद्वानों ने अलग–अलग विचार प्रकट किये जैसे बलभद्र विलास नामक ग्रथ में सवत् 1132 (माघ शुक्ल त्रयोदशी), भारतीय विद्या भवन, बबई से आचार्य जिन विजय मुनि सम्पादित पुरातन प्रबध, आचार्य रामचंद्र शुक्ल के ग्रन्थ हिन्दी साहित्य का इतिहास, जयानक भट्ट कृत पृथ्वी राज विजय जैसे इतिहास प्रसिद्ध ग्रन्थों में से यह प्रसग महाभारत के द्रोपदी के चीर जैसा बनकर रह गया है। जबकि चंदबरदायी भारत के अंतिम हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज चौहान तृतीय के राजकवि, लेखक, परम सखा और भट्ट योद्धा के नाम से भारतीय इतिहास में सर्व परिचित है।

चदबरदायी ने स्वय के जन्म काल, स्थान के विषय में पृथ्वी राज रासो के प्रथम भाग में लिखा है–

**जीह जोति कवि चंद, रुप संजोगि भोगि भ्रम।**
**इक्क दीह उत्पन्न, इक दीहे समाय क्रम**
**ज्यौ भयौ जनम कवि चंद को, भयौ जनम सामंत तक**
**इकथान मरन जनमह सुइक, चाहि किकि ससि लग्गिरब।**

रासौ के इस छद कि पक्तियों के अनुसार कवि का कहना है कि जीवन ज्योति को रुप रंग के आधार पर भ्रम में भोग किया जाता हैं। ठीक उसी प्रकार चंद और पृथ्वी दोनों एक ही दिन जन्में और दोनों की मृत्यु भी एक साथ हुई। जो जन्म दिवस चंद का वो ही राजा (पृथ्वी) का भी है। दानों ने एक ही स्थान पर एक दूसरे को गले लगाकर कटार घोंप कर स्वय की इहलीला समाप्त कर ली।

पृथ्वीराज रासो के प्रथम समय (सर्ग रासौ के भाग को समय कहा जाता है।) की छंद संख्या 694 के अनुसार–

**एकादस से पंद्रह, विक्रम साक आनन्द।**
**तिहि रिपु जयपुर हरन कौ भय पृथिराज नरिन्द।।**

अर्थात 1115+91=1206 को पृथ्वीराज व चंद का जन्म हुआ। जिसे नागरी प्रचारिणी सभा काशी के सस्करण मे भी स्वीकार किया है।

महाकवि चन्दबरदाई ब्रह्मा जी के यज्ञ कून्ड में दी गई आहुतियों की भभकार से उत्पन्न हुवे, भट्टऋषि के वश में उत्पन्न हुवे है।

यजुर्वेद के 31 वे अध्याय में हुए। भट्टऋषि की सतति ब्रम्हभट्ट मानी जाती है। कवि भट्ट जाति जो वर्तमान समय में राव जाति कहलाती है। कवि चंदबरदायी के दूसरे महाकवियों की भाति स्वरचित ग्रथ पृथ्वी राज रासौ में लिखा है कि–

**भट्ट जाति कवियन नृपनि, नाथ नाम मोचंद उप्पम चंद सारह कहिये।**

अर्थात् चदबरदायी की जन्म स्थली सारह यानि पजाब प्रदेश होने तथा सार अर्थात् शक्ति के पुत्र होने से वे अपने आप को सारह गौत्र का बताते है।

रासौ भाग (समय) –2 के पृष्ठ स. 1269 पर देवी वचन से कहा कि–

**"सु कवि सो सरस्वती कहै, मौ तो अन्तर नाहिं।" में इस कथन की पुष्टि होती है।**

कवि चंद ने अपने ग्रथ रासौ में अपने माता–पिता की कोई जानकारी प्रदान नहीं की है, परन्तु चदबरदाई के माता–पिता का नाम कल्पित रूप में वेदन और कमला बताया जाता है। और पृथ्वीराज रासौ तथा पृथ्वीराज विजय के आधार पर वेनराव को चंद का पिता सिद्ध किया जाता है। **(भसीन,2016)**

## बचपन व शिक्षा–दीक्षा

राजस्थान के अजमेर में गुरुप्रसाद से इन्होने षट भाषा–संस्कृत, प्राकृत भाषा, अपभ्रश, पैशाची–ब्रज भाषा, शौर–सैनी अथवा मागधी भाषाओं का गुरु प्रसाद से ज्ञान प्राप्त किया। **(राव, 2016)**

**प्राकृत भाषा**– भारतीय इतिहास के मध्य युग में जो अनेक प्रादेशिक भाषाऐं विकसित हुई उन्हे सामान्यः प्राकृत भाषा कहा जाता है।

**अपभ्रंश**– आधुनिक भाषाओ के उदय के पुर्व बोलचाल और साहित्य रचना की भाषा, अर्थात व्याकरण शास्त्र में संस्कृत से इतर शब्दों को अपभ्रंश कहा जाता है।

**पैशाची**– पैशाची भाषा प्राकृत का ही नाम है जो प्राचीन काल में पश्चिमोत्तर प्रदेश में चलती थी जो पश्तो व उसके समीपवर्ती क्षेत्रों से उत्पन्न हुई है।चन्दबरदायी की शिक्षा दीक्षा पृथ्वाराज चौहान तृतीय के साथ हुई तथा लालन पालन भी दोनों का एक साथ हुआ। दोनों के एक साथ रहने से दोनों ही बाल्यावस्था से मित्रता के धागे में बंध गये जो मृत्यु तक बना रहा।

**विवाह**– चदबरदायी के विवाह के बारे में विभिन्न विद्वान एक मत नही है, परन्तु पृथ्वी राज रासौ ग्रन्थ मे संकेत अवश्य प्राप्त होता है, चद की दो पत्नियाँ कमला और गौरान थी, जिनके 10 बेटे–सुर, सुदर, सुजान, जालहान, अल्लह, बलभद्र, केहारी, वीरचंद, अवदूत, और गुनाराज और एक बेटी राजबाई थी। **(राव,2016)**

**सम्राट चौहान के दरबारी के रुप में (युवावस्था)**– महाकवि चंदबरदायी का मूल नाम "पृथ्वीचंद" था। जिसका प्रमाण जयानक भट्ट (राव) कृत पृथ्वीराज विजय के विजय सर्ग –12, श्लोक सख्या–62 से प्राप्त होता है। सभवतः आश्रयदाता सम्राट व कवि का नाम एक ही शब्द पृथ्वी से आरम्भ होने से कविवर ने अपना नाम बोलचाल में रासो ग्रन्थ पृथ्वीराज रासौ में चंद नाम का ही उल्लेख किया है।

अजमेर के चौहान राजाओं के यहा इनके पूर्वजों की यजमान वृति (वशावली लेखन) होने से वे पजाब से अजमेर आ गये। इनकी जीविका राजघराने से चलती थी और इनके घरानों को नागौर की जागीर प्रदान की गई थी। **(स्नातक ,2016.17)**

## प्रमुख उपाधियाँ

**राजा/राव**– हमारी मातृभाषा आदि हिन्दी के जनक प्रसिद्ध रासो महाकाव्य के रचयिता महाकवि का सम्पूर्ण जीवन वीरता, साहस, भक्ति, साधना, एवं राष्ट्रीय भावना से परिपूर्ण ज्वलत प्रेरणास्पद कहानी है। पृथ्वीराज चौहान के परम सखा, सलाहकार, सामंत, राज कवि, चदबरदाई ने अपने प्रतिभा के बल पर ज्वालादेश की जागीर प्राप्त कर भट्ट के स्थान पर राव या राजा की उपाधि प्राप्त की। तब से भट्ट इतिहास मे राव /राजा कहलाते है। भट्ट का शाब्दिक अर्थ विद्वानों का समूह सूचक शब्द, योद्धा, कलमकार होता है । महाकवि ने अपनी वाणी एवं कलम से इतिहास को एक नया रास्ता अपनी तलवार के दम पर विजय यात्राएं पूरी की साथ ही कला मे श्रेष्ठ कृति पृथ्वी राज रासो जैसा महाकाव्य न भूतो न भविष्यति ग्रथ की रचना की । **(राव,2016)**

**वरदाई** – चद माता ज्वालादेवी (जिनका मंदिर पंजाब हिमाचल प्रदेश की सीमा पर स्थित है ।) के परम भक्त थे । प्राचीन आख्यानों के अनुसार ये सृष्टि की एकमात्र ऐसी देवी है जिनकी रचना सर्वप्रथम हुई। उन्होने ही ब्रह्माण्ड एवं सृष्टि की, और वे कामदेवी के नाम से भारत वर्ष में विख्यात है। चंद ने अपनी भक्ति व साधना से देवी को प्रसन्न कर युद्ध में विजय होने का वरदान प्राप्त किया व तब से चद वरदाई कहलाये। चंदबरदाई महादेवी चडी के परम् भक्त थे।

**संदर्भ ग्रंथ – महाकवि गंगभट्टदृ पृष्ठ संख्या 19**
**नृसिंह राव – पीछाण ग्रंथ – पृष्ठ संख्या 111**

**कलादी**– चंद ने जहां भट्ट से राव/राजा, वरदाई की उपाधी ली नही बल्कि अपनी योग्यता से कलादी भी कहलाये।

द्वापर युग में भीमसेन की स्तुति पर प्रसन्न होकर माता ने कहा था कि कलिकाल मे मैं कुलिश्वरी के नाम से जानी जाऊगी, तब मै अपनी कला के रुप में अवतरित होऊगी। चंदबरदाई कृत सिद्ध देवी ग्रन्थ में नमो ज्वाला यानि कला ज्वालामुखी यानि पर्वत पर तौही ध्यावे अभै सिद्ध वरदान कौ चद पावै।

अतः चंदबरदाई के पूर्वज कालिका प्रसाद पर कलादी अर्थात कला देवी ने प्रसन्न होकर कटारी भेंट करने के साथ पच दश विद्या एवं षोंडशकला प्रदान की।

**गौरी देवी स्तुति प्रीत्या, तंत्रानुपादिषत्**
**ददो पंचदषी विद्या, षोंडशी सुकलागमान।**

(भट्टख्यानम् 14)

तब सें ही कालिका प्रसाद अपने साथ कटारी रखते हुए चारो दिशाओं में काव्य कला कर विजय प्राप्त करके काव्य विद्या यानि कला की शक्ति से कलादी कहलाये। चद कलादी वश से ही थे अतः ये कलादी उपाधी वंश वृक्ष से प्राप्त की।

**द्वितीय वेद व्यास/ वेद व्यास का अवतार**– पृथ्वी राज रासौ के रचियता ने स्थान –स्थान पर अपने काव्य की तुलना महाभारत से की। महाभारत को सस्कृत का ज्ञान कोश कहा जाता है। पृथ्वीराज रासौ के प्रणेता के मन में महाभारत के अनुकरण की बलवती स्पृहा रही है जो इन पंक्तियों में प्रमाणिक होती है।

**काव्य समुद्र कर्वाचंद कृत, मुगति से धन ग्यान,**
**राजनीति दोहिय सफल। पार उतारन यान,**
**पारासर जो पुत्र वियामह। संतवती ग्रम्य गुरु भासह,**
**प्रवच अठारह, सवा लाख लक्ष्वै। तौ भारत गुरु लत्व विसवै।।**

वही शिव पुराण में वेद व्यास ने कहा है कि–

**व्यास कहे कलयुग के आदि, से धरहीं अवतार कलादी।**
**करही प्रसिद्ध विश्वमत व्यासा, श्रुति पुराण चहु और प्रकाशा।।**

इन पंक्तियों का अर्थ है–भगवान शिव ने कलादी नाम से वेद मूर्ति भट अंश अवतार धारण कर व्यास के मतों को विश्व मे फैलाया और वेद व पुराणों का प्रचार–प्रसार किया। जिनके कारण इन्हें वेद व्यास का अवतार भी कहा जाता है।

**रासो परम्परा व हिन्दी के प्रथम कवि**– ग्यारहवी शताब्दी में लगभग जैन कवियों द्वारा रास साहित्य रचा गया तथा उसी के

समानान्तर राज्याश्रय कवियों ने रासो साहित्य लिखा जो तत्कालीन, ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक, सास्कृतिक परिस्थितियों मे निर्मित किया गया।

रासौ शब्द रास, रासक, रासउ, रासु, रासलउ, रासो नामो से साहित्य मे प्रेम व श्रृगार व रचनाओ को रास तथा वीरतापरक काव्यो को रासो की सज्ञा दी गई है। रासो साहित्य राजस्थान की ही देन है। (जयसिंह, शर्मा, 2010)

पुस्तक – रासो शब्द की उत्पत्ति के छ रुप प्राप्त होते है रासो, रासौ, रासा, रायसा, रायसो। विद्वानो ने रासो की उत्पत्ति मूलत: सस्कृत के रास शब्द से व्युत्पन्न मानी है। (शर्मा रेखा, 2010)

निस्सदेह रास, रासक, और रासो आदिकालीन हिन्दी साहित्य का सर्वाधिक लोकप्रिय काव्यरुप है, जिनमे खुमाण रासो, बीसलदेव रासो, पृथ्वीराजरासो, विजयपाल रासो प्रमुख है।

चदबरदायी हिन्दी के प्रथम महाकवि माने जाते है। और इनका ग्रन्थ पृथ्वीराजरासो हिन्दी का प्रथम महाकाव्य है। चद दिल्ली के अतिम हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज चौहान तृतीय के सामत और राज कवि व परम सखा थे। चद को षड् भाषा, व्याकरण, काव्य, साहित्य, छन्दशास्त्र आदि के अनेक विधाओं में पारगत थे।

युद्ध, आखेट, सभा, यात्रा मे सदा राजा के साथ रहते थे। पृथ्वी राज रासो 25000 पृष्ठों का बहुत बडा ग्रन्थ है जिसमें 69 समय (सर्ग) है। प्राचीन समय में प्रचलित प्राय: सभी छदो का इस ग्रन्थ मे उपयोग हुआ है, जिसमें कविता, दुहा, तोमर, त्रोटक, गाहा, और आर्या मुख्य है।

इस ग्रन्थ का रचना काल पृथ्वीराज के समय 1165ई से 1192ई. तक का है। चौहानो ने दिल्ली व अजमेर पर इसी समय राज किया था। जिस प्रकार कादबरी के सबध मे प्रसिद्ध है कि उसका पिछला भाग बाणभट्ट के पुत्र ने पुरा किया वैसे ही इसका पिछला भाग भी चद के पुत्र जल्हण ने पुरा किया ऐसा कहा जाता है।

**पूस्तक जल्हन हत्थ दै चलि गज्जन नृपकाज।**
**रघुनाथचरित हनुमंतकृत, भूप भोज उद्ध रिय जिमि,**
**पृथिराज सुजस कवि, चंद कृत चंद नंद उद्ध रिय तिमि।।**

(सिंह,1970)

अर्थात रासो के अनुसार जब गौरी पृथ्वीराज रासौ को कैद करके गजनी ले गया तब जाते समय कवि ने अपने पुत्र जल्लहण के हाथ में रासौ की पुस्तक देकर उसे पूर्ण करने का आदेश या सकेत दिया। चंद ने इस महाकाव्य मे साहित्य व्याकरण, पिंगल अलकार, व ज्योतिष शास्त्रों आदि विषयों का उल्लेख अपने ग्रन्थ में किया है–

**छंद प्रबंध कवित यति, साटक गाह दुहत्थ,**
**लघु गुरु मंडित खंडि यह, पिंगल अमर, भरत्थ।**

(चतुर्वेदि, 2010)

राव जाति के विद्वानो/कवियों की कालान्तर में काव्य भाषा ब्रज पिंगल रही है।

"डिगल चारण चातुरी, पिंगल भट्ट प्रकाश" यह एक काव्योपह जीवी जाति है।

**गौरीवध में सहायता व स्वयम् की मृत्यु**– चदबरदायी को माता ज्वालादेवी का युद्ध में विजयी हो का वरदान था।

**करि विनतीयों बंदीजन, सनमुख रहयो सुजान।**
**प्रकट अंबिका मुख कहुयो, मांग चंद वरदान।।**

चदबरदायी ने भैरव ,वैताल सहित 52 वीरो की उपासना कर इनके बल पर पृथ्वी राज चौहान ने अनेक युद्धो में विजय प्राप्त की। तथा शहाबुद्दीन गौरी को भी तराईन के प्रथम युद्ध मे पराजित किया।

तराईन के युद्ध मे जब गौरी पृथ्वी राज को गजनी लेकर गया, तब कुछ दिनो बाद चद भी वहा चले गये। गजनी पहुच कर चद ने पृथ्वी राज चौहान को शहाबुद्दीन मोहम्मद गौरी के कैद खाने मे पृथ्वी के कष्टों का समाचार मिला। वे अपने स्वामी व मित्र के उद्धार लिये अवधुत के वेश में शहाबुद्दीन गौरी से मिला। और तत्पश्चात पृथ्वीरासोमिला। शहाबुद्धीन गौरी ने जब जाने का कारण पुछा तो उसने बताया कि वह बकद्रकाश्रम जाकर तप करना चाहता है परन्तु एक साध (इच्छा) उसके हृदय मे शेष थी इसलिये वह अभी वहा नही गया, उसने बताया कि वो और पृथ्वाराज बचपन मे एक साथ बडे हुए तथा खेले थे। उस समय पृथ्वाराज ने उससे कहा था कि वह सिंगिनी के द्वारा बिना फल के बाध से ही सात घडियालों को एक साथ बेध सकता है। उसका यह कौशल वह नही देख सका था, और अब वह देखकर अपनी वह साध पूरी करना चाहता था।

गौरी ने कहा कि वह तो अंधा( पृथ्वीराज) किया जा चुका है, चद ने कहा कि वह फिर भी वैसा सधान कौशल दिखा सकता है, उसे यह विश्वास था। शहाबुद्दीन गौरी ने उसकी यह माग स्वीकार कर ली। तत्सबधि सारा प्रबंध किया। तत्पश्चात चद ने कारा गृह मे जाकर पृथ्वी राज तृतीय को सारी गुप्त योजना से अवगत करा दिया तथा शत्रु के वध का आग्रह स्वीकार कर लिया। पृथ्वी राज से स्वीकृति लेकर चद शहाबुद्दीन गौरी के पास गया और कहा कि वह लक्ष्य वैध करने को तभी तैयार हुआ है जब शहाबुद्दीन गौरी खुद अपने मुख से तीन बार लक्ष्य वैध करने का आहवान करे। शहाबुद्दीन गौरी ने स्वीकार किया। शहाबुद्दीन गौरी ने दो फरमान दिये ज्योही तीसरा फरमान दिया और चद ने गौरी के राजसिंहासन की दूरी को अपने इस दोहे द्वारा बताई–

**चार बांस चैबिस गज अंगुल अष्ट प्रमाण।**
**ता उपर सुल्तान है, मत चुके चौहान।।**

## संदर्भ


1 मसीन प्रेमलता, स्नातक विजेन्द्र (2016-17), पूर्वाधुनिक आख्यान मूलक काव्य–मुक्त शिक्षा विद्यालय– दिल्ली वि.वि पृष्ठक–2)

2 भट्टख्यानम् चरितम्।

3 रावसुखदेव, पिछाणग्रन्थ– WWW.kzivni.org,WWW.wikipidia.com पृष्ठ सख्या–112

4 नीरज जयसिंह, शर्मा भगवती लाल,2010 पुस्तक– राजस्थान की सास्कृतिक परम्परा पेज न.–181

और शब्द भेदी बाण से शहाबुद्दीन गौरी को धराशाही कर दिया और एक दूसरे के सीने में कटार घोंप अपनी जीवन लीला का अन्त कर मित्रता और देशप्रेम कि अमर छाप छोडकर संसार को अलविदा कह दिया।

चंद ही नही उसके पूर्व वंशज राव जाति के महाभारत युगीन संजय व सुमन्त तो गुप्त युगीन वेताल भट्ट, बाणभट्ट, कालिका प्रसाद, नरहरी, भूषण भट्ट, बीरबल, महाकवि गंगभट्ट, केदार भट्ट आदि युग दृष्टा रहे तथा आज भी समाज में देश भक्ति, कवित्व, विद्वता व वीरता से सम्मानित है। जिन्होंने न केवल कलम से वरन् आवश्यकता पडने पर तलवार से भी देश की रक्षा की। ऐसे राव भट्ट योद्धा को नमन्।

5. चतुर्वेदी मंजु (2010) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ संख्या–35,36
6. शर्मा रेखा (2010) अनुसंधान पेपर– वज्र एवं खडी बोली सा. परम्परा
7. सिंह ओमप्रकाश (1970), आचार्य रामचंद्र ग्रन्थावली, भाग–5
8. www.jivni.org/www.wikipidiya.com

❑❑❑

# ''भारत में बढ़ता लिंगभेद मानवीय सभ्यता के लिए घातक है।''

हीरालाल अहीर
रविन्द्रनाथ टैगोर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कपासन

*देश में बढ़ता लिंगभेद मानवता के लिए अभिशाप है। लिंग भेद को मनोवैज्ञानिक एवं समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में परिभाषित किया जा सकता है। लिंग असमानता के मुख्य रूप से तीन सिद्धात है 1. उदारवादी सिद्धात 2. मार्क्सवादी सिद्धात तथा 3. उग्र उन्मूलनवादी सिद्धात समाज में नारी की दयनीय स्थिति के मुख्य कारण पूजीवाद तथा पितृसत्तात्मक व्यवस्था है। लिंग असमानता के अनेक पहलू है, जिसे लिंग की सामाजिक संस्कृति का समानताए स्थान सबधी और समानता गृहस्थी के कार्य एवं लिंग समानता पूजन में असमानता भ्रूण हत्या, वर लिंग असमानता, दहेज व लिंग असमानता है। तथा आर्थिक क्षेत्र व लिंग सबधी समाज में रूढिवादी परपराए स्त्री शिक्षा का निर्णय अनुपात पुत्र मोह पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था आदि देश में लिंग समानता के प्रमुख कारण है। प्रस्तुत लेख में हमने लिंग असमानता के निवारण आरती शिक्षा को बढावा देने के साथ–साथ जनचेतना जागृत करने समाज में पुरुषों बदलने तथा रूढ़ीवादी परपराओं मान्यताओं तथा रीति–रिवाजों में परिवर्तन लाने की अनुशसा की ह') आलेख में से तक के लिंगानुपात सबधी तालिका का समावेश किया गया है साथ ही देश के अधिकतम व न्यूनतम लिंगानुपात वाले राज्यों एव केंद्र शासित प्रदेशों की सूची से इसे और भी अधिक ज्ञानवर्धक रोचक व उपयोगी बना दिया गया है।*

## प्रस्तावना

लिंग शब्द व यौनशब्द दोनों एक दूसरे से सम्बन्धित है। लिंग से तात्पर्य स्त्री व पुरूष के जैविक लक्षणों को वैज्ञानिक अध्ययन से है। पिछले कुछ वर्षो से ऐसे अध्ययनों के लिए अंग्रेजी भाषा का ''सेक्स'' शब्द प्रयुक्त किया जाने लगा है। सामाजिक विज्ञान व समाजशास्त्र में स्त्री पुरूषों का अध्ययन लिंग के आधार पर किया जाता है, अर्थात जीव विज्ञान की अवधारणा के अनुसार नर व मादा के जैविक लक्षणों, विविधताओं (जैसे जनन, शरीर रचना, शुक्राणु, अण्डाणु, गर्भाधान आदि) के अध्ययन का आधार लिंग कहलाता है। इसी लिंग शब्द के आधार पर मानव समाज में अनेकों सामाजिक सम्बन्धों का निर्माण हुआ जैसे पति–पत्नी, माता–पिता, भाई–बहिन, पुत्र–पुत्री आदि मानव समाज में स्त्री व पुरूष की प्रस्थिति का निर्धारक तत्व लिंग कहलाता है। समाजशास्त्र में लिंग शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग **अन्न ओकेल** ने 1972 में किया था।

**लिंग की परिभाषा 'अन्न ओकेल' के अनुसार** – इन्होंने अपनी पुस्तक सेक्स जेण्डर एण्ड सोसायटी में लिखा है ''यौन या यौन भेद का अर्थ स्त्री व पुरूष का जैवकिय विभाजन से है जिसमें मुख्यतः स्त्रीत्व व पुरूषत्व के रूप में असमानताओं का विभाजन है।''

## लिंग असमानता का अर्थ व परिभाषा

लिंग असमानता एक समाजशास्त्रीय महत्वपूर्ण अवधारणा है जिसका प्रयोग स्त्री पुरूषों के बीच सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, मनोवैज्ञानिक, शैक्षिक व अन्य सभी विशेषताओं और लक्षणों के आधार पर भिन्नताओं का क्रमबद्ध व व्यवस्थित अध्ययन और विश्लेषण किया जाता है।

## परिभाषा

समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य के अनुसार लिंग असमानता स्त्री व पुरूष के बीच पाई जाने वाली प्रस्थिति व भूमिका जन्य स्थिति के साथ–साथ समाज में स्त्री पुरूषों के बीच पाये जाने वाले असंतुलित अनुपात से है।

## लिंग असमानताएं

समाजशास्त्र में 1970 तक केवल स्त्री व पुरूषों के जैवकीय लक्षणों के आधार पर पायी जाने वाली असमानताओं का अध्ययन किया जाता था लेकिन 1972 में अन्न ओकेल ने समाजशास्त्र में इस अवधारणा का सर्वप्रथम प्रयोग किया। इस अवधारणा के तहत समाजशास्त्र तथा मनोविज्ञान में लिंग भेद से सम्बन्धित अध्ययनों की तरफ वैज्ञानिकों का ध्यान गया। जिसमें समाज में स्त्री व पुरूषों के बीच निम्न यौनि भेदो पर ध्यान दिया जाने लगा– सामाजिक असमानता, सांस्कृतिक असमानता, धार्मिक असमानता, आर्थिक असमानता, प्रस्थिति व भूमिका जन्य असमानताओं का अध्ययन आदि।

## लिंग असमानता के सिद्धान्त

समाजशास्त्रीयों ने समाजशास्त्र में लिंग असमानता का अध्ययन करने के लिए तीन सिद्धान्तों का प्रयोग किया है। 1. उदारवादी सिद्धान्त 2. मार्क्सवादी सिद्धान्त 3. उग्रउन्मूलनवादी सिद्धान्त। उदारवादियों के अनुसार लिंग असमानता का मुख्य कारण समाज में स्त्रियों के प्रति किया जाने वाला समाजिक भेदभाव है तथा मार्क्सवादी यह मानते है कि नारी का शौषण करने के कारण समाज में लैंगिक असमानता उत्पन्न हुई है एवं उग्रउन्मूलनवादियों की मान्यता है कि समाज में नारी की दयनीय प्रस्थिति व भूमिका का मुख्य कारण पूंजीवाद व पितृसतात्मक सामाजिक व्यवस्था है।

## भारतीय परिप्रेक्ष्य में लिंग असमानताएं

भारतीय समाज में सिन्धु घाटी व वैदिक सभ्यता में स्त्री–पुरूषों के बीच भेद केवल स्त्रीत्व व पुरूषत्व के आधार पर किया जाता था परन्तु परिवर्तन रूपी चक्र की गति के साथ–साथ सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन होते गये जिससे मानव समाज के विकास की प्रत्येक अवस्था में गिरावट आती गयी। यह क्रम सल्तनतकाल से

प्रारम्भ होता है जो देश की आजादी तक चलता गया। इस अवधि में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति में व्यापक परिवर्तन होते गये जिसमें इनकी प्रस्थिति में गिरावट सर्वप्रमुख है। स्त्रियों की सामाजिक प्रस्थिति में हुए परिवर्तन का अध्ययन निम्न बिन्दुओं में किया जा सकता है।

1. **लिंग की सामाजिक–सांस्कृतिक असमानताएं** – समाज की रचना पुरूषों व स्त्रियों से मिलकर बनती है। स्त्री व पुरूष परस्पर क्रिया व प्रतिक्रिया से सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करते है। सामाजिक परम्परा के अनुसार स्त्री व पुरूष की निश्चित प्रस्थिति व भूमिकाएं होती है जो लिंग भेद पर आधारित होती है। **(गुप्ता, 2013)**

2. **स्थान, सत्ता, वंश, लिंग, असमानता** – समाज में विवाह के बाद कुछ जनजातियों को छोड़कर (नायर, गारो, खासी) स्त्री को पुरूष के घर जाना पड़ता है एवं सत्ता पिता से पुत्र को स्थानान्तरित होती है पुत्री को नही। इसके अतिरिक्त संतान को समाज में पहचान पिता की मिलती है माता की नही।

3. **गृहस्थी के कार्य व लिंग असमानता** – समाज में गृहस्थी के सभी कार्य जो घर के अन्दर संपादित किये जाते है उन सभी कार्यो को महिलाएं करती है पुरूष नही।

4. **भोजन में असमानता** – समाज में स्त्रियों को भोजन सम्बन्धित अनेकों असमानताओं का सामना करना पड़ता है जसे कम खाना मिलना, अधिक और पौष्टिक भोजन पुत्र को देना, ठण्डा बचा हुआ खाना स्त्री स्वयं खाती है और अपनी बेटी को खिलाती है।

5. **भ्रुण हत्या व लिंग असमानता** – विज्ञान के आविष्कारों ने मानव जीवन को अनेकों सुविधाएं दी है परन्तु इन सुविधाओं का दुरूपयोग भी हो रहा है। जैसे एम्नियोंसेंटिसिस प्रक्रिया से गर्भस्थ शिशु के लिंग का पता लगाया जाता है। यदि गर्भ में पल रहा बच्चा पुत्री है तो गर्भपात करवा दिया जाता है परन्तु पुत्र होने पर नही।

6. **दहेज व लिंग असमानताएं** – भारत की अधिकांश जातियों में दहेज प्रथा का प्रचलन है। जिसमें विवाह के समय पुत्री के पिता को पुत्र पक्ष वालों को भारी भरकम धन राशि विवश होकर चुकानी पड़ती है। इस प्रकार की राशि दहेज कहलाती है। वर पक्ष को इस प्रकार की राशि नही देनी पड़ती है।

7. **शिक्षा व लिंग असमानता** – समाज में लड़कों की शिक्षा पर अधिक खर्च किया जाता है एवं उच्च शिक्षा के सभी अवसर उपलब्ध करवाये जाते है। इसके विपरित लड़कियों को प्राथमिक शिक्षा तक भी नही पढ़ाया जाता है। लोगो की इसके पिछे यह सोच होती है कि लड़कियों को पराये घर जाना है।

8. **आर्थिक क्षेत्र व लिंग असमानता** – भारत की श्रमशक्ति में स्त्रियों का प्रमुख स्थान आता है क्योंकि सभी घरेलू सभी कार्य करने के बाद कृषि कार्य में हाथ बटाती है। इसके बावजूद भी उत्पादन प्रक्रिया में स्त्रियों के योगदान को नगण्य माना जाता है, जो श्रमिक महिलाएं मजदूरी पर जाती है उन्हे पूर्ण पारिश्रमिक नही मिलता है। **(महाजन डॉ धर्मवीर,2003)**

## भारत में लिंग असमानता के कारण

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से भार में लिंग असमानता के अनेकों कारण है परन्तु उनमें से महत्वपूर्ण कारण निम्न है–

1. समाज में रूढ़िवादी परम्पराएं।
2. समाज में शिक्षा का पूर्ण अभाव।
3. स्त्री शिक्षा का निम्न अनुपात।
4. समाज में पुत्र मोह का धार्मिक कारण।
5. समाजीकरण की प्रक्रिया में किया जाने वाला भेदभाव।
6. स्वयं स्त्रियों की अज्ञानता।
7. देश पर किये गये विदेशी आक्रमणों का प्रभाव।
8. समाज में निम्न प्रस्थिति व भूमिका का होना।
9. पितृ सत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था का होना।

## भारत में लिंग असमानता निवारण के सुझाव

सामाजिक दृष्टिकोण से भारत में लिंग असमानता को कम करना अति आवश्यक है क्योंकि सन्तुलित लिंगानुपात के बिना आज के इस भौतिक युग में हम विकास की यात्रा में अपने जीवनरूपी रथ को आगे नही बढ़ा सकते है। इसके लिए हमें समाज में निम्न प्रयास करने होंगे।

1. स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देकर।
2. सामाजिक अज्ञानता का निवारण करके।
3. जनचेतना को जनमानस तक पहुचा करके।
4. समाज में पुरूषों की सोच बदल करके।
5. समाज की रूढ़िवादि परम्पराओं, मान्यताओं रिति–रिवाजों का उन्मूलन करके।

इन प्रमुख सुझावों को समाज की सामाजिक व्यवस्था में प्रयुक्त करके लिंग असमानता का निवारण किया जा सकता है। (सुधाकर, 2003)

## भारतीय सामाजिक परिप्रेक्ष्य में लिंगानुपात का महत्व

लिंगानुपात का सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में महत्वपूर्ण योगदान होता है क्योंकि जिन क्षेत्रों में लिगानुपात में विषमता पायी जाती है उन क्षेत्रों में अनेकों सामाजिक समस्याएं अपराध के स्वरूप अधिक देखे जाते है। इसके विपरित जिन क्षेत्रों में लिंगानुपात सन्तुलित पाया जाता है उन क्षेत्रों में सुदृढ़ सामाजिक संगठन व आदर्श सामाजिक व्यवस्थाएं पायी जाती है। अतः लिंगानुपात के द्वारा भी किसी देश, राज्य की आर्थिक भौगोलिक और सामाजिक स्थिति का विश्लेषण आसानी से किया जा सकता है।

भारत में 1901 से 2011 तक का लिंगानुपात

| वर्ष | लिंगानुपात |
|---|---|
| 1901 | 972 |
| 1911 | 964 |
| 1921 | 955 |
| 1931 | 950 |
| 1941 | 945 |
| 1951 | 946 |
| 1961 | 941 |
| 1971 | 930 |
| 1981 | 934 |
| 1991 | 927 |
| 2001 | 933 |
| 2011 | 940 |

भारत के अधिकतम व न्यूनतम लिंगानुपात वाले पांच राज्य

| अधिकतम लिंगानुपात | न्यूनतम लिंगानुपात |
|---|---|
| केरल – 1084 | हरियाणा – 879 |
| तमिलनाडू – 996 | जम्मू कश्मीर – 889 |
| आंध्रप्रदेश – 993 | सिक्किम – 882 |
| मणिपुर – 992 | पंजाब – 895 |
| छतिसगढ – 991 | उत्तर प्रदेश – 912 |

भारत के अधिकतम व न्यूनतम लिंगानुपात वाले केन्द्रशासित राज्य

| अधिकतम लिंगानुपात | न्यूनतम लिंगानुपात |
|---|---|
| पुदूचैरी – 1037 | दमन दीव – 618 |
| लक्षदीप – 946 | दादरनगर हवेली – 774 |
| अण्डमान निकोबार – 876 | |
| दिल्ली – 868 | |
| चण्डीगढ – 818 | |

भारत के लिंगानुपात के आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि जहां 1901 में भारत में लिंगानुपात 972 था वही 1951 में 946 रह गया। 2001 में लिंगानुपात और घटकर 933 ही रह गया। इस प्रकार देश की आजादी के बाद तीव्र गति से घटता लिंगानुपात मानव जाती के लिए प्रश्न चिह्न सा उत्पन्न कर देता है यह सत्य है कि 2011 के आँकडों के अनुसार लिगानुपात 940 होना एक संतोषजनक नही परन्तु आशावाद की तरफ संकेत देती है। (अहूजा, 20014)

## सन्दर्भ

1. अहूजा राम (2014)– भारतीय समाज रावत पब्लिकेशन नई दिल्ली.
2. महाजन एव महाजन(2003) – भारतीय समाज मुद्दे एव समस्याएं विवेक प्रकाशन जवाहर नगर दिल्ली.
3. महाजन डॉ धर्मवीर, महाजन डॉ कमलेश(2003) – समाजशास्त्र का परिचय विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर दिल्ली।
4. नागर डॉ पुरुषोत्तम (2003) –आधुनिक भारतीय एव राजनीतिक चिंतन राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी
5. सिद्धि डॉ नरेंद्र कुमार, गोस्वामी सुधाकर, (2003) समाजशास्त्र विवेचन राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर.
6. गुप्ता डॉ. शिवनारायण ( 2013) जनाकिकी के मूल तत्व रदा पब्लिकेशस प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली.

❑❑❑

# हिन्दी शिक्षण में प्रदत्त कार्य

मधु कुमावत
रविन्द्रनाथ टैगोर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कपासन

*भारत देश में भाषा शिक्षण के अंतर्गत छात्र–छात्राओं में भाषाई कौशलों के विकास हेतु समय–समय पर अनेक शिक्षण विधियों का आगमन हुआ है। और इन शिक्षण विधियों के माध्यम से भाषा शिक्षण करवाया जाने लगा। समय के अंतराल पश्चात परंपरागत शिक्षण विधियों के स्थान पर नवीन शिक्षण विधियों का सूत्रपात हुआ और नवीन शिक्षण विधि को अपनाया जाने लगा। प्रस्तुत आलेख में प्रदत्त कार्य आधारित व्यू रचना पर बल दिया गया है, इसमें विद्यार्थी स्वयं कार्य करके सीखता है। प्रदत कार्य आधारित समस्या को विद्यार्थी शिक्षक के मार्गदर्शन में समूह द्वय समूह में हल करने या आसानी से हिंदी विषय में कहानी, कविता, निबंध, लघु कथा, पत्र लेखन तथा व्याकरण संबंधी ज्ञान का अधिगम कर सकते हैं। आलेखानुसार विद्यार्थी विषय वस्तु से सूचनाओं का आकलन कर संकलित सूचनाओं को रचना कौशल के माध्यम से स्थानांतरित एवं अभिव्यक्त कर सकते हैं। आलेख में कार्यभारित व्यूह रचना में शिक्षण के चरण शिक्षण की भूमिका तथा विद्यार्थियों की भूमिका पर सारगर्भित प्रकाश डाला गया है। हिंदी शिक्षक के लिए यह एक उपयोगी आलेख सिद्ध होगा।*

## प्रस्तावना

इस शोध कार्य में प्रदत्त कार्य (टास्क) आधारित व्यूह रचना से तात्पर्य पठन एवं रचना कौशल की उस गतिविधि से है जिसमें विद्यार्थी द्वय समूह अथवा समूह में अध्यापक द्वारा प्रदत्त कार्य (टास्क) करते हैं, हिंदी भाषा में किसी पठन सामग्री का अध्ययन कर संकलित सूचना को रचना कौशल के माध्यम से स्थानान्तरित एवं अभिव्यक्त करते हैं तथा रचनात्मक लेखन (कहानी, निबन्ध, पत्र, सार–संक्षेप, यात्रा वर्णन, संस्मरण, रेखाचित्र, प्रतिवेदन इत्यादि) कौशल का विकास करने से है। इसके अंतर्गत छात्र प्रदत्त कार्य (टास्क) आधारित गतिविधियाँ करते हैं। गतिविधियाँ विषय वस्तु की प्रकृति के अनुसार शिक्षक द्वारा निर्धारित की जाती है।

प्रस्तुत व्यूह रचना में इस बात पर विशेष बल दिया गया कि विद्यार्थी स्वयं कार्य करके हिंदी भाषा सीखे। यदि छात्र स्वयं कार्य करता है तथा अपनी अभिव्यक्ति भी वह अपने आधार पर करता है तो उसमें हिंदी भाषा में मौखिक एवं लिखित संप्रेषण कौशल का विकास होता है। प्रस्तुत व्यूह रचना में विषय वस्तु का शिक्षण परम्परागत तरीके से नहीं करवाया जाता है। इसके अंतर्गत पाठ का आरंभ ही गतिविधियों के द्वारा शुरू किया जाता है। विद्यार्थी यहाँ अपनी बात को अपने अनुसार अभिव्यक्त करना सीखता है। इस व्यूह रचना में संप्रेषण पर बल दिया जाता है।

प्रस्तुत व्यूह रचना में छात्र चर्चा, परिचर्चा कर समूह में कार्य करने को प्रेरित होते हैं। इस व्यूह रचना के अंतर्गत शिक्षिका छात्रों की रुचि को ध्यान में रखते हुए विषय वस्तु का चयन करती है तथा चयनित विषय वस्तु को प्रदत्त कार्य (टास्क) के आधार पर छात्रों से समस्या हल करवाती है। छात्र विचार–मंथन करते हुए शिक्षिका के मार्गदर्शन में प्रदत्त कार्य (टास्क) को हल करते हैं तत्पश्चात् छात्र शिक्षिका को अधिगम कार्य का निष्कर्ष बताते हैं। इस प्रकार छात्र प्रदत्त कार्य (टास्क) की इस प्रक्रिया द्वारा हिंदी भाषा, विषय वस्तु एवं संप्रेषण कौशल को सीखते हैं।

## प्रदत्त कार्य (टास्क) आधारित व्यूह रचना की संप्रत्यात्मक रूपरेखा

सामान्यतः भाषा शिक्षण में प्रदत्त कार्य (टास्क) से अभिप्राय व्याकरण की विभिन्न गतिविधियों एवं अभिनय से समझा जाता है। परन्तु इस शोध में इसे भिन्न रूप में देखा गया है। यहाँ प्रदत्त कार्य (टास्क) से तात्पर्य पठन एवं रचना कौशल की उस गतिविधि से है जिसमें विद्यार्थी विषयवस्तु को पढ़कर उसमें से सूचनाओं को सकलित करता है एवं उन संकलित सूचनाओं को रचना कौशल के माध्यम से स्थानान्तरित एवं अभिव्यक्त करता है।

प्रसिद्ध समकालीन भाषा वैज्ञानिक **जेन विलिस** (2004) ने अपनी पुस्तक "A Frame Work for Task-based Learning" में प्रदत्त कार्य (टास्क) को इस प्रकार परिभाषित किया है–

"Tasks are always activities where the target language is used by the learners for a communicative purpose (goal) in order to achieve an outcome."[7]

"प्रदत्त कार्य (टास्क) वह कार्य अथवा गतिविधियाँ हैं जिनमें विद्यार्थी पढ़ायी जाने वाली भाषा का प्रयोग किसी उद्देश्य की प्राप्ति एवं संप्रेषण के लिए करते हैं।"

प्रदत्त कार्य (टास्क) एक ऐसा दृष्टिकोण है जिसमें सीखने के साथ सार्थक कार्य निश्चित समय में पूर्ण किए जा सकते है। जेन विलिस ने यह भी कहा कि कार्य करने के लिए वास्तविक जीवन स्थितियाँ एवं शैक्षिक उद्देश्य भी हो सकते हैं।

**जेन विलिस के अनुसार प्रदत्त कार्य (टास्क) के प्रकार :–**

1. सूचीबद्ध करना (विचार मंथन, तथ्यों का सग्रह करना) आदि।
2. क्रमबद्ध करना (विषयवस्तु को क्रमबद्ध करना तथा उसमे से निर्देशानुसार शब्दों को छाँटना) आदि।
3. तुलना करना (समानता, भिन्नता के आधार पर तुलना करना) आदि।

4. समस्या समाधान (पहेली, जीवन सबंधी समस्या, अधूरी कहानी कविता को पूर्ण करना) आदि।

5. स्व अनुभव बाँटना (घटना, यात्रा वृत्तात, विचार स्व–चितन) आदि।

**प्रो. एन.एस. प्रभू** (1991) ने 'टास्क' को इस प्रकार परिभाषित किया है–

"प्रदत्त कार्य (टास्क) से तात्पर्य उस गतिविधि से है जिसमें विद्यार्थी किसी प्रदत्त सूचना के माध्यम से किसी विचार प्रक्रिया से किसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं।"

एन.एस. प्रभू ने प्रदत्त कार्य (टास्क) के चार प्रकार बताए है–

1. **नियम केन्द्रित गतिविधियाँ**– इसके अतर्गत व्याकरण एव भाषायी नियमो से सबधित गतिविधियाँ करवाई जाती है जिससे छात्रों को नियमो का प्रत्यास्मरण हो सके।
2. **स्व–केन्द्रित गतिविधियाँ**– इसके अतर्गत दोहरान कार्य से संबधित गतिविधियाँ करवाई जाती है।
3. **बोधगम्य गतिविधियाँ**– इसके अतर्गत वह गतिविधियाँ करवाई जाती हैं जो अर्थ आधारित होती है ताकि छात्र कुशलतापूर्वक भाषा के अर्थ को समझ सके।
4. **अर्थ–केन्द्रित गतिविधियाँ**– इसके अतर्गत तीन प्रकार की गतिविधियाँ करवाई जाती है–
   - अ. सूचना अतराल गतिविधियाँ (सूचनाओ को एक जगह से दूसरी जगह स्थानान्तरित करना)
   - ब. समस्या समाधान गतिविधियाँ (समस्या का समाधान निकालना, कारण बताओ इत्यादि)
   - स. विचार अंतराल गतिविधियाँ (परिस्थिति के अनुसार अपने अनुभव बाँटना एवं परिस्थिति को पहचानना)

## टास्क के चरण

| चरण | चयन के उदाहरण |
|---|---|
| प्रदत्त कार्य (टास्क) | ▪ गतिविधियों का निर्धारण<br>▪ योजना का समय<br>▪ समान प्रदत्त कार्य का निष्पादन |
| प्रदत्त कार्य के अंतर्गत | समय का दबाव |
| पश्च कार्य (टास्क) | ▪ अभ्यर्थियों की संख्या<br>▪ प्रतिवेदन<br>▪ जागरूकता लाना<br>▪ दोहरान कार्य |

**इलिस रोड** (2004) के अनुसार – प्रदत्त कार्य (टास्क) एक प्रकार की कार्य योजना है जिसमें विद्यार्थियों को परिणाम प्राप्त करने हेतु भाषा को संधारित करने की आवश्यकता होती है। उक्त परिणामों का मूल्याकन इस आधार पर किया जा सकता है कि उक्त रीति में प्रयुक्त सामग्री को उचित रूप से व्यक्त किया गया है या नहीं। अतः यह कहा जा सकता है कि उक्त कार्य के निष्पादन में उन्हें प्राथमिक ध्यान, भाषा के अर्थ पर देना होता है। साथ ही स्वयं के भाषायी संसाधनों का उपयोग करना भी उनके लिए अनिवार्य हो जाता है। हालांकि प्रदत्त कार्य (टास्क) की रचना के पूर्व संपादन हेतु उन्हें विशेष तरीकों का चयन करना पड़ सकता है।

प्रदत्त कार्य (टास्क) का मुख्य उद्देश्य वास्तविक जीवन में भाषा के उपयोग के तरीके जो कि प्रत्यक्ष या परोक्ष होते हैं की समान जानकारी देना होती है। अन्य भाषा की तरह प्रदत्त कार्य (टास्क) उत्पादक या ग्रहणशील एवं मौखिक या लिखित कौशल और विभिन्न संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं को भी सम्मिलित करता है। प्रस्तुत शोध कार्य में प्रदत्त कार्य (टास्क) को निम्न वर्णित सम्प्रत्यय के रूप में भी देखा जाता है।

कक्षा–कक्ष में विद्यार्थी शिक्षक के निर्देशन में द्वय समूह अथवा वर्णित समूह में प्रदान किए गए कार्यों एवं उससे संबधित गतिविधि को सपादित कर उपलब्ध पठनीय सामग्री का विस्तृत अध्ययन कर सूचना का संकलन करते हैं। उक्त संपादन में वे विचार मथन की रीति को अपनाकर सकलित की गई सूचना को रचना कौशल के माध्यम से स्थानान्तरित, संप्रेषित एवं अभिव्यक्त करते हैं।

## प्रदत्त कार्य (टास्क) आधारित व्यूह रचना में शिक्षण प्रक्रिया[10]

**जेन विलिस** (2004) द्वारा अपनी पुस्तक में प्रदत्त कार्य (टास्क) आधारित शिक्षण व्यूह रचना की प्रक्रिया को मुख्यतः तीन सोपान में प्रस्तुत किया है–

1. **पूर्व प्रदत्त कार्य**– प्रदत्त कार्य (टास्क) आधारित व्यूह रचना मे शिक्षक द्वारा छात्रों को प्रकरण से अवगत करवाया जाता है। उक्त गतिविधि हेतु शिक्षक द्वारा छात्रों को निम्नलिखित गतिविधियों में से किसी एक या दो गतिविधियों को ध्यान मे रखते हुए विद्यार्थियों को प्रकरण पर ले जाने हेतु प्रयास किया जाता है। साथ ही उक्त प्रकरण मे वर्णित विषयवस्तु का परिचय भी करवाया जाता है।
   1. निश्चित प्रकरण पर विद्यार्थियों को विचार मंथन हेतु प्रेरित करना।
   2. प्रकरण से संबंधित चित्र आदि प्रस्तुत करना।
   3. प्रकरण से संबंधित प्रश्न पूछना।
   4. छात्रो को प्रकरण हेतु अनुमान लगाने के लिए प्रेरित करना।
   5. विद्यार्थियो को प्रकरण से संबधित सूचना बनवाना।
   6. विद्यार्थियों को प्रकरण से भाषा सबधित खेल खेलाना।
   7. विद्यार्थियो के मध्य उन्ही के द्वारा उपलब्ध ज्ञान का आदान– प्रदान करवाना।
   8. प्रकरण से सबधित यदि कोई घटना या कथा या कोई प्रेरणात्मक विषयवस्तु उपलब्ध हो तो उसे सुनाना।
2. **प्रदत्त कार्य (टास्क) चक्र**– निम्नलिखित सोपानों के तीन उप–सोपान वर्णित हैं–

## प्रदत्त कार्य (टास्क) आधारित व्यूह रचना में छात्रों की भूमिका[12]

छात्र अधिगम ही शिक्षण का मुख्य उद्देश्य है जिसका केन्द्र सदैव छात्र होता है तथा प्रदत्त कार्य (टास्क) आधारित व्यूह रचना भी केन्द्रीय भूमिका छात्र की ही होती है। प्रस्तुत व्यूह रचना में छात्र की भूमिकाओं को निम्नलिखित रूप से वर्णित किया गया है–

1. **समूह सहभागिता**– छात्रों द्वारा भाषायी अधिगम का कार्य शिक्षक द्वारा निर्धारित दो या दो से अधिक छात्रों के समूह में किया जाता है। विद्यार्थी अपने समूह में सक्रिय सहभागिता से कार्य कर शिक्षक के निर्देशानुसार प्रदत्त कार्य (टास्क) में सक्रिय सहभागिता द्वारा भाषाधिगम का कार्य निष्पादित करते है।

2. **निर्देशक**– शिक्षक द्वारा प्रदत्त कार्य (टास्क) के निष्पादन में प्रत्येक छात्र द्वारा निर्धारित समूह में सक्रिय भूमिका निभाई जाती है जिससे निर्धारित समूह के छात्र आपस में ज्ञान एव अनुभव का आपसी आदान–प्रदान करते है।

3. **चुनौती लेने वाला**– छात्र द्वारा प्रदत्त कार्य (टास्क) में चाहे सरल, चाहे कठिन जैसी भी विषयवस्तु हो सहज रूप से स्वीकार किया जाता है।

4. **नवाचार करने वाला**– विद्यार्थी अपने निर्धारित समूह में प्रदत्त कार्य (टास्क) का अभ्यास होने पर मौलिक चिंतन करते हैं तथा उपलब्ध विषयवस्तु को पढकर नवीन प्रदत्त कार्य (टास्क) करने का प्रयास करते है। साथ ही वे विद्यार्थी अपने समूह में सक्रिय सहभागिता निभाते हुए इस नवाचार के माध्यम से प्रदत्त कार्य (टास्क) को निष्पादित करने की प्रक्रिया से अन्य छात्रों को भी अवगत कराते हैं।

5 **प्रतिवेदन प्रस्तुत करना**– निर्धारित समूह में किए गए प्रदत्त कार्य (टास्क) के प्रतिवेदन को उस समूह के प्रतिनिधि द्वारा शिक्षक के निर्देशानुसार प्रस्तुत किया जाता है जिसके निष्कर्ष एवं परिणामों की तुलना छात्रों द्वारा शिक्षक के सहयोग से की जाती है।

## संदर्भ

1 श्रीमाली बी.एल.(2008)– क्रिया (टास्क)आधारित सस्कृत शिक्षण एक नवाचार, जयपुर पब्लिकेशन मिश्रा, रामचन्द्र (1992) काव्यादर्श, वाराणसी : चौखम्भा विद्याभवन, पृ स 3–4

2 पाण्डेय, रामशकल (2010) हिंदी शिक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर, पृ 7

3 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा (2005), पृ 48

4 भाटिया एव नारग (2002) हिंदी शिक्षण विधियाँ, टण्डन पब्लिकेशन

5 प्रभु एन.एस.(1991), सेकण्ड लेंग्वेज पेडालोजि ओक्सफोर्ड : ओक्सफोर्ड युनिवर्सिटि प्रेस।

6 एलीस, रोड (2004) टास्क–बेस्ड लेंग्वेज लर्निंग एण्ड टिचिंग : ओक्सफोर्ड : ओक्सफोर्ड युनिवर्सिटि प्रेस।

7 विलिस, जान (2004), ए फ्रेमवर्क फोर टास्क बेस्ड लर्निंग ओक्सफोर्ड लॉंगमेन, पेज न 23

8 नमन डेविड.(2004)– केंब्रिज युनिवर्सिटि प्रेस।

❑❑❑

(i) **प्रदत्त कार्य (टास्क)**– इस सोपान तक पहुँचने से पूर्व विद्यार्थी प्रकरण एवं पाठ से संबंधित विषयवस्तु से लगभग अवगत हो जाते हैं। तदुपरान्त शिक्षक द्वारा प्रकरण से संबंधित विषयवस्तु छात्रों को वितरण की जाती है। उसी वितरित विषयवस्तु पर विद्यार्थी शिक्षक के निर्देशानुसार प्रदत्त कार्य (टास्क) करता है। शिक्षक द्वारा प्राप्त निर्देशों के अनुसार इस शिक्षण प्रक्रिया को अपनाकर विद्यार्थी निर्धारित किए गए समूह या द्वय समूह में प्रदत्त भाषायी कार्य करता है एवं उसी माध्यम से भाषा सीखता है।

(ii) **योजना (Planning)**– प्रस्तुत उप–सोपान के माध्यम से विद्यार्थी शिक्षक के निर्देशन में पठन के आधार पर प्रदत्त कार्य (टास्क) कार्य करता है तदुपरान्त उक्त कार्य से प्राप्त होने वाले परिणामों को लिखता है। उक्त प्रदत्त कार्य करने की गतिविधि का वर्णन विद्यार्थी द्वारा निर्धारित समूह में शिक्षक के निर्देशानुसार पूर्ण किया जाता है।

(iii) **प्रतिवेदन (Report)**– प्रस्तुत उप–सोपान में विद्यार्थी समूह के प्रतिनिधि द्वारा पठन एवं रचना कौशल संबंधित प्रदत्त कार्य (टास्क) की प्रक्रिया को अंतिम रूप दिया जाता है। तदुपरान्त सभी विद्यार्थी अपने निर्धारित समूह में विचार विनिमय एवं चर्चा परिचर्चा द्वारा दिए गए प्रदत्त कार्य (टास्क) का स्पष्टीकरण देते हैं। विद्यार्थियों द्वारा दिए गए स्पष्टीकरण से प्राप्त सही निष्कर्ष को सभी विद्यार्थी समूह द्वारा स्वीकार किया जाता है एवं यदि निष्कर्ष गलत होता है तो समूह के विद्यार्थियों द्वारा निष्कर्ष को सही करने का प्रयास किया जाता है।

(iv) **भाषायी अभ्यास कार्य (रचना कार्य)**– प्रस्तुत सोपान के अंतर्गत पाठ में आने वाले नवीन शब्दों एवं वाक्यों का रचनात्मक विश्लेषण शिक्षक द्वारा किया जाता है। जिसमें शिक्षक द्वारा निम्नलिखित दो उप–सोपानों की सहायता ली जाती है–

(अ) **विश्लेषण**– प्रस्तुत उप–सोपान में विद्यार्थियों को पाठ में वर्णित नवीन शब्दों के समान शब्द संरचना हेतु प्रेरित किया जाता है। तदुपरान्त शिक्षक के मार्गदर्शन एवं सहयोग द्वारा विद्यार्थी अपने समूह में नवीन शब्दों की संरचना का प्रयास करते हैं, जिसके उत्तर की जाँच अन्य छात्र समूह द्वारा की जाती है। तदुपरान्त शिक्षक द्वारा छात्र समूहों द्वारा निर्मित नवीन शब्दों की अंतिम जाँच की जाती है। इस प्रकार नवीन शब्दों का निर्माण एवं उक्त नवीन शब्दों को सीखने का प्रयास छात्र समूहों द्वारा किया जाता है।

(ब) **अभ्यास**– प्रस्तुत उप–सोपान में शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को पाठ में वर्णित विभिन्न भावों से संबंधित वाक्यों के समान वाक्य संरचना जिसमें प्रार्थना पत्र, विज्ञापन, संवाद, यात्रा वृत्तांत, निबंध, शुभकामना संदेश, अनुच्छेद आदि सम्मिलित है। इस हेतु विद्यार्थी शिक्षक द्वारा निर्धारित समूह में नवीन वाक्य की संरचना का प्रयास करते हुए शिक्षक के सहयोग से अन्य छात्र समूहों द्वारा अपने दिए गए उत्तर की जाँच करता है। जिसमें छात्रों द्वारा निर्मित नवीन रचना कार्य की जाँच शिक्षक द्वारा की जाती है। इस प्रकार छात्र अपने निर्धारित समूह में रचना कार्य को निष्पादित करता है।

## प्रदत्त कार्य (टास्क) आधारित व्यूह रचना में शिक्षक की भूमिका[11]

**प्रदत्त कार्य (टास्क) का चयनकर्त्ता**– प्रदत्त कार्य (टास्क) आधारित शिक्षण व्यूह रचना के माध्यम से शिक्षक द्वारा प्रदत्त कार्य (टास्क) निष्पादित किए जाते हैं। उक्त गतिविधि के निष्पादन में विषयवस्तु शिक्षक द्वारा पढ़कर निर्धारित की जाती है, जिसमें शिक्षक प्रदत्त कार्य (टास्क) के चयन एवं उसके क्रम निर्धारण में अहम एवं केन्द्रीय भूमिका निभाता है।

1. **प्रदत्त कार्य (टास्क) का क्रम निर्धारण**– प्रदत्त कार्य (टास्क) में प्राथमिकता पर आधारित प्रदत्त कार्य (टास्क) निर्धारित क्रम में करवाए जाते हैं जो कि प्रकरण में वर्णित विषयवस्तु एवं प्रकरण की प्रकृति के अनुसार संबंधित व्याकरण के अनुसार एकाधिक हो सकते हैं।

2. **प्रदत्त कार्य (टास्क) करने हेतु छात्र–प्रेरक**– प्रदत्त कार्य (टास्क) आधारित व्यूह रचना में शिक्षक द्वारा छात्रों को प्रदत्त कार्य (टास्क) निष्पादित करने हेतु अभिप्रेरित किया जाता है। तदुपरान्त शिक्षक उक्त रीति को अपनाते हुए छात्रों को प्रदत्त कार्य (टास्क) करने हेतु अपेक्षित सहयोग करता है। साथ ही शिक्षक द्वारा पाठ में वर्णित नवीन शब्दों एवं वाक्यों को समझाते हुए संबंधित प्रदत्त कार्य (टास्क) को निष्पादित करने हेतु प्रेरित करता है।

3. **समूह निर्माता**– शिक्षक द्वारा प्रदत्त कार्य (टास्क) को निष्पादित करने हेतु भाषा अधिगम का कार्य निर्धारित छात्र समूह या दो के समूह में करवाया जाता है। शिक्षक द्वारा छात्र समूह में मंदगति, सामान्य गति एवं प्रतिभाशाली छात्रों को समान रूप से रखते हुए समूह का निर्माण किया जाता है।

4. **प्रदत्त कार्य (टास्क) प्रक्रिया प्रदर्शक**– छात्रों को प्रदत्त कार्य (टास्क) में समस्या आने पर पूर्व प्रदत्त कार्य (टास्क) के अंतर्गत समान प्रदत्त कार्य को शिक्षक द्वारा स्वयं निष्पादित करके बताया जाता है।

5. **मार्गदर्शक**– छात्रों को प्रदत्त कार्य (टास्क) में आने वाली समस्याओं एवं कठिनाइयों को शिक्षक के द्वारा मार्गदर्शन देकर दूर किया जाता है।

6. **प्रबन्धक**– प्रदत्त कार्य (टास्क) को निष्पादित करने में अपेक्षित आवश्यक सामग्री जिसमें विषयवस्तु आधारित पत्र–पत्रिकाएँ एवं संबंधित शब्द कोष इत्यादि वांछित अधिगम साधन शिक्षक द्वारा उपलब्ध करवाए जाते हैं।

# मानव विकास सूचकांक में भारत

ओम प्रकाश सुखवाल
रविन्द्रनाथ टैगोर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कपासन

*मानव विकास सूचकांक संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा जारी होने वाली रिपोर्ट है जो जीवन प्रत्याशा शिक्षा आए के मानकों के आधार पर प्रकाशित की जाती है। सबसे पहले 1990 में एसबीआई रिपोर्ट जारी की गई थी तब से प्रतिवर्ष इस रिपोर्ट को प्रकाशित किया जाता है। इस सूचकांक में कुल 189 देश है, जिसमें भारत 129 वें स्थान पर है । भारत ने वर्ष 2018 के मुकाबले 2019 में 1 अंक का सुधार किया है। भारत के पडोसी देश पाकिस्तान 152 और बांग्लादेश 135 वें स्थान पर है, जबकि पडोसी देश नेपाल 147 में भूटान 134 में म्यामार 145 वे और श्रीलंका 171 वे स्थान पर है रैंकिंग के आधार पर इसमें शामिल सभी देशों को चार श्रेणियों में बांटा गया है। पहली श्रेणी बेहद उच्च मानव विकास की है, जिसमें कुल 62 देश शामिल है दूसरी श्रेणी उच्च मानव विकास है, जिसमें तरह से 116 पायदान पर रहे देश शामिल हैं। तीसरी श्रेणी मध्य मानव विकास से संबंधित है, इसमें 117 से 153 नंबर तक के देशों को शामिल किया गया है। भारत भी इसी मध्य मानव विकास श्रेणी में शामिल है। अंतिम श्रेणी निम्न मानव विकास की है, इस श्रेणी में दुनिया के सभी देश शामिल है। प्रस्तुत आलेख में 1990 से 2019 के बीच भारत के मानव सूचकांक मूल्य में 50% सुधार बताया गया है यह 0.431 से बढ़कर 0.647 हो गया है। यह मानव विकास की श्रेणी में शामिल देशों के औसत मुल्य से (0.642) से अधिक है । भारत का मानव विकास सूचकांक मूल्य दक्षिण एशियाई देशों के औसत मूल्य (0.642) से अधिक है दूसरे शब्दों में कहें तो मानव विकास सूचकांक के मामले में भारत की स्थिति में संतोषजनक सुधार हुआ है।*

## प्रस्तावना

जीवन की गुणवत्ता के सूचक को ध्यान में रखते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ के एक निकाय सयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) ने 1990 में सर्वप्रथम मानव विकास सूचकांक (HDI) तैयार किया और प्रकाशित किया। जो निम्नलिखित तीन मौलिक मानवीय पहलुओं के अध्ययन का सम्मिलित सूचकांक था, इसमें प्रथम **दीर्घायु स्तर**– इसका का अर्थ है जन्म के समय जीवन प्रत्याशा। इसका आशय यह है कि सामान्यत एक नवजात शिशु के कितने वर्ष जीवित रहने की संभावना है। भारत में इस समय जीवन प्रत्याशा लगभग 69 वर्ष है। द्वितीय **शैक्षिक उपलब्धि**– इसका अर्थ है देश के लोगों द्वारा औसत के आधार पर प्राप्त ज्ञान और शिक्षा की उपलब्धता। शैक्षिक उपलब्धि के घटकों का वर्णन निम्न दो तत्वों द्वारा किया जाता है (अ) वयस्क साक्षरता दर तथा (ब) सकल नामांकन अनुपात। **वयस्क साक्षरता दर** मापने में इसका भाराकन दो तिहाई रहता है 15 वर्ष या इसके ऊपर आयु के लोगों की दर जो अपने दैनिक जीवन में छोटे तथा सरल कथनों को समझ, पढ और लिख सकते हैं, को साक्षर कहा जा सकता है। **सकल नामांकन अनुपात** मापने में इसका भाराकन एक तिहाई अनुपात रहता है, सकल नामांकन अनुपात का आशय शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर नामांकित विद्यार्थियों की संख्या। यह विभिन्न आयु वर्गो की जनसंख्या का प्रतिशत है जो **शैक्षिक** प्रयत्नों मेंव्यस्त है शिक्षा स्तर में प्राथमिक, माध्यमिक और तृतीयक स्तर सम्मिलित है। शिक्षा के मौलिक तत्व प्राथमिक स्तर पर उपलब्ध किए जाते हैं शिक्षा के माध्यमिक स्तर की पढ़ाई मिडिल और सेकेंडरी स्तर पर होती है विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा का अध्ययन तृतीय स्तर पर होता है। तृतीय **प्रति व्यक्ति वास्तविक जीडीपी पर जीवन स्तर**– यह प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद (क्रय शक्ति समता आधारित) के प्राकृतिक लघुगणक से मापित जीवन स्तर का अध्ययन करता है इस प्रकार मानव विकास सूचकांक की गणना के लिए उक्त तीनों तत्वों के अध्ययन और विश्लेषण की आवश्यकता होती है।

मानव विकास सूचकांक बुनियादी तौर पर पाकिस्तानी अर्थशास्त्री प्रोफेसर महबूब उल हक द्वारा 1990 में विकसित किया गया मानव विकास रिपोर्ट तैयार करने के लिए प्रोफेसर हक ने विश्व के जाने–माने विकास अर्थशास्त्रियों पॉलस्ट्रीटन, फ्रांसिस स्टीवॉर्ट, गुस्ताव रेनिस, कीथ ग्रिफिन, सुधीर आनंद तथा मेघनाथ देसाई से युक्त एक समिति का गठन किया था 4 नवंबर 2010 को प्रकाशित मानव विकास रिपोर्ट में मानव विकास सूचकाक की आगमन विधि में आंशिक रूप से संशोधित किया तब से इस सूचकांक की गणना उपरोक्त तीनों मौलिक मानवीय पहलुओं (HDI =LEI+EAI+SLI / 3 ) को प्रयुक्त करके की जाती है। (**अहुजा, 2006**)

वर्ष 2010 में ही संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम में निम्नलिखित तीन अन्य सूचकांकों को विकसित करके मानव विकास में शामिल कर लिया

1. बहुआयामी निर्धनता निर्देशांक (MPI)
2. असमानता समायोजित मानव विकास निर्देशाक (IHDI) तथा
3. लिंगमूलक असमानता निर्देशाक (GII)

वर्ष 2014 की मानव विकास सूचकाक में पांचवे निर्देशक के रूप मे लिंग मूलक विकास निर्देशाक को शामिल किया गया विगत 30 वर्षों में मानव विकास सूचकांक शोधकर्ताओं, नीति निर्माताओं, अर्थशास्त्रियों, समाजशास्त्रियों के लिए अति विश्वसनीय दस्तावेज माना जाता है।

## मानव विकास सूचक का निर्माण

मानव विकास सूचक के निर्माण के लिए दो स्तर अपनाने की आवश्यकता रहती है जो निम्नलिखित है–

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 22 | इजराईल | 0.906 | 82.8 | 16.4 | 12.2 | 36757 |
| 29 | इटली | 0.883 | 83.4 | 16.2 | 10.2 | 36141 |

मध्यम मानव विकास वाले देश–

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 79 | ब्राजील | 0.761 | 75.7 | 15.4 | 7.8 | 14068 |
| 85 | चीन | 0.758 | 76.9 | 13.9 | 7.9 | 16127 |
| 113 | द.अफ्रीका | 0.705 | 63.9 | 13.7 | 10.2 | 11756 |
| 129 | भारत | 0.647 | 69.4 | 12.3 | 6.5 | 6829 |
| 134 | भूटान | 0.617 | 71.5 | 12.1 | 3.1 | 8609 |
| 135 | बांग्लादेश | 0.614 | 72.3 | 11.2 | 6.1 | 4057 |
| 152 | पाकिस्तान | 0.560 | 67.1 | 8.5 | 5.2 | 5190 |
| 168 | सूडान | 0.507 | 65.1 | 7.7 | 3.7 | 3962 |

निम्न मानव विकास वाले देश–

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 170 | अफगानिस्तान | 0.495 | 66.6 | 6.5 | 4.0 | 3601 |
| 181 | लाइबेढीया | 0.438 | 54.3 | 10.2 | 3.6 | 1381 |
| 182 | माली | 0.434 | 61.2 | 8.9 | 1.6 | 1705 |
| 187 | द. सूडान | 0.401 | 54.0 | 7.5 | 2.4 | 1716 |
| 188 | मध्य अफ्रीकन गणराज्य | 0.381 | 52.8 | 7.6 | 4.3 | 777 |
| 189 | नाइजर | 0.377 | 62.0 | 6.5 | 2.0 | 912 |

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि मानव विकास मे नार्वे, स्विजरलैण्ड तथा आयरलैण्ड उच्च स्तर पर है जबकि कनाडा 13 वीं रैंक पर,अमेरीका 15 वीं रैंक पर तथा इटली 29 वीं रैंक पर है। भारत मानव विकास के 129 वें पायेदान पर स्थित है। जबकि हमारे पडोसी देश चीन 85 वी रैंक पर व पाकिस्तान 152 वी रैंक पर है। सबसे निम्न स्तर पर नाइजर देश है जो मानव विकास सूचकांक मे 189 रैंक पर है।

मानव विकास सूचकाक में भारत संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा 2019 के आंकड़ों पर आधारित विश्व के 189 देशों के लिए जारी मानव विकास सूचकांक में भारत 129 वे स्थान पर है भारत में लाखों लोगों के निर्धनता के कुचक से बाहर निकल आने के बावजूद भारत मानव विकास से संबधित लगभग सभी क्षेत्रों में व्यापक रूप से असमानतायें विद्यमान है 2019 में मानव विकास सूचकांक 0.640 के साथ भारत को मध्य मानव विकास संवर्ग में रखा गया है।

1990 एव 2019 के बीच भारत के मानव विकास सूचकांक का मान 0.427 से 49.88 प्रतिशत बढ़कर 0.640 के स्तर पर पहुच गया है। यह इस बात का संकेत है कि देश के लाखों लोग निर्धनता रेखा से ऊपर उठ चुके हैं। लेकिन जब भारत के मानव विकास सूचकांक के मान को असमानता से समायोजित किया जाता है तो मानव विकास सूचकांक के मान में 26.8% तक की कमी आ जाती है। 2018 में भारत के असमानता समायोजित मानव विकास सूचकाक का मान 0.468 ही था। यह गिरावट वैश्विक स्तर पर 20% की गिरावट से अधिक है यह इंगित करता है कि भारत मे मानव विकास संकेतकों से संबंध में वैश्विक औसत से अधिक है। भारत सहित विश्व के अन्य भागों में लोग अब अधिक समय अवधि तक जीवित रहते हैं पहले की तुलना में अधिक शिक्षित है तथा उनकी प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि हुई है। इसके वैश्विक मानव विकास सूचकाक के मान में 1990 एव 2019 के बीच 22% की वृद्धि हुई है। अत्यल्प विकसित देशों के मानव विकास सूचकाक के मान में इसी अवधि मे 51% की वृद्धि हुई भारत मे मानव विकास सूचकांक के मान में 49.08% की वृद्धि हुई है जो औसत वृद्धि से लगभग दुगुनी है।

1990 एवं 2019 के बीच भारत में जन्म के समय जीवन प्रत्याशा 11 वर्ष तक बढ गई है बच्चों की विद्यालय शिक्षा की अवधि मे 4.7 वर्ष की वृद्धि है सर्वाधिक वृद्धि प्रति व्यक्ति आय में हुई है जो 1990 मे 17.33 अमेरिकी डॉलर से 266.59% बढकर 2019 मे 6829 अमेरिकी डॉलर हो गई। विगत दो–तीन दशकों मे परिमाणात्मक रूप से भारत ने मानव विकास के मामले में अच्छी प्रगति दर्ज की है लेकिन भारत में महिलाओं की निजी प्रति व्यक्ति आय जो नीची आर्थिक सभ्यता का परिणाम है, के चलते बडे पैमाने पर लिंग मुलक असमानता विद्यमान है। लिंग मुलक असमानता सूचकाक 2019 मे 189 देशों की सूची में भारत 129 वे स्थान पर है। यह स्थिति पुनरोत्पादक, स्वास्थ्य, राजनीतिक एव शैक्षणिक सशक्तिकरण तथा आर्थिक क्रियाओं में लिंग आधारित असमानताओं का द्योतक है।

1. **प्रासंगिक संकेतकों का निर्माण**– संकेतकों का निर्माण करते समय सर्वप्रथम मानवीय विकास के प्रत्येक संकेतन का न्यूनतम और अधिकतम मूल्य निश्चित करना होता है संयुक्त राष्ट्र संघ कार्यक्रम द्वारा सत्र 1997 के लिये निश्चित, न्युनतम एवं अधिकतम मूल्य निम्न तालिका में दर्शायी गयी है–

| | संकेतक | न्यूनतम मूल्य | अधिकतम मूल्य |
|---|---|---|---|
| 1 | जन्म पर जीवन प्रत्याशा | 25 | 85 |
| 2 | वयस्क साक्षर दर | 0 | 100 |
| 3 | संयुक्त सकल नामांकन अनुपात | 0 | 100 |
| 4 | प्रति व्यक्ति वास्तविक जी.डी. पी. (PPP*$) | $ 100 | $ 40000 |

नोट– पीपीपी का आशय क्रय शक्ति की क्षमता से है।

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा न्यूनतम और अधिकतम मूल्यों का आकलन और प्रकाशन किया गया है यह मानवीय कृत मूल्य है तथा सामान्यतया सभी देशों में प्रयुक्त होता है।

मानव विकास सूचकांकों के निर्माण के लिए सभी संकेतकों के व्यक्तिगत संकेतकों के परिकलन की आवश्यकता होती है व्यक्तिगत संकेतकों के निर्माण के लिए निम्न सूत्र का सहारा लिया जाता है–

प्राप्ति स्तर = वास्तविक मूल्य – न्यूनतम मूल्य / अधिकतम मूल्य – न्यूनतम मूल्य

उदाहरणार्थ किसी देश की जीवन प्रत्याशा 62.6 वर्ष है तथा जीवन प्रत्याशा का अधिकतम और न्यूनतम मूल्य क्रमश 80 और 20 मानते हुए जीवन प्रत्याशा सूचकाक निम्न होगा–

जीवन प्रत्याशा सूचकांक = वास्तविक मूल्य – न्यूनतम मूल्य /अधिकतम मूल्य – न्यूनतम मूल्य

= 62.6–20.0 / 80.0–20.0

= 42.6 / 60.0 = 0.73

2. **तीनों संकेतकों का औसत ज्ञात करना**–मानव विकास सूचकांक ज्ञात करने के लिए जीवन प्रत्याशा शैक्षिक उपलब्धि तथा वास्तविक जीडीपी प्रतिव्यक्ति सूचकांक के औसत से ज्ञात किया जाता है जो निम्न सूत्र द्वारा ज्ञात किया जाता है

मानव विकास सूचकांक = जीवन प्रत्याशा सूचकांक + शैक्षिक उपलब्धिसूचक + प्रतिव्यक्ति वास्तविक जीडीपी / 3

उदाहरणार्थ किसी देश की जीवन प्रत्याशा सूचकाक 0.52 है, शैक्षिक उपलब्धि सूचकांक 0.68 है और प्रति व्यक्ति वास्तवि जी.डी. पी. प्रति व्यक्ति सूचकांक 0.42 हो तो मानव विकास सूचकाक निम्न होगा।

मानव विकास सूचकांक = जीवन प्रत्याशा सूचकाक + शैक्षिक उपलब्धिसूचक + प्रतिव्यक्ति वास्तविक जीडीपी / 3

= 0.52+0.68+0.42/3

= 1.62/3 = 0.54

मानव विकास रिपोर्ट 1999 में 189 विकसित एवं विकासशील देशों से संबंधित वर्ष 1998 की वास्तविक प्रतिव्यक्ति जी.डी.पी., मानव विकास सूचकांक मूल्य तथा मानव विकास सूचकांक कम प्रस्तुत किये गये है। जिन 189 देशों के HDI की गणना की गई थी। उनमें से 62 उच्च विकास वर्ग (0.8 से 0.95) में थे, 107 देशो की मध्यम विकास वर्ग स्थिति (0.5 से 0.79) तथा 20 निम्न मानव विकास वर्ग (0.48 से 0.37) में थे। इसमें उच्च चुने हुए देशों का मानव विकास सूचकांक निम्नानुसार है।

तालिका 17.2 चुने हुए देशों का **HDI**,1999

| रैंक | देश | मनव विकास सूचकांक का मान | जन्म के समय जीवन प्रत्याशा (वर्ष) सम्पोषणीय विकास लक्ष्य– 3 | विद्यालयी शिक्षा के अपेक्षित वर्ष सम्पोषणीय विकास लक्ष्य–4.3 | विद्यालयी शिक्षा के माध्य वर्ष सम्पोषणीय विकास लक्ष्य– 4.6 | कय शक्ति समता आधारित प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय (अमरीकी डॉलर) सम्पोषणीय विकास लक्ष्य– 8.5 |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उच्च मानव विकास वाले देश | | | | | | |
| 1 | नॉर्वे | 0.954 | 82.3 | 18.1 | 12.6 | 68059 |
| 2 | स्विजरलैण्ड | 0.946 | 83.6 | 16.2 | 13.4 | 59375 |
| 3 | आयरलैण्ड | 0.942 | 82.1 | 18.8 | 12.5 | 55660 |
| 4 | जर्मनी | 0.939 | 81.2 | 17.1 | 14.1 | 46946 |
| 19 | जपान | 0.915 | 84.5 | 15.2 | 12.8 | 40799 |
| 13 | कनाडा | 0.922 | 82.3 | 16.1 | 13.3 | 43602 |
| 15 | U.K | 0.920 | 81.2 | 17.4 | 13.0 | 39507 |
| 15 | U.S | 0.920 | 8.9 | 16.3 | 13.4 | 56140 |

भारत की संसद में महिलाओं की सहभागिता मात्र 11.6 % है तथा 64% पुरुषों की तुलना में भारत की मात्र 39% महिलाएं माध्यमिक शिक्षा के स्तर तक ही पहुंच पाती है। श्रम बाजार में महिलाओं की सहभागिता मात्र 27.2 % है जबकि पुरुषों की सहभागिता 78.8% है। वैश्विक श्रम बाजार में महिलाओं की औसत सहभागिता 49% पुरुषों की 75% है। मानव विकास सूचकांक के सघटको में भारत की प्रणाली को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है। **(श्रीवास्तव, 2011)**

**मानव विकास सूचकांक के संघटकों में भारत की प्रणाली**

| वर्ष | जन्म के समय जीवन प्रत्याशा | विद्यालयी शिक्षा के अपेक्षित वर्ष | विद्यालयी शिक्षा के माध्य वर्ष | प्रति सकल राष्ट्रीय आय (अमरीकी डॉलर सें) | मनव विकास सुचंकाक का मान |
|---|---|---|---|---|---|
| 1990 | 57.9 | 7.6 | 3.0 | 1733 | 0.427 |
| 1995 | 60.4 | 8.2 | 3.5 | 2015 | 0.460 |
| 2000 | 62.6 | 8.3 | 4.4 | 2470 | 0.493 |
| 2005 | 64.6 | 9.7 | 4.8 | 3157 | 0.535 |
| 2010 | 66.6 | 10.8 | 5.4 | 4357 | 0.581 |
| 2015 | 68.3 | 12.0 | 6.3 | 5691 | 0.627 |
| 2019 | 68.9 | 12.3 | 6.4 | 6829 | 0.640 |

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि मानव विकास सूचकाक में भारत की स्थिति पहले से सुदृढ हुई। जहा 1990 में जीवन प्रत्याक्षा 57.9 थी वह बढकर 2019 में 68.9 हो गयी है। विद्यालय शिक्षा में भी अपेक्षित वर्ष में लगभग दुगुनी वृद्वि हुई है। प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय जहॉ 1990 में 1733 अमरिकी डॉलर थी वह बढकर दो दशक मे तीन गुने से भी अधिक वृद्वि होकर 2019 मे 6829 डॉलर हो गयी है। जो एक प्रगति का सूचकाक है। फिर भी भारत की स्थिति अन्य देशो से काफी कमजोर है।

मानव विकास की सूचकांक की सीमाएँ– मानव विकास सूचकाक की अपनी कुछ सीमाएँ है जो निम्नानुसार है।

1. मानव विकास सूचकांक तीन संकेतकों को आधार मानकर अध्ययन करता है आलोचकों का मानना है कि शिशु मृत्यु दर पोषण आदि अन्य सूचक भी हो सकते हैं।
2. मानव विकास सूचकांक निरपेक्ष की बजाय सापेक्ष मानव विकास का मापन करता है ताकि कोई देश समान भारित दर से अपने विकास मूल्य को सुधार ले। निम्न मानव विकास सूचकांक वाले देशों में सुधार का पता नहीं चलता है।
3. यह अनुभव किया जाता है कि प्रति व्यक्ति जीडीपी श्रेणी लेने की वैकल्पिक धारणा और इसके अन्य सामाजिक संकेतों से सहायता करना बेहतर परिणाम उपलब्ध करेगा।
4. प्रोफेसर अमर्त्य सेन के अनुसार यह परिपथ को सूचक है जो एक सरल संख्या में मानव विकास और वचन के एक जटिल यथार्थ को पकड़ने का प्रयत्न करता है।
5. सूचकांक मे भारत का प्रयोग पूर्णतया स्वैच्छिक है।
6. किसी देश का एच डी आई वहां पाई जाने वाली उच्च असमानता का ध्यान हटा सकता है।

सारांश में, हम इस निष्कर्ष पर पहुचते हैं कि मानव विकास सूचकांक लोगों के जीवन की गुणवत्ता का मापदड है इसके अतिरिक्त यह सूचक लोगों के कल्याण को मापने का राष्ट्रीय आय से एक श्रेणी श्रेष्ठ मापदंड है इसके अतिरिक्त मानव विकास सूचकांक वास्तविक प्रति व्यक्ति जीडीपी तक ही सीमित नहीं है। **(लेखी.2016)**

## संदर्भ

1 अहुजा एच एल (2006), समष्टि अर्थशास्त्र–एस चद एण्ड कम्पनी लि. रामनगर नई दिल्ली, पे न 206

2 श्री वास्तव मोहन प्रसाद, ( 2011) विकास का अर्थशास्त्र एव आयोजन– एनी बुक्स प्राइवेट लि.ए दरिया गज, नई दिल्ली, पे न 867,882,

3 लेखी आर के ( 2016), आर्थिक विकास व योजनाएँ–कल्याणी पब्लिकेशस लुधियाना, नई दिल्ली, पे न 22

4 द्रदत्त एवं सुन्दरम् के पी एम (2002), भारतीय अर्थव्यवस्था–रुएस चन्द एव कम्पनी लि. रामनगर नई दिल्ली, पे न. 41,53

5 वार्षिक प्रतिवेदन(2019)– मानव विकास सूचकाक

❑❑❑

# भारत में भाषा नीतिः समस्या एवं समाधान

पिन्टु शर्मा
रविन्द्रनाथ टैगोर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कपासन

*भाषा विचारों के आदान–प्रदान का सशक्त माध्यम होने के साथ–साथ सांस्कृतिक मूल्यों की वाहक भी मानी जाती है। भाषा किसी समुदाय विशेष की पहचान भी होती है। सुमित्रानंदन पंत ने भाषा को संसार का नाद में चित्र बताते हुए भाषा की कहानी को मानव जाति का इतिहास बताया है।*

*प्रस्तुत लेख में भाषा का विभाजन प्राचीन भाषा संस्कृत भाषा मातृभाषा राष्ट्रभाषा अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में किया गया है। वैज्ञानिक विकास हेतु अतर्राष्ट्रीय भाषा की दरकार होती है इस हेतू उसे सरकारी प्रश्रय तथा संरक्षण भी मिलना जरुरी है।*

*देश को आजाद हुए 73 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं , परंतु आज भी सरकारी दफ्तरों में कामकाज मातृभाषा हिंदी की जगह अंग्रेजी में हो रहा है। यह एक चिंता का विषय है। भाषाई आधार पर राज्यों के पुनर्गठन से सांप्रदायिक सौहार्द बिगड़ने की स्थितिया भी उत्पन्न हो सकती है। लार्ड मैकाले की शिक्षा नीति वुड्स डिस्पैच कोठारी कमीशन तथा गांधीजी की बुनियादी शिक्षा में भी भाषा नीति संबंधी कई तथ्य मौजूद है। देश में भाषा नीति के संबध में राधाकृष्णन आयोग मुदालियर आयोग कोठारी आयोग तथा शिक्षा नीति 1986 में भी अपने रचनात्मक सुझाव दिए हैं। साइन लैंग्वेज का मानवीकरण भी आवश्यक है। भाषा समस्या के निवारण में त्रिभाषा फार्मूला मील का पत्थर साबित हुआ है। बहुभाषी भारत की संकल्पना आज समय की पुकार है।*

## प्रस्तावना

भाषा किसी समुदाय विशेष की अस्मिता या पहचान होती हैं और कोई भी समुदाय अपनी भाषायी पहचान का सरलता से परित्याग नहीं करता। जब तक कोई राजनीतिक हित या धार्मिक हित का प्रश्न सम्मुख नहीं आता, भारतवासी एक भाषा, एक भौगोलिक परिधि, एक समुदाय, एक धर्म एवं एक संस्कृति आदि के विवादास्पद चक्रव्यूह से दूर ही रहते है, और इस प्रकार प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से भाषायी विविधता का सम्मान करते है, उसे स्वीकार करते हैं। अभिव्यक्ति का सर्वोतम साधन भाषा ही होती हैं। भाषा विभिन्न सांस्कृतिक तत्वों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक स्थानान्तरित करने मै एक महत्वपूर्ण माध्यम रही है। भारत विभिन्न भाषायी लोगों का देश हैं। यही कारण भाषायी विभिन्नता, क्षेत्रीयवाद तथा पृथकतावाद के लिये उत्तरदायी है।

भाषा विचारों को दूसरे तक पहुँचाने की क्षमता रखती है। इसमें विचार, अनुभूति तथा संदेशों को प्रतीकों द्वारा व्यक्त किया जाता है। इसके अतर्गत बोलना, लिखना, सुनना, पढ़ना चेहरे के भाव, मुख मुद्रा कला आदि आता है। बोलना एक भाषा का अंग है और संदेश वहन करने का एक पक्ष है। इसमें ध्वनि प्रतीकों के माध्यम से अपने अभिप्राय को व्यक्त किये जाने की क्षमता होती है। भाषा की कहानी को मानव जाति का इतिहास कहा गया है।

संपूर्ण जीव मंडल में केवल मनुष्य को ही भाषा से समझ बनाने का अमूल्य वरदान ईश्वर से मिला है। भाषा मनुष्य को जीवधारियों में सर्वोतम स्थान प्रदान करती हैं। भाषा एक मानवीय कला कृति है। भाषा की उत्पति वैज्ञानिकों के लिए एक रहस्य है। डार्विन जैसे विचारकों का मत है कि भाषा ईश्वरीय वरदान नहीं है अपितु ध्वनियों, शब्दों तथा बोली से विकसित एवं परिष्कृत होकर आज इस अवस्था तक पहुंची है। भाषा को यदि प्रकृति की देन मानते है तो यह प्रकृति की सर्वश्रेष्ठ रचना है।

भाषा भावों एवं विचारों की जननी तथा अभिव्यक्ति का साधन एवं माध्यम है। भाषा के कारण ही मानव इतना उन्नत प्राणी बन सका है बुद्धि तथा विचार चिन्तन शक्ति के कारण ही मनुष्य भाषा का अधिकारी बन सका है। मुँह के अंगों की सहायता से विविध प्रकार की ध्वनियों के उच्चारण उत्पन्न करता है जिससे अक्षर तथा शब्दो का प्रकटीकरण करता है। (चतुर्वेदी डॉ शिखा, 2007)

**भाषा के सन्दर्भ में विभिन्न विद्वानों ने अपने मत रखे है जो निम्न हैः–** सुमित्रानन्दन पंत के अनुसार – "भाषा संसार का नादमय चित्र है, ध्वनिमय स्वरूप है, यह विश्व के हृदयतंत्री की झकार है, जिनके स्वर में अभिव्यक्ति होती है।"

क्रोच के अनुसार "भाषा अभिव्यक्ति की दृष्टि से उच्चारित एव सीमित ध्वनियों का संगठन है।"

काव्यादर्श के अनुसार – "यदि शब्द रूपी ज्योति से यह ससार प्रदीप्त न होना, तब यह समस्त संसार अन्धकारमय हो जाता है।"

मनुष्य अपने भावों, विचारों एवं अनुभूतियो को भली भाँति केवल ध्वनि संकेतों के माध्यम से ही अभिव्यक्त करता है। सकेतों से अशाब्दिक भाषा और ध्वनि संकेतों से भाषा बनती है निरर्थक ध्वनियों को भाषा नहीं कहा जाता है। भाषा के प्रमुख तत्व, ध्वनियों, संकेत तथा चिह्न होते है, परन्तु विशेष रूप से शब्द और सार्थक शब्द–समुह ही उसमें सम्मिलित किए जाते है।

## भाषा के विविध रूप

भाषाओं की संख्या तो असंख्य है, संसार मे कितनी भाषाये है इसका अनुमान लगाना संभव नही है। भारत जैसे विशाल देश मे भाषाओं की विविधता अधिक है। इस दृष्टि से भारत विविधता का राष्ट्र है। यह भारत की विशेषता है कि विविधता में भी एकता है। यूरोप जैसे महाद्वीप के प्रत्येक देश की अपनी भाषा है। अर्थात यूरोप का विभाजन भाषाओं के आधार पर हुआ है। भारत मे क्षेत्रीय

एवं प्रादेशिक रुप है जैसे बांग्ला – बंगाल प्रदेश, पंजाबी – पजाब प्रदेश, राजस्थानी – राजस्थान प्रदेश आदि।

(पाठक. ,2011)

भाषाओं की शिक्षा प्रदान करने के लिए विद्वानों ने इसका विभाजन पाँच वर्गो में किया है–

1. **प्राचीन भाषा**– इसके अंतर्गत उन भाषाओं को सम्मिलित किया जाता है जो प्राचीन भारत में प्रयुक्त की जाती थी परन्तु आधुनिक समय में इनका उपयोग नही होता हैं। प्रमुख प्राचीन भाषायें – संस्कृत, पाली, पाकृत और अपभ्रंश है।

2. **संस्कृत भाषा**– संस्कृत भारत की सांस्कृतिक भाषा है। यह भाषा ही नही अपितु भाषाओं की जननी है शिक्षा की दृष्टि से संस्कृत भाषा का महत्व विशेष माना जाता है। सस्कृत प्राचीन भारतीय साहित्य की भाषा है। वेद, उपनिषद् तथा महाकाव्य मूल रूप से संस्कृत भाषा में ही लिखे गए। सस्कृत सभी भाषाओं की जननी है। इसका प्रभाव भारत के उतर तथा दक्षिण प्रदेशों की भाषाओं पर है। भारतीय जीवन मे धार्मिक, सामाजिक, विधि विधानों और संस्कारों की भाषा संस्कृत ही है। आज भी सभी प्रकार के अनुष्ठान तथा सस्कार संस्कृत में ही किए जाते है। यद्यपि यह बोलचाल की भाषा नही है। भारत को एकता के सूत्र में बाधने की अपूर्व शक्ति संस्कृत भाषा एव साहित्य में है। यूरोप में ग्रीक तथा लेटिन का जो स्थान है वह संस्कृत भाषा का भारत में है।

3. **मातृ–भाषा**– माता–पिता से सीखीं हुई भाषा ही मातृभाषा है। बालक माता – पिता से स्थानीय या क्षेत्रीय बोली ही सीखता है जिसका लिखने मे प्रयोग नहीं होता है। लिखने की भाषा परिष्कृत होती है। इसी परिष्कृत भाषा के माध्यम से सभी कार्य होते है, तथा विद्यालयो में शिक्षण कराया जाता है साथ ही साहित्य का सृजन भी होता है, इसे मातृभाषा कहा जाता है। किसी विशिष्ठ प्रदेश या क्षेत्र में प्रयोग में लाई जाने वाली भाषा को प्रादेशिक भाषा कहा जाता है। बालकों को शिक्षा मातृ–भाषा के माध्यम से ही दी जानी चाहिए क्योकि इससे तथ्यों एव प्रत्ययों को बोधगम्य करना सरल होता है।

4. **राष्ट्र भाषा**– मातृ भाषा के बाद राष्ट्र भाषा का प्रमुख स्थान है। प्रत्येक राष्ट्र की एक भाषा होती है जिसका संविधान में उल्लेख किया जाता है। जिस भाषा को देश की अधिकाश जनता बोलती है और समझ लेती है उसे राष्ट्र भाषा कहा जाता है।

   हिन्दी भाषा को राष्ट्र भाषा का गौरव पूर्ण स्थान प्रदान किया गया परन्तु प्रादेशिक सकीर्णता के कारण यह सम्भव नहीं हो सका। दुर्भाग्य यह है विदेशी भाषा (अंग्रेजी) को अपनाने मे संकोच नहीं है परन्तु हिन्दी को अपनाने में आपत्ति हो रही है।

5. **अन्तरराष्ट्रीय भाषा या विश्व भाषा**– आज वैज्ञानिक विकास तथा तकनीकी विकास ने विश्व के राष्ट्रों का एक दूसरे के अधिक समीप ला दिया है और कोई भी राष्ट्र अकेला रह कर जीवित नही रह सकता है। एक राष्ट्र की गतिविधियों अन्य राष्ट्रों को प्रभावित करती है। इसलिए विश्व के राष्ट्रों से सम्पर्क तथा विचारों का आदान–प्रदान करना आवश्यक हो गया है। इसके लिए ऐसी भाषा की आवश्यक होती है जिससे विश्व के राष्ट्र आपस में विचारों व नीतियों का आदान–प्रदान कर सकें। जिस भाषा के माध्यम से एक राष्ट्र दूसरे देश से अपने विचारों का आदान–प्रदान करने मे सक्षम हो, उसे अन्तरराष्ट्रीय भाषा कहते है। विश्व के राष्ट्र आपस में सम्पर्क तथा विचारों का आदान–प्रदान करते है। उसे विश्व की भाषा कहते है। अंग्रेजी भाषा ने विश्व का गौरव पाया है। अंग्रेजी को विश्व की खिड़की कहा जाता है जिसके माध्यम से विश्व राष्ट्रों के साथ विचारों का आदान–प्रदान किया जाता है।

अन्तर्राष्ट्रीय–भाषा के माध्यम से वैज्ञानिक विकास एवं आविष्कारों के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त किया जाता है। विकसित राष्ट्रों के ज्ञान–विज्ञान का लाभ विकासशील राष्ट्र उठाते है। अग्रेजी भाषा को युगों से यह महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। (शर्मा . ,2007)–

## भारत में बोली जाने वाली भाषाओं की विविधता

भारत की अपनी सस्कृति एव मान्यतायें रहीं है। यह बहुभाषी देश होते हुए भी यहां एकता और अखडता को कोई खतरा नहीं रहा है जबकि यूरोप के राष्ट्रों का आधार भाषा रही है। भारत का प्रत्येक भाषायी समुदाय सुरक्षित है और उनमें आपस मे शातिपूर्ण सहअस्तित्व रहा है। हिन्दी के राज भाषा होने पर भी वे अपनी मातृभाषा को इसलिए नही खो सकती कि हम सबकी परम्परायें व सस्कृति के स्त्रोत एक ही है। भारत में भाषाओं की भूमिका या पृष्ठभूमि यूरोप एवं अमेरिका से भिन्न है, इसलिए भारतीय भाषाओं में आपस में न द्वेष है न ही कटुता।

भाषा का सापेक्षिक महत्व सरकारी प्रश्रय व सरक्षण से ही बढ़ता है। चूँकी अग्रेजी बोलने वालों का आजीविका एव आर्थिक साधनों पर अधिकार है, इसलिए अग्रेजी का ग्रहण स्वतः है। हमारे देश मे भी जीविका या अच्छी नौकरियों की प्रमुख भाषा अग्रेजी होगी तो कुछ भी कहें, हिन्दी और भारतीय भाषाओं का स्थान गौण ही रहेगा।

स्वतंत्र भारत में शिक्षा के माध्यम के निर्धारण ने भाषा के प्रश्न को जटिल बनाने मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। भाषा–विवाद यह है कि शिक्षा का माध्यम (विषेषतः उच्च कक्षाओं में) अग्रेजी हो या मातृभाषा हिन्दी या क्षेत्रीय भाषाएँ हो। स्वतत्र भारत के सविधान ने हिन्दी को राष्ट्र भाषा का स्थान प्रदान किया और यह भी निश्चित किया कि सन् 1965 तक अग्रेजी के स्थान पर हिन्दी को राजकीय काम–काज की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया जायेगा। परन्तु इस बहु भाषी देश मे ऐसा अभी तक सभव नहीं हो सका।

भाषायी आधार पर राज्यों के पुनर्गठन ने भारत मे एक अजीब किस्म की साम्प्रदायिकता को जन्म दिया जिसने राष्ट्रीय एकता के मार्ग को अवरुद्ध कर दिया। आज की राजनीति, इस दुखद स्थिति को समाप्त करने के प्रति प्रयत्नशील नहीं है।

सविधान में हिन्दी को राष्ट्र भाषा का दर्जा मिला। परन्तु राजनीतिक कारणो से हिन्दी को साम्राज्यवाद का खतरा बताकर भारत की भाषा – समस्या को नया और भयावह मोड दे दिया

गया। राजनेताओं ने अपने स्वार्थों की पूर्ति हेतु इस प्रश्न को जटिल बना दिया है।

स्वतत्र भारत मे भाषा की सर्वप्रमुख समस्या राज भाषा तथा राष्ट्र भाषा के रूपो के टकराव की समस्या है। हिन्दी भाषा–भाषी राज्यों यानि उत्तर भारत मे तो अपनी नीतियों मे हिन्दी को अपनी राज्य भाषा स्वीकार कर अपना काम–काज हिन्दी मे करना प्रारम्भ कर दिया है और इन राज्यों मे राज–भाषा एव राष्ट्र भाषा के मध्य कोई टकराव नहीं है। परन्तु कुछ ऐसे अहिन्दी भाषी राज्य है जो हिन्दी को राज–भाषा न मानकर अपनी मातृभाषा (क्षेत्रीय भाषा) को ही राज भाषा स्वीकार करते है, किंतु केन्द्र से सम्पर्क स्थापित करने के लिए वे हिन्दी को वरीयता न देकर अंग्रेजी भाषा का ही प्रयोग करना चाहते है। दक्षिण वासियो का हिन्दी–विरोधी दृष्टिकोण अभी कम नहीं हुआ है।

एक ओर हिन्दी भाषी क्षेत्र सविधान का अनुपालन कराने की बात कहकर हिन्दी को ही राष्ट्र भाषा का पद दिलाने को आत्म–प्रतिष्ठा का प्रश्न बना बैठे हैं तो दूसरी ओर दक्षिण भारतीय अंग्रेजी के प्रबल समर्थक बने हुए है। ऐसी दशा मे तब तक हिन्दी व अंग्रेजी दोनो ही राष्ट्र भाषा पद पर चलती रहें जब तक अहिन्दी भाषी भली प्रकार हिन्दी न सीख लें। किंतु इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि इस छूट की आड में अहिन्दी भाषी हिन्दी सीखे ही नहीं।

## शिक्षा के माध्यम के रूप में भाषा समस्या

भारतीय शिक्षा के इतिहास को अगर हम देखे तो भारत मे पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली की शुरूआत मैकाले के विवरण पत्र से होती है। जिसमे मैकाले ने यह मत व्यक्त किया कि प्राच्य शिक्षा की सस्थाओ पर धन व्यय करना मूर्खता है और इनको बन्द कर दिया जाय। इनके स्थान पर अंग्रेजी भाषा के माध्यम से शिक्षा प्रदान करेन के लिए संस्थाओं की स्थापना की जाय। इसके पाश्चात्य "वुड के आदेश पत्र" (Wood"s Dispatch) द्वारा 19 जुलाई, 1854 ई. को एक आदेश पत्र मे भारतीय शिक्षा की नीति का प्रकाशन किया। इसमें अंग्रेजी का समुचित ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों के लिए देशी भाषाओं का ज्ञान आवश्यक माना। इस प्रकार, अंग्रेजी और देषी भाषाओं को शिक्षा का माध्यम निश्चित किया गया।

ईस्ट इडिया कम्पनी द्वारा 1837ई. में लार्ड आकलैण्ड द्वारा भारत में फारसी के स्थान पर अंग्रेजी को राज काज की भाषा बनाया गया तथा लार्ड हार्डिंग ने राजकीय सेवा में अंग्रेजी जानने वाले अभ्यार्थियों को वरीयता देने की घोषणा की। इस तरह सन् 1833 से 1853 की अवधि को शिक्षा के अंग्रेजीकरण की अवधि कहा जाता है।

सन् 1882 में भारतीय शिक्षा आयोग की नियुक्ति की गई। आयोग ने शिक्षा के माध्यम के विषय में कोई स्पष्ट सुझाव नहीं दिया। उसने केवल यह कहा कि मिडिल स्कूलों में मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाना अधिक वाछनीय है, पर छात्रों को अंग्रेजी का भी कुछ ज्ञान होना आवश्यक है। यह विचार व्यक्त करके आयोग ने हाई स्कूलों के अतिरिक्त मिडिल स्कूलों में भी शिक्षा के रूप में अंग्रेजी का पक्ष लिया।

19वीं शताब्दी के अंतिम दशक तक भारत सरकार अपनी नीति के अनुसार, अंग्रेजी के माध्यम से पाश्चात्य ज्ञान के प्रसार में सलग्न थी। सन् 1937 में, मारवाडी हाईस्कूल (वर्तमान नव भारत स्कूल) वर्धा में उसकी रजत जयंती का समारोह 22 और 23 अक्टूबर को होने वाला था। उस अवसर पर भारत के प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्रियों, राष्ट्रीय नेताओं और समाज–सुधारकों को आमंत्रित किया गया और "अखिल भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा –सम्मेलन" का गाँधीजी के सभापतित्व मे आयोजन किया गया। महात्मा गाँधी ने 'बेसिक शिक्षा' की अपनी नवीन योजना प्रस्तुत की।

गाँधीजी ने मैट्रिक के स्तर तक अंग्रेजी रहित, उद्योगो पर आधारित और मातृभाषा द्वारा सात वर्ष की स्वावलम्बी बेसिक शिक्षा की योजना प्रस्तुत की। बुनियादी शिक्षा का माध्यम मातृभाषा है। इतिहास हमें बताता है कि किसी देश की सस्कृति का विनाश करने के लिए, उसके साहित्य का विनाश जरूरी हो जाता है। इसी सिद्धात का अनुगमन करके, अंग्रेजो ने हमारे देश में अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाया। बुनियादी शिक्षा में अंग्रेजी को कोई स्थान नहीं दिया गया है और मातृ भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाया गया है।

स्वतंत्र भारत में आयोग तथा उनके द्वारा भाषा नीति के सबध मे दिये गये सुझाव :–

1. **तारा चन्द समिति 1948ई.**– सन् 1948 में भारतीय सविधान नहीं बना था और संघीय भाषा के विषय मे कोई निर्णय नही हुआ था। इस बात को ध्यान में रखकर "ताराचन्द समिति" ने यह सुझाव दिया कि उच्च प्राथमिक स्तर के पश्चात् मातृभाषा के अतिरिक्त संघीय भाषा को अनिवार्य बना दिया जाय। दूसरे शब्दों में 'समिति' ने माध्यमिक स्तर पर दो भाषाओं के अध्यापन का सुझाव दिया –

   अ. मातृभाषा  ब. अंग्रेजी या संघीय भाषा

2. **राधाकृष्णन आयोग (1948–49ई.)**– इस आयोग का सुझाव था कि उच्च माध्यमिक एव विश्वविद्यालय स्तर पर छात्रों को तीन भाषाओं का ज्ञान कराया जाय, यथा –

   अ. क्षेत्रीय भाषा अथवा मातृभाषा
   ब. संघीय भाषा अथवा मातृभाषा
   स. अंग्रेजी

3. **मुदालियर आयोग (1952ई.)**– इस आयोग ने 'द्विभाषा–सूत्र' प्रतिपादित किया और यह सुझाव दिया कि छात्र को माध्यमिक स्तर पर दो भाषाएँ पढ़ाई जाए –

   अ. मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा और एक शास्त्रीय भाषा का मिश्रित पाठ्यक्रम।

   ब. निम्नलिखित में से चुनी जाने वाली एक अन्य भाषा–

   – हिन्दी (उनके लिए जिसकी मातृभाषा हिन्दी नहीं है)
   – प्रारंभिक अंग्रेजी (उनके लिए जिन्होंने मिडिल स्तर पर इसका अध्ययन नहीं किया है)

- उच्च अंग्रेजी (उनके लिए जिन्होंने पहले अंग्रेजी का अध्ययन किया है)
- हिन्दी के अतिरिक्त एक अन्य भारतीय भाषा।
- अंग्रेजी के अतिरिक्त एक अन्य आधुनिक विदेशी भाषा।
- एक शास्त्रीय भाषा।

4. **कोठारी आयोग (1964)** :– इस आयोग ने 'त्रिभाषा सुत्र' प्रतिपादित किया –

   अ. मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा

   ब. संघ की राजभाषा या सह–राजभाषा

स. एक आधुनिक भारतीय भाषा या विदेशी भाषा जो नं. (1) और (2) के अंतर्गत छात्र द्वारा न चुनी गई हो और जो शिक्षा का माध्यम न हो)

## त्रिभाषा सूत्र

भाषा समस्या के समाधान के लिए त्रिभाषा सूत्र को अधिक उपयोगी मानकर सन् 1956 में केन्द्रीय स्तर पर त्रिभाषा सूत्र का प्रतिपादन किया गया। त्रिभाषा सूत्र का सर्वप्रथम प्रतिपादन सन् 1956 में "केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बॉर्ड" ने किया। उसने सरकार के अनुमोदनार्थ निम्नलिखित दो सूत्रों का निर्माण किया–

**पहला सूत्र :**

अ. मातृभाषा

ब. क्षेत्रीय भाषा

स. मातृभाषा और एक क्षेत्रीय भाषा का मिश्रित पाठ्यक्रम

द. मातृभाषा और एक शास्त्रीय भाषा का मिश्रित पाठ्यक्रम

य. क्षेत्रीय भाषा और एक शास्त्रीय भाषा का मिश्रित पाठ्यक्रम।

2. हिन्दी या अंग्रेजी

3. एक आधुनिक भारतीय भाषा या एक आधुनिक यूरोपियन भाषा, जो (1) और (2) में न ली गई हो।

**दूसरा सूत्र :**

1. पहले सूत्र के समान।
2. अंग्रेजी या एक आधुनिक यूरोपीय भाषा।
3. हिन्दी (अहिन्दी क्षेत्रों के लिए या कोई अन्य आधुनिक भारतीय भाषा हिन्दी क्षेत्रों के लिए)

## राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भाषाओ के सम्बन्ध में उस नीति को दोहराया गया है जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति सन् 1968 में स्पष्ट की गई थी।

संक्षेप में इस नीति में निम्न बातो पर बल दिया गया –

अ. **विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षा** का माध्यम– इस नीति में विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षा के माध्यम के रूप मे आधुनिक भाषाएँ अपनाने पर बल दिया गया है। तथापि मातृभाषा जो आठवीं अनु सूची में शामिल किसी आधुनिक भारतीय भाषा से भिन्न हो सकती है, के माध्यम से शिक्षा प्रदान करने की आवश्यकता को मान्यता दी गई।

ब. **त्रिभाषा – सूत्र का कियान्वयन**– त्रिभाषा सूत्र में हिन्दी भाषी राज्यों में हिन्दी के अतिरिक्त एक आधुनिक भारतीय भाषा अधिमानतः दक्षिणी भाषाओं में एक के अध्ययन का और अहिन्दी भाषी राज्यों में अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषा के साथ–साथ हिन्दी के अध्ययन का प्रावधान है।

स. **छात्रों की भाषा**– दक्षताओं में सुधार – शिक्षा विभाग के अधीन सभी भाषा सस्थाओं को स्कूल स्तर पर छात्रों की भाषा – दक्षता में सुधार के लिए शामिल किया गया है। ये सस्थान भाषा शिक्षको का प्रशिक्षण , शिक्षण–सामग्री को तैयार करना, भाषा दक्षता जॉच तथा आधुनिक भारतीय भाषाओं में 10 महीने का प्रशिक्षण कार्यक्रम चला रहा है। भारतीय भाषा संस्थान आधुनिक भारतीय भाषाओं में भाषा प्रवीणता परीक्षणों को तैयार कर रहा है।

## राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019

भाषा से जुडे मुद्दे शिक्षा के लिए सबसे अधिक महत्व रखते है। भाषा सवाद का माध्यम होने के अतिरिक्त किसी व्यक्ति, समाज और इसके सस्कृति की निरतरता को बनाए रखने और उसके सम्प्रेषण का माध्यम भी है। बाल–विकास, बाल मनोविज्ञान और भाषा विज्ञान में हुए अध्ययन यह बताते हैं कि बच्चे अपनी मातृभाषा में सबसे बेहतर सीखते हैं। 2–8 वर्ष की उम्र के दौरान बच्चों में अनेक भाषाओं को सीखने की गजब की क्षमता होती है। यह एक बेहद महत्वपूर्ण सामाजिक क्षमता है,जिसको पोषित किया जाना चाहिए। इसी प्रकार बहु–भाषिकता के अनेक फायदे हैं जिनका हमारे जीवन में खासा महत्व है। (सिंह 2007)–

1. **मातृ भाषा/घर की भाषा शिक्षा के माध्यम के रूप में**– जहॉ तक भी सभव हो कम से कम ग्रेड 5 तक लेकिन वाछनीय तो यह है कि ग्रेड 8 तक हो सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में होने वाले सवाद का माध्यम मातृ भाषा/घर की भाषा/स्थानीय भाषा में होंगे। इसके बाद, स्कूली शिक्षा व्यवस्था यह सुनिश्चित करने के लिए अपने श्रेष्ठ प्रयास करेगी कि वे सभी प्रादेषिक भाषाए जो बडे स्तर पर बच्चों की घर की भाषा/मातृभाषा के रूप में बोली जाती है, उन्ही को शिक्षा का माध्यम बनाया जाए। हालाकि व्यवस्था को यह भी सुनिश्चित करना होगा कि ऐसे स्कूल भी पर्याप्त सख्या में स्थापित किये जाए जो प्रादेषिक अल्पसंख्यक – भाषाओं में शिक्षा देते है।

2. **जिनकी भाषा निर्देशों की भाषा से अलग है उनके लिए द्विभाषी पद्धति**– शिक्षाक्रम एक लचीली–भाषा पद्धति को बढावा देगा। शिक्षको को प्रोत्साहित किया जाएगा द्विभाषी पद्धति को अपनाए।

3. **स्कूलों में तीन या इससे अधिक भाषाओं से ज्ञान**– छोटे बच्चों में भाषा को सीखने की क्षमताओं को पोषित करने और

इन्हें समृद्ध करने के लिए प्री–स्कूल और ग्रेड 1 से ही तीन इससे अधिक भाषाओं का ज्ञान देना शुरु किया जायेगा ताकि ग्रेड 3 तक आते–आते ना केवल इन भाषाओं की लिपि को पहचान ने लगे बल्कि इनमें लिखे बेसिक टेक्स्ट को तो बच्चे निर्देशों के माध्यम से लिखना भी सीखे, लेकिन बाद में धीरे–धीरे अन्य भाषाओं की लिपि से भी उनका परिचय कराया जायेगा।

4. **साइन लैंग्वेज का मानकीकरण**– इंडियन साइन लैंग्वेज को पूरे देश में मानकीकृत किया जाएगा। इसके अनुसार राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर बधिर बच्चों के लिए शिक्षाक्रम बनाए जायेंगे। स्थानीय साइन लैंग्वेज को भी समान महत्व के साथ देखा जाएगा और जहां कही भी जरुरत और इसकी प्रासंगिकता है वहां इसे सिखाया भी जाएगा।

5. **स्कूलों में त्रिभाषा फॉर्मूला की निरंतरता**– संवैधानिक प्रावधानों और भारतीय जन, प्रादेशिक क्षेत्रों और संघ की आंकाक्षाओं को ध्यान में रखते हुए हमें त्रिभाषा फॉर्मूला को लगातार बनाए रखना होगा। यह फॉर्मूला अभी भी इस्तेमाल किया जाता है। इसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 के बाद से अपनाया गया, बाद में 1986 और 1992 की शिक्षा नीतियों में भी इसे अपनाया गया और फिर पुनः NCF 2005 में भी इस पर जोर दिया गया।

   हालांकि, यह अब शोध में भी निकल कर आया है कि 2 वर्ष से लेकर 8 वर्ष तक की उम्र में बच्चों की भाषा सीखने की क्षमता बहुत ही प्रखर होती है। साथ ही बहु–भाषिक्ता बच्चों के सज्ञानात्मक विकास के लिए बेहद फ़ायदेमंद है, इसलिए बच्चों को अब उनके आरम्भिक वर्षो में ही, बुनियादी शिक्षा और उसके बाद, तीन भाषाओं को सिखाया जाएगा।

6. त्रिभाषा फार्मूला का अमल हमारे बहु–भाषी देश में बहु–भाषिक क्षमताओं के विकास और इनके बढावा देने के लिए त्रिभाषा फार्मूला को शिद्दत के साथ अमल में लाया जाएगा। हालांकि इसका हिन्दी भाषी क्षेत्रों में बेहतर अमल किया जाना चाहिए, यहाँ राष्ट्रीय समन्वयक के लिए स्कूलों में हिन्दी के अतिरिक्त भारत की अन्य भाषाओं के शिक्षकों का, इनके साहित्य का ओहदा बढेगा, और हमारे विद्यार्थियों की समझ और दृष्टि को भी व्यापक बनाने में यह मदद करेगा।

   केन्द्रीय और राज्य सरकारों के द्वारा पुरे देश की प्रांतीय भाषाओं और खासतौर पर अनुसूची 8 की भाषाओं के पर अच्छी खासी मात्रा में निवेश किया जाएगा। पूरे देश में भारतीय भाषाओं के अध्ययन और इनके बढावें के लिए, और सभी राज्यो में त्रिभाषा फॉर्मूला को लागू करने के लिए सभी राज्य अन्य राज्यों के साथ अनुबंध कर सकते हैं जिसके अंतर्गत एक–दूसरे राज्य से भारी मात्रा में भाषा के शिक्षकों की सेवाओं को लिया जा सकेगा।

7. **भाषा शिक्षण के लिए शिक्षकों की नियुक्ति**– ऐसे स्थानों पर जहाँ की भाषा बोलने वाले शिक्षकों की यदि वहा कमी है तो विशेष प्रयास किये जायेगें और विशेष रूप से स्कीम चलाई जायेगी जिसके तहत यहाँ ऐसे शिक्षको को नियुक्त किया जायेगा जो यहाँ की स्थानीय भाषा बोल सकते है। पूरे भारत में एक देशव्यापी प्रयास किया जाएगा जिसके तहत भारतीय भाषाओं के शिक्षको को तैयार किया जायेगा।

8. विज्ञान को दो भाषाओं में सीखना विद्यार्थियों का माध्यम उनको स्थानीय/घर की भाषा है वे ग्रेड 8 या उससे पहले विज्ञान को दो भाषाओं में सीखेंगे ताकि ग्रेड–10 के अंत तक आते–आते वे विज्ञान पर दोनों भाषाओं अपनी स्थानीय या घर की भाषा और अंग्रेजी में बात कर सके और काम कर सके।

इससे विद्यार्थियों में विज्ञान के सिद्धांतों और सकल्पनाओं के बारे में चिन्तन करने के एक से अधिक रास्ते और तरीके विकसित होंगे।

इस तरह हम भविष्य के लिये ऐसे वैज्ञानिकों को तैयार कर सकेंगे जो अपने काम को अपने परिवारों, स्थानीय टी.वी. चैनलों, अखबारों, अपने गृह राज्य और शहरों/कस्बों के बच्चों के साथ उनकी भाषाओं में बात कर सकें, उन्हें साझा कर सकें और अगली पीढी को प्रेरित कर सके।

विज्ञान को द्विभाषी होना एक वरदान के समान है, अधिकाश नोबेल पुरस्कार विजेता वैज्ञानिक एक से अधिक भाषाओं में विज्ञान पर सोचते–समझते रहे है। वर्तमान में अनेकों वैज्ञानिक यह कहते पाए जाते है कि वे विज्ञान पर अपनी घर की भाषा/मातृभाषा में चिन्तन करने और बोलने में असमर्थ है, और इसके चलते ना केवल उनके सोचने–विचारने की क्षमता बाधित हुई है बल्कि अपने–अपने समुदायों में उनकी पहुँच बाधित हुई हैं।

बहु–भाषिकता भारत के लिए एक अनिवार्यता है, और किसी भी व्यक्ति के सीखने के अवसरों को समृद्ध करने और उसकी समझ को व्यापक करने में यह एक वरदान है, ना कि कोई बोझ। यदि बच्चों को कम उम्र में ही अलग–अलग भाषाओं का माहौल मिले तो वे बहुत तेजी से इन्हें सीख लेते हैं। अनेक अध्ययनों में पाया गया है कि वे बच्चे जो बहु–भाषी होते हैं। एकल भाषी बच्चों की तुलना में तेज सीखते है, और अपने जीवन में बेहतर कर रहे है। यह बच्चों को बौद्धिक और सांस्कृतिक रुप से समृद्ध बनाती है, और अपने जीवन में एक से अधिक तरीकों से सीखने और सोचने में सक्षम बनाती है, क्योंकि बहु–भाषिकता के चलते वे अनेक तरह के साहित्य और उनमें प्रयोग होने वाली उपमाए, शब्द, अभिव्यक्ति के तौर–तरीके आदि अर्जित कर लेते है जो उन्हें बेहतर सवाद और चिन्तन में मदद करते है। बहु–भाषी भारत बेहतर शिक्षित और राष्ट्र के रुप में बेहतर संगठित होगा। और तो और, भारत की भाषाएं दुनिया की सबसे समृद्ध और वैज्ञानिक भाषाओं में से एक है, इनका एक विशाल प्राचीन और आधुनिक साहित्य उपलब्ध है जिससे भारत की राष्ट्रीय पहचान को गढ़ने में मदद मिलेगी।

हम सब जानते है कि जिस तरह 1960 के दशक में सोचा जाता था कि अंग्रेजी विश्व की भाषा बनेगी, ऐसा कुछ भी नही हुआ है। जैसा कि पहले भी कहा गया है कि सभी विकसित देशों को अपनी ही भाषाओं को सभी क्रियाकलापों और शिक्षा के माध्यम के रुप में इस्तेमाल करना चाहिए। अन्यथा इसकी भाषाओं की विविधता, विरासत और इनकी समृद्धता नष्ट हो जायेगी। इसलिए यह आग्रह किया जा रहा है कि भारत में हम अपने सभी रोजमर्रा के व्यवहार

में अपनी भाषाओं का इस्तेमाल करें, इस तरह इनके प्रचार–प्रसार में सहायता मिलेगी। इसमें कोई शक नही कि कई क्षेत्रों में एक कॉमन भाषा पूरे विश्व मे बन गयी है, जैसे विज्ञान और के क्षेत्र मे। आज अव्वल दर्जे के वैज्ञानिक जर्नल प्रमुख रुप से अंग्रेजी मे ही प्रकाशित किये जाते है। इसलिए विद्यार्थियो के लिए, खास तौर पर उनके लिए जो उच्च शिक्षा विज्ञान के क्षेत्र मे करना चाहते है या जरूरी है कि वें अंग्रेजी और अपनी मातृभाषा दोनो मे ही पारगत हो ताकि वे दोनों भाषाओं मे धारा–प्रवाह मे संवाद कर सके। ऐसा सभी तकनीक रुप से विकसित देशो मे होता है।

## सन्दर्भ

1. चतुर्वेदी डॉ शिखा (2007)– हिन्दी शिक्षण आर लाल बुक डिपो मेरठ (पृ स 02)
2. पाण्डेय डॉ रायशकल (2010)– उदीयमान भारतीय समाज मे शिक्षा, श्री विनोद पुस्तक मंदिर आगरा ( पृ स 351)
3. प्रारुप राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019 (4.5 मातृभाषा / स्थानीय भाषा मे शिक्षा)
4. पाठक पी डी (2011)– भारतीय शिक्षा और उसकी समस्या श्री विनोद पुस्तक मंदिर आगरा (पृ स –64)
5. शर्मा डी एल (2007)– उदीयमान भारतीय समाज मे शिक्षा आर लाल बुक डिपो मेरठ ( पृ स 377)
6. भटनागर सुरेश (2007)– आधुनिक भारतीय शिक्षा, आर लाल बुक डिपो मेरठ ( पृ स 35)
7. सिंह डॉ वी बी (2007)–भारत मे शिक्षा व्यवस्था का विकास, आर लाल बुक डिपो मेरठ ( पृ स 96)

❑❑❑

# आधुनिक हिन्दी कृष्णकाव्य में कृष्ण का बदलता स्वरूप

सरिता वैष्णव
रविन्द्रनाथ टैगोर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कपासन

*जब जब भी देश में धर्म की हानि पराकाष्ठा के स्तर तक पहुच जाती है, आसुरी शक्तिया सुरसा की भाति मुह फैलाती है। जब आसुरी शक्तियों का आतक चरम सीमा तक पहुच जाता है, तब तब ही प्रभु का साकार रूप में प्रकट होकर अपनी लीलाओं के माध्यम से विपरीत परिस्थितियों पर विजय प्राप्त कर एक समतामूलक समाज की स्थापना करते हैं।*

*इसी परिप्रेक्ष्य मे द्वापर में श्रीकृष्ण ने अवतार लेकर अपनी लीलाओं द्वारा जनमानस को चमत्कृत किया था। भगवान कृष्ण ने रासलीला द्वारा पावन प्रेम को प्रतिष्ठित कर धर्म के संस्थापक की भूमिका का निर्वहन किया था। वेदों, पुराणों, श्रीमदभागवत गीता, जैन व बौद्ध साहित्य में श्रीकृष्ण को अगोचर परमेश्वर एव सच्चिदानंद के रूप में प्रतिष्ठित किया है। आदिकाल भक्तिकाल एव रीतिकाल में भी कृष्ण का यही रूप दृष्टव्य था। किंतु आधुनिक काल के कवियों ने कृष्ण के परिवर्तित रूप को चित्रित किया है। इन्होंने श्रीकृष्ण को महामानव, समाज सुधारक, श्रेष्ठ नेतृत्व कर्ता, महान राजनीतिज्ञ, कूटनीतिज्ञ, क्रांति के दूत, जननायक तथा लोक रक्षक बताया है । प्रस्तुत आलेख में इन नवीन रूपों के संबंध में शोध का विवरण दिया गया है । इस शोध में पौराणिक ग्रथों के साथ–साथ प्रियप्रवास, भ्रमरदूत, द्वापर, कृष्णायन व कनुप्रिया जैसे ग्रथों का सदर्भ ग्रंथों के रूप में उपयोग किया गया है । प्रस्तुत निबंध में विभिन्न कालों के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन भी किया गया है।*

*शोध में यह निष्कर्ष निकलकर आया कि श्री कृष्ण के व्यक्तित्व में धैर्य, पुरुषार्थ, चिंतन, शक्ति, शुद्ध कर्म, दूरदृष्टि तथा अपार बुद्धिबल था। इन्हीं गुणों के कारण वह मानव से महामानव बने। आलेख में श्रीकृष्ण के उक्त गुणों को विभिन्न प्रसगों में उचित उदाहरणों द्वारा प्रस्तुत किया है। मसलन एक सौ अपराधों तक शिशुपाल को क्षमा करना, द्रोपदी का चीर हरण, महाभारत युद्ध को रोकने के लिए श्रीकृष्ण द्वारा किए गए अथक प्रयास, सुदामा के साथ मैत्री धर्म निभाना, गोवर्धन पूजा आदि घटनाक्रमो में श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व में धैर्य, पुरुषार्थ, प्रखर चिंतक, आदर्श मित्र, गो सेवक, एवं कुशल मार्गदर्शक के गुण प्रतिबिम्बित होते हैं।*

## प्रस्तावना

भारत की सस्कृति के चारों युग–सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर युग एवं कलियुग की धारा निरन्तर प्रवाहित रही है। इनमे त्रेतायुग में राम जहाँ मर्यादा पुरूषोत्तम स्वरूप में प्रकट हुए,वही द्वापर युग के महानायक कृष्ण का व्यक्तित्व एवं चरित्र,सदा श्रेष्ठ व उदात्त रहा है। उनका जीवन अधिक जटिल एव चुनौतीपूर्ण था।

कृष्ण ने जहाँ एक तरफ समाज में प्रेम को प्रतिष्ठित किया वही दूसरी तरफ धर्म के सस्थापक की भूमिका भी निभाई। उन्होंने धर्म–ग्लानि के युग में अवतार लिया था,जहाँ अधर्म की प्रबलता थी।

अपने जीवन की जटिल और चुनौतीपुर्ण परिस्थितियों का सहज रूप से सामना किया एव अपने बुद्धिकौशल से निवारण भी किया है। ऐसे कृष्ण का चरित्र हमें वेदों, पुराणों, श्रीमदभागवतगीता, जैन साहित्य, बौद्ध साहित्य, अगोचर, परमेश्वर एवं सच्चिदानंद आदि रुपों में मिलता है। वे ही कृष्ण हिन्दी साहित्य के इतिहास के अंतर्गत आदिकाल भक्तिकाल एवं रीतिकाल में भी हमें कुछ–कुछ इन्ही रूपो में दृष्टव्य होते है। किन्तु आधुनिक काल के कवियो के कृष्ण का परिवर्तित स्वरूप चित्रित किया है। कृष्ण जो कि पुराणों एवं साहित्यों में परब्रह्म व ईश्वर रू॰ में दर्शाए गए है। वे ही आधुनिक कालीन कवियो द्वारा महामानव, समाजसुधार, श्रेष्ठ नेतृत्वकर्ता,महान राजनीतिज्ञ, कुटनीतिज्ञ, क्रांति के दूत, जननायक, राष्ट्रोद्धारक एवं लोकरक्षक की भूमिका का निर्वहन करते हुए भी चरितार्थ हुए हैं। यहाँ कृष्ण को विशषतः एक साधारण एव महामानव स्वरुप में कवियों द्वारा वर्णन किया गया है, जिस स्वरुप से हम सभी भी अनभिज्ञ थे । अतः उनकी काव्य कृतियों मे बताए गये उपर्युक्त नवीन स्वरुपों की प्रस्तुति अभी अपर्याप्त है, इसकी पूर्ति हेतु ये शोध पत्र प्रस्तुत किया गया है। इस शोध कार्य में मौलिक रुप में चित्रण करने का प्रयास किया जाएगा, जो कि हिन्दी साहित्य के विद्यार्थियों एव कृष्ण प्रेमियों के लिये लाभप्रद एव शिक्षाप्रद रहेगा।

## समस्या कथन

आधुनिक हिन्दी कृष्ण काव्य में कृष्ण का बदलता स्वरुप।

## उद्देश्य

1. चारों वेद पुराणों ग्रन्थों, विशेषतः श्रीमद्भगवत् गीता–महापुराण, उपनिषदों, आदि में वर्णित भगवान श्रीकृष्ण के स्वरुपो का चित्रण करना।
2. जैन साहित्य, बौद्ध साहित्य, आलवार सन्त साहित्य, सस्कृत साहित्य, प्राकृत–अपभ्रश साहित्य एव हिन्दी साहित्य के मध्यकालीन हिन्दी काव्य में कृष्ण के स्वरुप का विवेचन करना।

आधुनिक काल के कृष्ण सम्बन्धी काव्य एव कवियों की जानकारी के साथ ही विशेषतः अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' के महाकाव्य 'प्रियप्रवास' सत्यनारायण कविरत्न की रचना 'भ्रमरदूत', मैथिलीशण

गुप्त की रचना 'द्वापर', द्वारकाप्रसाद मिश्र का महाकाव्य 'कृष्णायन', धर्मवीर भारती की रचना 'कनुप्रिया' एवं गुलाब कोठारी का खण्डकाव्य मैं ही राधा मे ही कृष्ण इन काव्यों में आये कृष्ण का स्वरुप चित्रण करना।

## परिसीमन

प्रस्तुत शोध कार्य में पौराणिक ग्रंथो के अध्ययन के साथ ही विशेषतः प्रियप्रवास, भ्रमरदूत, द्वापर, कृष्णायन, कनुप्रिया एवं मैं ही राधा में ही कृष्ण आदि का पूर्ण अध्ययन किया गया है।

## न्यादर्श

न्यादर्श हेतु प्रस्तुत आधुनिक कवियों के छः काव्यों में विशेषत कृष्ण के स्वरुप पर अध्ययन किया गया है।

## उपकरण

प्रस्तुत काव्य में प्रियप्रवास एवं कृष्णायन, की टीकाओं के साथ भ्रमरदूत, द्वापर, कनुप्रिया आदि काव्यो की व्याख्या सम्बन्धित पुस्तकों का अध्ययन किया गया।

## तथ्यों का विश्लेषण एवं व्याख्या

वेदों, पुराणों, उपनिषदों एवं सस्कृत साहित्य, जैन साहित्य, बौद्ध साहित्य, प्राकृत–अपभ्रंश, साहित्य एव हिन्दी साहित्य के मध्य कालीन एवं उत्तर मध्य कालीन साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन एवं इन्ही के साथ आधुनिक कृष्ण कवियों के साहित्य का भी तुलनात्मक अध्ययन।

## व्याख्या

आधुनिक कवियों ने अपने कृष्ण भक्ति सम्बन्धी काव्यों के अन्तर्गत अपने विचारानुसार नयी सस्थापनाऐ की है, जिनके अन्तर्गत कृष्ण का स्वरूप युगानुरूप परिवर्तन हुआ है। पुराणों एव महाभारत के कृष्ण की तुलना में आज का कृष्ण एक साधारण मानव होते हुए भी कई अलौकिकताएँ लिए हुए है। वे अब सिर्फ यशोदा के नटखट लाला, माखनचोर,अनंत,अगोचर, परब्रह्म, राधा को प्रिय, ब्रज का उद्धार करने वाले, लोकोपकारक, लोकमगल, जनमनरजक मानवतावादी, कुशल–राजनीतिज्ञ, उदार चरित्र से युक्त, कूटनीतिज्ञ, वैज्ञानिकता को साथ लिए हुए, दूरदृष्टा, गीतोपदेष्टा एव श्रेष्ठ प्रबन्धक आदि गुणों से युक्त उनके लीला के अनुरूप अनेक स्वरूपो में चित्रित है। अतः आधुनिक कवियों के कृष्ण काव्य में हुए कृष्ण के इन परिवर्तित स्वरूपो को चित्रित करना ही प्रस्तुत शोध का महत्त्वपूर्ण पक्ष रहा है।

## शैक्षिक निहितार्थ

शिक्षा के क्षेत्र में प्रस्तुत शोध प्रबन्ध मे आधुनिक कृष्ण काव्य मे नटखट लाला (कृष्ण) अपने नटखटपन के साथ ही समाज सुधारक, क्रान्तिदूत,कुशल राजनीतिज्ञ, लोकोपकारक, महामानव, राष्ट्र के उद्धारक आदि रूप मे जनता का मार्ग प्रशस्त करने वाले मार्गदर्शक के रूप मे प्रस्तुत हुए है। जिस प्रकार अधर्म से ग्रस्त महाभारत के युग में लीला पुरूषोत्तम कृष्ण ने अदम्य धैर्य, पुरूषार्थ तथा बुद्धिमत्तापूर्वक अपनी विचित्र लीलाओं एव चरित्र के माध्यम से तत्कालीन समाज तथा धर्म के विकास के क्षेत्र में एक नई दिशा प्रदान करते हुए, अपना आदर्श एवं महामानव स्वरूप प्रस्तुत किया,उसी प्रकार प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध भारतीय सस्कृति से विमुख, नैराश्यपूर्ण, दुख–सागर में निमग्न कुण्ठित जीवन से ग्रस्त आज के मनुष्य को जीवन के आदर्श पुरूष भगवान श्री कृष्ण (जो अपने कर्मों से मानव से ईश्वर बनें) से अपने जीवन में धैर्य,पुरूषार्थ,चिन्तनशक्ति,शुद्ध कर्म, दूरदृष्टि एव बुद्धिबल नामक गुणो के विकास के साथ लक्ष्यप्राप्ति में बाधक बडी से बडी विपत्तियो का डटकर सामना करने की शिक्षा प्रदान करता है। यहाँ उपरोक्त श्री कृष्ण के जो भी गुण दर्शाए गए है, मैं उनको उदाहरण देकर स्पष्ट करना चाहती हूँ कि वास्तव में श्री कृष्ण इन सभी गुणो की खान थे। सर्वप्रथम हम धैर्य को ही ले। कृष्ण इतने धैर्य को धारण करने वाले थे कि भरी हुई सभा में जहाँ युधिष्ठिर ने कृष्ण को ही प्रथम पूज्य मानकर उनके चरणों की पूजा करनी चाही, वही पर शिशुपाल द्वारा कृष्ण को 100 अपशब्द बोलने पर भी कृष्ण ने धैर्य रखा, परन्तु 101 वें अपशब्द के बाद ही अपने प्रण को स्मरण मे रखकर उन्होने सुदर्शन चक्र के द्वारा उसकी गर्दन काट दी। इसके पश्चात् उनके पुरूषार्थ की बात आती है, उनके जैसा पुरूषार्थी वर्तमान समय तक कोई नही हुआ। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के साथ अपने जीवन को जीने वाले एक मात्र पुरूष थे। द्रोपदी के चीर–हरण के समय उनके पॉच पतियो एव सभा में बैठे महारथियो यहाँ तक भीष्म पितामह द्वारा भी उनकी सहायता नही की गई उस समय अप्रत्यक्ष रूप से परमात्म तत्व के साथ ही अपने पुरूषार्थ का परिचय देकर ही श्रीकृष्ण ने द्रोपदी के चीर की लाज रखी थी।चिन्तन शक्ति इतनी तीव्र की कोई अदाजा भी नही लगा सकता कि यह व्यक्ति आगे क्या करने वाला है।कौरव– पाण्डव के युध्द को रोकने का अथक प्रयास किया, किन्तु युद्ध होना तय ही था। यह जानकर सत्य अर्थात् पाण्डवों का साथ दिया। अपनी चिन्तन शक्ति द्वारा ही उन्होंने इस धर्मयुध्द मे अपनी सेना को कौरवो की तरफ रखा और स्वय पाण्डवों की तरफ आ गए।

हर प्रकार से अपने कर्मो मे शुध्दता रखने वाले वे कर्म के महाधनी थे।स्वय द्वारकाधीश थे फिर भी मित्रता निभाने द्वार पर आए अपने मित्र सुदामा से मिलने नगे पैर दौड गए, और राज्यसभा मे उन्हें सिहासन पर बिठाकर स्वय उनके चरणो को धोया। दूरदृष्टि मे निपुणता ऐसी कि इन्द्रपूजा को छोड, गायो के रक्षक एव सरक्षक वन, गौवर्धन पूजा को महत्व दिलाया। क्योकि दुध, घी, मक्खन, पनीर आदि खान–पान शरीर के लिए एक सम्पूर्ण भोजन होता है। क्योकि इसके साथ ये खाद्यान व्यावसायिक रूप से मुख्य बनाया जा सकता है। उस समय गौकुल के लोग धनी हो गये थे। यह उनकी नयी महत्वपूर्ण दूरदृष्टि थी। बुध्दिबल हेतु तो श्रीकृष्ण का कोई सानी नही। जब गुरू द्रोणाचार्य युध्द मे अपनी वीरता का परिचय दे रहे थे उस समय गुरू द्रोणाचार्य का वध किए बिना युद्ध जीतना बहुत ही मुश्किल था। तब श्री कृष्ण ने ही अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय देते हुए द्रोणाचार्य का वध कराया ।अश्वत्थामा नामक हाथी को मरवाया और सत्यवादी एव धर्मराज युधिष्ठिर द्वारा "अश्वत्थामा हतो नरो वा कुजरो।" कहलवाया। अश्वत्थामा अर्थात अपने पुत्र के प्रेम एव उसके मरने के गम मे द्रोणाचार्य द्वारा युद्ध न करना और उसी अवस्था मे अर्जुन द्वारा द्रोणाचार्य का वध करना । ये सभी कार्य भी श्रीकृष्ण के बुद्धिबल को ही प्रदर्शित

करते है। इस प्रकार यह शोध प्रबन्ध समाज, जाति तथा राष्ट्र की एकता, अखण्डता बनाने में सदैव तत्पर रहने की प्रेरणा भी प्रदान करता है। अपने कर्मों में श्रीकृष्ण सी श्रेष्ठता लाने के महत्वपूर्ण कार्य को सिध्द करता है। अतः शिक्षा जगत् के इतिहास के विकास में प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध परम उपादेय सिद्ध होता है।

## संदर्भ

1. उपाध्याय अयोध्या सिह "हरिऔध" : प्रियप्रवास (खडी बोली का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य) हिन्दी साहित्य कुटीर,वारणसी,दशम,संस्करण, 2016
2. कोठारी गुलाब: "मै ही राधा मै ही कृष्ण" (खण्ड काव्य), पत्रिका प्रकाशन, जयपुर, 2009
3. मिश्र द्वारकाप्रसाद: "कृष्णायन", भारती साहित्य मन्दिर, दिल्ली, 1964
4. भारती धर्मवीर: "कनुप्रिया", भारतीय ज्ञानपीठ, काशी (प्र.सस्करण, 2008)
5. गुप्त मैथिलीशरण : "द्वापर", साहित्य सदन, झाँसी, सस्करण 2008
6. हरि(स.) वियोगी : "ब्रजमाधुरी सार", भ्रमरदूत (सत्यनारायण कविरत्न) हिन्दी साहित्य सम्मेलन,प्रयाग सं. 1987

❑❑❑

# आधुनिक प्रदूषण

शिव नारायण शर्मा
रविन्द्रनाथ टैगोर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कपासन

*आज गरीबी बढ़ती जनसंख्या एवं बढ़ता प्रदूषण समूची मानवता के लिए अभिशाप बने हुए हैं यह समस्याएं विश्व के किसी भी देश में कम या अधिक मात्रा में विद्यमान है आज हमारी वायु, जल, भूमि प्रदूषित हो चुके हैं प्रदूषण मानव जनित समस्या है अतः हम इसे उपभोग करने तथा रोकने के उपायों पर अमल करना चाहिए अन्यथा जेव मंडल में अदृश्य एवं पर्यावरणीय प्रभाव देखने को मिल सकते हैं जो मानवता के लिए गंभीर चुनौती सिद्ध होंगे प्रस्तुत आलेख में प्रदूषण के प्रकारों प्रदूषण की प्रक्रिया तथा प्रदूषण रोकने के उपायों पर प्रकाश डाला गया है राजस्थान के संदर्भ में भी विशेष जानकारी दी गई है प्रदूषकों को मुख्यतः और विघटनकारी तथा जैविक घटक प्रकारों में विभाजित किया गया है यद्यपि वायु एवं जल में प्रदूषण की मात्रा सर्वाधिक है साथ ही ध्वनि प्रदूषण रेडियो एक्टिव प्रदूषण तथा भारी धातु व तापीय प्रदूषण पर भी विस्तार से प्रकाश डाला है आलेख में प्रदूषण नियंत्रण संबंधी तकनीक का उल्लेख किया गया है आलेख में देश की पवित्र गंगा के प्रदूषण पर नियंत्रण के साथ–साथ कल कारखानों के उपायों पर भी चर्चा की गई है प्रदूषण के सबंध में वैज्ञानिक जानकारी देने वाला यह एक महत्वपूर्ण आलेख है।*

## प्रस्तावना

आज वातावरणीय प्रदूषण मानव के लिये गंभीर संकट बना हुआ हैं। विश्व के प्रत्येक कोने में यह प्रदूषण किसी न किसी मात्रा में मौजूद है। प्रदूषण परिस्थितिकी तंत्र (इकोसिस्टम) पर लगने वाला एक अतिरिक्त प्रतिबल है जो वहां की संवेदनशील जातियों को प्रभावित करता है। वातावरणीय प्रदूषण दल (यू.एस.ए.) 1965 के अनुसार उर्जा परिवर्तन, विकिरण स्तर, रासायनिक एवं भौतिक वस्तुओं के निमार्ण और जीवों की अधिकता के कारण उत्पन्न उपजात ही मानव को प्रत्यक्ष रुप से प्रभावित करते हैं अथवा जल, कृषि और अन्य जैविकों द्वारा मानव को प्रभावित करते हैं।

वैज्ञानिक चन्द्र प्रकाश के अनुसार "प्रदूषण का प्रश्न गुणात्मकता के साथ–साथ संख्यात्मकता का भी प्रश्न है।" किसी रसायन की एक सान्द्रता किसी स्थान विशेष को प्रदूषित कर सकती है तो दूसरी ओर उसी पदार्थ की उतनी ही सान्द्रता अन्य स्थान के लिये लाभदायक सिद्ध हो सकती है। आवश्यकता इस बात की है कि प्रदूषण का मापन किया जाय, उसको पूरी तरह पहचाना जाए और उसे रोकने के भागीरथ प्रयत्न किये जायें।

## प्रदूषण की प्रकिया

जीवधारियों की उत्पत्ति से पूर्व पृथ्वी पर प्रदूषण के कोई चिह्न विद्यमान नहीं थे। उस समय प्रकृति की विभिन्न प्रक्रियाओं में एक पूर्ण सन्तुलन था। प्रदूषण की इस समस्या का जन्म सभ्यता के विकास एवं औद्योगीकरण की प्रकिया के साथ–साथ हुआ और आज यह समस्या विश्व के विचारकों के सामने गंभीर समस्या बनी हुई है।

वातावरणीय समस्यायें विकास की प्रकिया के साथ–साथ उत्पन्न हुई। जंगलों को कटवाने से वनस्पतियों एवं अन्य प्राणियों की अनेक जातियों को नष्ट करने का अवसर सामने आया। सुनिश्चित सिंचाई योजना के अभाव में भूमि का उसरपन बढ़ा।

जन्तुओं के अपशिष्ट पदार्थ प्राकृतिक प्रक्रियाओं द्वारा अपघटित होकर सरलतम पदार्थों में टूटते रहते हैं। लेकिन वाहितमल साधारण विधियों से विघटित नहीं हो पाता हैं। अतः बडे–बडे शहरों में इसे झीलों अथवा नदियों में डाल दिया जाता है जहाँ यह जल को प्रदूषित करके वहाँ की वनस्पति और जीवजन्तुओं को प्रभावित करता है।

औद्योगीकरण ने भी प्रदूषण की समस्या पैदा की। कारखानों से निकलने वाले धुएं ने वायु को दूषित किया। तैलीय अवशिष्ट के कारण जल प्रदूषित हुआ, जिनके कारण अनेक मछलियाँ एवं वनस्पतियाँ नष्ट हो गई। तैराको के लिये भी यह जल उपयुक्त नहीं रहा।

यहाँ हम विभिन्न स्तरों पर होने वाले प्रदूषण संकट के बारे में चर्चा करेंगे।**(एकलव्य)**

प्रदूषण फैलाने वाले पदार्थ दो भागों में बांटे जा सकते है :–

1- Non-degradable Pollutants (अविघटन कारी)

2- Bio-degradable Pollutants (जैव विघटनकारी)

प्रथम श्रेणी के पदार्थ नष्ट किये जा सकते है। उदाहरणार्थ मरक्यूरिक लवण और डी.डी.टी. जन्तुओं के शरीर में बिना नष्ट हुए बने रहते है। भोजन श्रृखला के द्वारा ये पदार्थ अन्य जन्तुओं के शरीर में पहुँच जाते हैं और वहाँ अपना घातक प्रभाव डालते हैं।

दूसरी श्रेणी के प्रदूषित पदार्थ जीवों द्वारा नष्ट किये जा सकते है। उदाहरणार्थ जन्तुओं के उत्सर्जित पदार्थ। यौगिकों की निम्नलिखित श्रेणियों से हम भली प्रकार परिचित हैं जो प्रदूषण फैलाने में सहायक हैं।

अ. हैलोजन युक्त कार्बनिक यौगिक :– इसमें हैलोजनयुक्त पेस्टीसाइड्स, ज्वाला अवरोधक एवं विभिन्न विलायक आते हैं।

ब. प्लास्टिक और उससे सम्बन्धित यौगिक :– इसमें प्लास्टीसाइजर, स्टेबीलाइजर आदि आते हैं।

स. तेल और उससे सम्बन्धित उत्पाद :– इसमें बहुकेन्द्रीय हाइड्रोकार्बन, विषम चक्रीय यौगिक, तेल तथा उसके उपजात आते हैं।

द. पेस्टीसाइड्स

य. भारी धातु :– इसमें भारी जैसे सीसा, जस्ता पारा आदि आते हैं।

र. औद्योगिक उपजात।

## प्रदूषण के प्रकार (Types of Pollution)

प्रदूषण के पाँच प्रकार हैं–(1.) वायु प्रदूषण, (2.) जल प्रदूषण, (3.) ध्वनि प्रदूषण, (4.) रेडियो धर्मी प्रदूषण, (5.) ठोस अवशिष्टों द्वारा प्रदूषण।

### 1. वायु प्रदूषण

हमारी पृथ्वी की सतह से एक मील ऊँचाई तक वायु का घना आवरण है। वायु में बहुत सारी उपयोगी गैसे जैसे ऑक्सीजन (21 प्रतिशत), नाइट्रोजन (78 प्रतिशत), कार्बनडाइऑक्साइड (0.03 प्रतिशत), ओजोन हाइड्रोजन आदि पाई जाती हैं।

जब वायु मे ऑक्सीजन के अतिरिक्त अन्य गैसों की मात्रा बढ़ती है अथवा वायु में ठोसकणों की मात्रा बढती है तो वायु प्रदूषण फैलता हैं। मेटेरोलॉलीज आफिस, पूना के अनुसार औद्योगीकरण एवं शहरीकरण की वृद्धि से भारत में प्रदूषण की मात्रा बढ़ी है। व्यक्ति अम्लता का शिकार होता जा रहा है। मथुरा के शोधक कारखाने से निकलने वाले रासायनिक पदार्थो से ताजमहल भी प्रदूषित हो रहा है।

धुल, माइकोबस, अन्य गैस और ताप आदि वायु प्रदूषण के प्रमुख घटक है।

**गैसे और वायु प्रदूषण** :– कार्बनमोनोक्साइड एक विषैली गैस है। कार्बन के अपूर्ण दहन द्वारा यह गैस बनती है। यह गैस श्वसन द्वारा हमारे रुधिर के हिमोग्लोबिन से मिलकर 'कार्बोक्सी हिमोग्लोबिन' नामक जटिल यौगिक बनाती है जिससे रुधिर शरीर में ऑक्सीजन के परिवहन में असमर्थ हो जाता है। अन्ततोगत्वा मनुष्य बेहोश होकर मृत्यु को प्राप्त होता है। वैज्ञानिक इस गैस को मीठी नींद द्वारा मौत का फदा डालने वाली गैस भी कहते हैं।

दूसरी महत्वपूर्ण गैस हाइड्रोजन सल्फाइड है। स्वचालित यंत्रो एव जलते हुए कोल से विमुक्त होने के पश्चात् यह गैस वायु की नमी से मिलकर गधक का तेजाब बनाती हैं। गधक के तेजाब की यह बूंदें वायु में उपस्थित धूल के कणों से मिल जाती है। वहाँ यह पदार्थ यकृत के उतकों का क्षय करते हैं। यह प्रभाव सर्वप्रथम न्यूयार्क के अन्दर अगस्त 1970 में देखा गया।

नाइट्रोजन–डाइ–ऑक्साइड गैस मनुष्यों में श्वसन सम्बन्धी रोग उत्पन्न करती है। बिहार की सुगंधित पदार्थो को बनाने वाली फैक्ट्रियों से निकलने वाले पदार्थ वायु प्रदूषण फैलाते हैं। ये पदार्थ कारखानों के आसपास बसने वाले व्यक्तियों की बुद्धि और व्यवहार को प्रभावित करते हैं।

श्रीराम केमिकल्स, कोटा द्वारा निकलने वाली सल्फरडाइऑक्साइउ गैस से उसके आसपास की वनस्पति नष्ट हो रही है।

शहरों में रेसाईघर में जलने वाली गैस द्वारा श्वसन सम्बन्धी रोग फैलते हैं।

**धूल और प्रदूषण** :– धूल भी प्रदूषण फैलाने वाला प्रमुख घटक है। चंडीगढ़ शहर पंजाब और पश्चिमी उतरप्रदेश के खेतों से आंधी द्वारा लाई गई मिट्टी से प्रदूषित हो जाता है। चडीगढ़ में धूल कणों की मात्रा का अध्ययन सी.एस.आई.ओ. (Control Scientific Instruments Organisation) द्वारा किया गया और यह पाया गया कि ये कण विभिन्न प्रकार के ग्रसनी सम्बन्धी रोगों के वाइरस एवं जीवाणुओं के वाहक होते हैं। ये विशेषतया गर्मी की ऋतु में व्यक्तियों मे रोग फैलाते हैं।

**धूआं और वायु प्रदूषण** :– स्वचालित यत्र, ट्रके, बसें रसोईघर में जलने वाले स्टोव और विशाल मात्रा में कारखानों की चिमनियों से निकलने वाला धुआ शहर में एक गुम्बदनुमा आवरण बनाता हैं। रात्रि को वायु में तैरते कार्बन के कारण ठडे होकर नमी का शोषण करते हैं और गुम्बद की उपरी सतह पर कुहरे का आवरण बनाते हैं। नमी के कारण भारी होकर ये कण नीचे की ओर आने लगते हैं। सर्दी की ऋतु में इस प्रकिया द्वारा व्यक्तियों मे दमा सम्बन्धी रोग उत्पन्न होते है। **(नवभारत टाइम्स,2010)**

**तापीय प्रदूषण और वायु प्रदूषण** :– वातावरण में तापक्रम की वृद्धि से तापीय प्रदूषण फैलता है। शहरों में इमारतों को बनाने वाली सामग्री उष्मा का अधिक शोषण कर गर्म हो जाती है जबकि गाँवों में मिट्टी के मकान उष्मा का शोषण कम करने के कारण ठडे रहते हैं। वायु सीधे विकिरणों की तुलना मे मकानों एव भूमि की गर्म सतहों के सम्पक्र में आकर शीघ्र गर्म हो जाती हैं। शहरों में उष्मा कारखानों, स्वचालित यत्रों द्वारा उत्पन्न होती है। शहरों में वर्षा का पानी गटर व नालियों द्वारा शीघ्र बह कर चला जाता है और वातावरण अधिक ठडा नहीं हो पाता है। वायुमण्डल में पाये जाने वाले मिट्टी के कण भी सूर्य के विकिरणों को परावर्तित करके उन्हें पृथ्वी तक आने से रोकते हैं।

यदि तापक्रम निरन्तर बढ़ता रहा तो ध्रुवीय प्रदेशों में हिमखण्डों के पिघलने का खतरा पैदा हो जायेगा जिससे सारी पृथ्वी अथाह जल राशि से ढक जायेगी और मानव का अस्तित्व सकट मे पड जायेगा।

### 2. जल प्रदूषण

वायु प्रदूषण के साथ–साथ जल प्रदूषण की समस्या ने भी मनुष्य को गभीर रुप से प्रभावित किया है। पृथ्वी का 3/4 भाग जल राशि से ढका हुआ हैं। ये जल सभी प्रकार की गदगी को आत्म–सात् कर लेता है। कुछ अपशिष्ट पदार्थ जल को इतना अधिक दूषित कर देते हैं कि वहा के निवासियों के स्वास्थ्य को इससे गभीर सकट पैदा हो जाता है।

इस प्रदूषित जल द्वारा बहुत बार गभीर दुर्घटनाये घट जाती हैं। कुछ समय पूर्व वारगल के निकट गोपालपुरा गाँव में एक पहरेदार की अशिक्षित पत्नी द्वारा कुए में कीटनाशक दवा मिला देने से 11 व्यक्तियों की मृत्यु हो गई।

डॉक्टर ए.एन. द्विवेदी और डॉक्टर टी.आर. द्वारा बम्बई रेल्वे स्टेशन के कुछ जलीय नमूनों का परीक्षण करने पर पाया गया कि उनमें

से कुछ में हैजा फैलाने वाले जीवाणु मौजूद थें। कलकता में भी प्रदूषित जल द्वारा हैजा फैलता है।

जलीय जीव अपने श्वसन के लिये जल में घुलनशील ऑक्सीजन पर निर्भर रहते हैं। लेकिन प्रदूषित जल में अपेक्षाकृत कम ऑक्सीजन होती है वांछित ऑक्सीजन प्राप्त करने के लिये मछलियाँ तेज गति से श्वसन करती है जिससे कितने ही दूषित पदार्थ उनके शरीर में चले जाते हैं।

जल प्रदूषण का प्रमुख कारण वाहितमल और औद्योगिक अपशिष्ट पदार्थो को जल में डालना है। नाभिकीय हथियारों के जल में परीक्षण करने से भी जल प्रदूषण फैलता है।

वर्तमान में भारत की 70 प्रतिशत नदियों और जल स्त्रोत प्रदूषण का शिकार बने हुए हैं।

वर्षा के जल के साथ–साथ गंदगी नदियों में प्रवेश करती है जिससे यह दूषित पदार्थो का संग्रहालय बन जाता है। एक सर्वेक्षण द्वारा यह पाया गया कि 16 वर्ष की तुलना में आज नदिया और झीलें 6 गुना अधिक प्रदूषित हो चुकी हैं।

**तेल और जल प्रदूषण** :– महासागरों में तेल प्रदूषण फैलाने वाला मुख्य पदार्थ हैं। सागर में पाये जाने वाले पक्षियों पर तलीय जल का प्रभाव आसानी से दृष्टिगोचर होता हैं। तैलीय जल से पक्षियो के पंख चिपचिपे हो जाते हैं जिससे पक्षी आसानी से उड़ नहीं पाते हैं। यह तेल समुद्र में पाई जाने वाली चट्टानों से रिस–रिस कर पानी में मिलता रहता हैं।

यह तेल पक्षियों के पंखों द्वारा प्रदान की जाने वाली प्राकृतिक उष्मीय अवरोधन क्षमता को नष्ट कर देता है और पक्षी ठड से ठिठुरने लगते हैं। कभी–कभी अधिक ठड के कारण पक्षी निमोनिया का शिकार होकर मर जाते है। अकेली टोरी केनाइन दुर्घटना में विभिन्न जातियों के दस लाख पक्षी मारे गये। जब समुद्र में चाटनों से तेल निकालने के लिये डिटर्जेन्ट का उपयोग किया जाता हैं तो ये डिटर्जेन्ट चटानों के चारों और एक मोटी तह बना लेते है। तेल की तुलना में ये अधिक विषैले होने के कारण बहुत सी समुदी घासों, मोलस्का के प्राणियों और विशाल केंकडों को नष्ट कर देते है।

**पेस्टीसाइड्स, कीटनाशक पदार्थ और जल प्रदूषण** :– विभिन्न पदार्थो जैसें अनाज, दालें, आटा, तेल, तरकारिया, फल, दूध, मक्खन, मछली एवं गोश्त के विश्लेषण से यह पाया गया कि इन पदार्थो में विभिन्न प्रकार के पेस्टीसाइड्स मिले होते हैं। शाक–तरकारियों एवं गेहूँ में डी.डी.टी. और बी.एच.सी. पाउडर की मात्रा पाई जाती हैं।

दो प्रकार के पेस्टीसाइड्स पाये जाते हैं। प्रथम प्रकार के पेस्टीसाइड्स बहुत अधिक विषैले होते हैं लेकिन इनका प्रभाव अस्थायी होता हैं। यह शरीर के किसी अंग विशेष पर ही अपना प्रभाव डालते हैं। दूसरी प्रकार के पेस्टीसाइड्स अपेक्षाकृत कम विषैले होते है लेकिन इनका प्रभाव स्थायी होता है। ये पूरे शरीर को प्रभावित करते हैं।

फसलों को कीटों से नष्ट होने से बचाने के लिये और अधिक उत्पादन के लिये विभिन्न प्रकार की कीटनाशक औषधियों एव रासायनिक उर्वरकों का उपयोग किया जाता हैं। ये पदार्थ सूक्ष्म जीवों में अधिक सान्द्रित हो जाते हैं और खाद्य श्रृंखला के माध्यम से विभिन्न जलीय जीवों में प्रवेश करते हैं। एक परीक्षण में D.D.T. का प्रतिशत् वितरण इस प्रकार प्राप्त हुआ–

| S. No. | Place | D.D.T. (PPM) |
|---|---|---|
| 1. | नदियों | 0.000005 |
| 2. | सगर | 0.00004 |
| 3. | जूप्लक्टॉन | 0.04 |
| 4. | समुद्री केंकडे | 0.16 |
| 5. | नीडल फिश | 2.00 |
| 6. | हेरिंग गल | 76.50 |

यह जैविक सचय (Bio-Accumulation) बहुत सी कायिक सम्बन्धी अनियमितताओं (Physiological disorders) को उत्पन्न करतें हैं। ऐसा पाया गया है। कि प्रत्येक भारतीय अपने भोजन के साथ प्रायः 0.266 mg. D.D.T की मात्रा ग्रहण करता हैं।

आई.टी.आर.सी., लखनउ ने बताया कि डी.डी.टी. की शेष मात्रा रूधिर परिसचरण द्वारा गर्भाशय में पहुँचकर वहाँ विकसित होते हुए भ्रुण को प्रभावित करती हैं। माता के दूध में तथा प्रसव के समय स्त्री योनि से निकले मे भी डी.डी.टी. की मात्रा पाई गई।

आई.टी.आर.सी. ने चेतावनी दी है कि भोजन में डी.डी.टी. की मात्रा के कारण यकृत सम्बन्धी, हृदय सम्बन्धी, कैंसर और भ्रूण की बनावट सम्बन्धी दोष उत्पन्न हो जाते हैं। डी.डी.टी. के कारण गर्भवती महिलाओं में शिशु के परिपक्व होने से पूर्व प्रसव पीड़ा उत्पन्न हो जाती हैं जिससे गर्भपात हो जाता है। अनेक एलर्जी एव आतों से सम्बन्धी रोग भी डी.डी.टी. के कारण उत्पन्न होते हैं।

हैदराबाद के 82 प्रतिशत् अगूर के नमूनों में मेलेथीन पेराथाइन और मिथाइल पेराथाईन पाया गया।

कीटों को नष्ट करने के लिए अनेक प्रकार के विषैले पदार्थो का उपयोग किया जाता है। फलों के वृक्षों पर छिड़के जाने वाला आर्सनिक निकोटाइन स्वास्थ्य सम्बन्धी विभिन्न रोगों को जन्म देता है। **(बर्लिन,2017–18)**

**भारी धातु और प्रदूषण** :–अनुज्ञापक के रुप में प्रयुक्त किये गये कुछ तत्वों से यह जानकारी मिली कि ये जलीय जीवों के लिये बडे विषैले होते है। भोजन श्रृखला द्वारा ये भारी धातु मनुष्य तक पहुँच जाते हैं और उसे रोग ग्रस्त कर देते हैं।

बी.ए.आर.सी. (बम्बई) द्वारा गुजरात में रहने वाले कुछ व्यक्तियों के रूधिर एव मूत्र का परीक्षण किया गया। परीक्षण से उनके रुधिर एव मूत्र में जस्ता, मैंगनीज, सीसा, कोबाल्ट और निकल की उपस्थिति का पता चला।

आई.टी.आर.सी. लखनउ ने बताया कि कुए के पानी में मैंगनीज की मात्रा सामान्य पानी की तुलना में तीन गुनी अधिक होती हैं। मैंगनीज युक्त ये पानी तत्रिका सम्बन्धी अनेकों विकार उत्पन्न

करता है। सूरसागर झील बड़ोदा की अवसादी चट्टानों में सीसे एवं कैडमियम की मात्रा पाई गई। कूक नदी के आसपास चरने वाले मवेशियों के दूध में पारे की मात्रा पाई गई।

**राजस्थान में जल प्रदूषण** :– राजस्थान मे पाली जिले की बांदी नदी मे टैक्सटाइल फैक्ट्री के अपशिष्ट पदार्थ मिलते हैं। छपाई के कारखानों का वाहितमल भी इस नदी के पानी मे मिलता है। जोधपुर मे रगाई और छपाई के कारखाने इस शहर के प्राकृतिक व कृत्रिम जल स्त्रोतों को दूषित कर रहे हैं। मरुस्थल के किनारे बसे पाली और बालोत्रा जिले मे टैक्सटाइल उद्योगों से निकलने वाले रासायनिक पदार्थों मे कुछ ऐसे विषैले पदार्थ होते हैं जो नदियों के जल को दूषित कर देते हैं। जंगली जानवरों द्वारा जब नदी का यह पानी उपयोग में लिया जाता है तो उनमें अनेक भयकर रोग फैल जाते हैं। जल मे इन पदार्थों की उपस्थिति के कारण कई बार प्रवासी पक्षियों के आने पर भी प्रतिबन्ध लग जाता है।

उदयपुर शहर की पिछोला झील भी मानवीय हस्तक्षेप के कारण प्रदूषण का शिकार बनी हुई है।

हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड, देबारी द्वारा द्रवीय अवशिष्ट पदार्थों को स्थानीय नदी में प्रवाहित किया जाता है जिससे जल की गुणवत्ता का क्षय होता है।

### 3. ध्वनि प्रदूषण

शोर प्रदूषण भी मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए बडा घातक है। अधिक शोर मानसिक विकृति, तंत्रिकीय विकार उत्पन्न करता है। शोर का मापन डेसिबल में किया जाता है। सामान्य बातचीत का शोर 20–30 डेसिबल तक होता हैं 120 डेसिबल से अधिक मात्रा वाला शोर बहरेपन, मानसिक तनाव ओर रुधिर दाब मे वृद्धि करता है। इससे कई तरह के हृदय रोग हो जाते हैं। शोर का प्रभाव छोटे बालकों पर बहुत अधिक होता है।

### 4. रेडियो धर्मी प्रदूषण

परमाणु विस्फोट द्वारा वातावरण मे रेडियोधर्मिता फैलती है। वैज्ञानिक कार्यों के पश्चात् बचे अवशिष्ट पदार्थों, चिकित्सालय के अवशिष्ट पदार्थों और न्यूक्लीयर पावर स्टेशन द्वारा जल को ठडा करने की प्रक्रिया के दौरान रेडियोधर्मिता फैलती है।

यू.एस.ए., आस्ट्रेलिया, पश्चिमी जर्मनी और जापान जैसे देश इन दिनों नाभिकीय अवशिष्ट पदार्थों की उपस्थिति से चिंतित हैं।

इन रेडियो एक्टिव विकिरणों द्वारा अनेको व्यक्ति विकलाग हो जाते हैं। गुण सूत्रों पर उप–स्थित जीनो में भी इन विकिरणों द्वारा अनेक परिवर्तन हो जाते है।

### 5. ठोस अवशिष्टों द्वारा प्रदूषण

सामान्यतया सड़क पर कागज, फटे पुराने जूते, कूडा करकट, कांच की बोतल के टुकड़े, प्लास्टिक, तार और अन्य लोहे के पदार्थ लापरवाही के साथ फेंक दिये जाते है। ये गंदगी मच्छरों एवं अन्य सूक्ष्म जीवों को उत्पन्न करती है। शहर के व्यक्तियों का स्वास्थ्य इन पदार्थों द्वारा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होता है। **(रमेश चन्द 2018)**

## प्रदूषण रोकने के उपाय

प्रदूषण को रोकना अकेले व्यक्ति का काम नही है। इसमें प्रत्येक व्यक्ति का सहयोग परमावश्यक है। उद्योगपतियो को कारखानो का वाहित मल पूर्व–उपचार के पश्चात् ही नदियो के जल मे डालना चाहिए, प्रति प्रदूषण नियमों को लागू करना चाहिए, नागरिकों को शिक्षित करना चाहिए और उन्हें प्रदूषण से फैलने वाले रोगों की जानकारी देनी चाहिए। बडी–बडी सस्थाएँ जैसे "यूनिट स्टेट्स इनवायरमेन्टल प्रोटेक्शन एजेन्सी" प्राकृतिक विज्ञान और ससार के वैज्ञानिकों को प्रदूषण रोकने के प्रयत्न करने चाहिए।

प्रदूषण रोकने के लिए निम्न उपाय अधिक कारगर सिद्ध हो सकते हैं :–

(1) समुन्द्र मे परमाणु बम परीक्षण को रोकना चाहिए। क्योंकि इससे समुद्र के जीव–जन्तु जैसे मछलिया कंकडे आदि मे रेडियोधर्मिता फैलती है। खाद्य श्रृखला के माध्यम से ये कल मनुष्य तक पहुच कर कैंसर जैसी भयानक बीमारियाँ उत्पन्न करते है।

(2) वातावरण मे ऑक्सीजन और कार्बनडाईऑक्साइड का सतुलन बनाये रखने के लिए अधिक पेड–पौधे लगाने चाहिये। पेड–पौधे प्रकाश सश्लेषण की प्रक्रिया मे ऑक्सीजन गैस बाहर निकालते है और वातावरण में कार्बन–डाइऑक्साइड की सान्द्रता को घटाते है।

(3) कारखानों मे अवक्षेपण के लिए शोधक और अवक्षेपक का इस्तेमाल करना चाहिए।

(4) कारखानो में सल्फरडाइऑक्साइड के बनने को रोकने के लिए कोक, प्राकृतिक गैसो एव सौर ऊर्जा का उपयोग करना चाहिए।

(5) अकार्बनिक खाद के स्थान पर कार्बनिक खाद के उपयोग को अधिक महत्व दिया जाना चाहिए।

(6) कीटनाशक दवाओं के स्थान पर इन कीटो को खाने वाले परजीवियों का उपयोग किया जा सकता है। कुछ हार्मोन्स का उपयोग करके भी हानिकारक कीटो के जीवन–चक्र को रोका जा सकता है। यदि कीटनाशक औषधियों का उपयोग आवश्यक भी हो तो एक सीमा मे ही उसका उपयोग करना चाहिए।

(7) ठोस अपशिष्टो को भूमि मे गहराई तक दफना देना चाहिए।

(8) औद्योगिक अपशिष्टों को पानी मे डालने के बजाय कुछ महत्वपूर्ण वस्तुओ मे बदल देना चाहिए। जैसे नारियल के बचे भागों से कागज जूट के बचे पदार्थ से Hard Board बनाये जा सकते है।

(9) वाहितमल (Sewage) का उपयोग निम्नानुसार किया जा सकता है :–

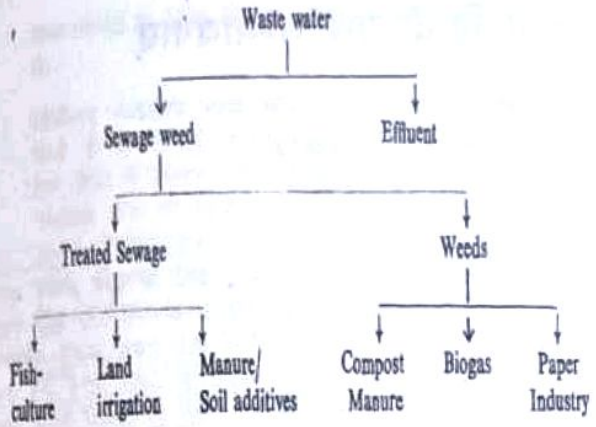


(10) कुछ नयी विधियां भी प्रदूषण को रोकने के लिये खोजी गई हैं, इनमें से कुछ इस प्रकार हैं:–

अ. वाहितमल को एल्युमीनियम द्वारा शुद्ध करने का तरीका खोजा गया है। चूने का पानी और द्रव कॉच को वाहितमल में मिलाकर $CO_2$ गैस प्रवाहित की जाती है। इस प्रक्रिया में प्राप्त एल्युमीनियम को दुबारा प्रयोग में लिया जा सकता है।

ब. एक प्रयोग में यह पाया गया कि दूषित पानी में पाया जाने वाला फूलदार पौधा ( Water Hyacinth ) 77 प्रतिशत सीसा चौबीस घंटे में हटाता हैं। ये पौंधा कुछ भारी धातुओं जैसे कैडमियमनिकल, कोमियम्, जस्ता, तांबा और लोहे का अवशोषण करता है जो कि मनुष्य के लिये घातक है।

इस प्रकार आज जनसंख्या, प्रदूषण एवं गरीबी मानव के लिये अभिशाप बने हुए हैं। आज विश्व के प्रत्येक मनुष्य के लिये प्रदूषण एक गंभीर चुनौती है। हमारी वायु, जल और पृथ्वी प्रदूषित हो चुके हैं। ये प्रदूषण कायिक सम्बन्धी, मनोवैज्ञानिक और व्यवहारात्मक समस्याओं को जन्म दे रहे हैं। अधिकांशतया प्रदूषण मानवीय त्रुटियों द्वारा ही उत्पन्न होते हैं अतः इसके निवारण में भी उसे सामयिक कदम उठाना चाहिए। (डि.आर. रवि, 2018)

## सन्दर्भ

1. एकलव्य।
2. बोर्ड शिक्षक पत्रिका।
3. नवभारत टाइम्स (2010)।
4. विज्ञान प्रगति
5. द लिटिल ग्रीन डाटा बुक, द वर्ल्ड बैंक, 2010
6. सिंह महेश प्रसाद, सिंह जे.के., मोहंका रीना 2007
7. बर्लिन,2017–18 – सिटेड इन डेविड क्ले लार्ज।
8. $CO_2$ ईमिशन फ्रोम फ्युल कोम्ब्युश्सन हाईलाइटस्, 2011।
9. रमेश चन्द्र एण्ड, डि.आर रवि, (2018) इनवारमेन्टल ईशु, लौ एण्ड टेक्नोलोजि– एन इण्डियन परसेप्टिव,।

❑❑❑

# नई शिक्षा नीति में डिजिटल स्वरुप लेती हिन्दी एवं सम्भावनाएं

श्रवण कुमार शर्मा[1], नीलम शर्मा[2]
[1]विभागाध्यक्ष, कम्प्यूटर विज्ञान सकाय, आर एन.टी. पी.जी. कॉलेज कपासन, चित्तौडगढ
[2]शिक्षिका, हिन्दी विभाग विवेकानन्द उच्च माध्यमिक विध्यालय चन्देरीया, चित्तौडगढ

*एक अनुमान के अनुसार 'यदि इसी तरह पेड़ काटे जाते रहे और नए पेड़ नहीं लगाए गए तो अगले 10–15 वर्षों के बाद हमारे पास पढ़ने–लिखने के लिए कागज नहीं होगा।'' यदि यह अनुमान सही हो जाए तो हमारी अगली पीढ़ी की पढाई–लिखाई कैसे होगी। यदि ऐसा कुछ नही भी हुआ तो जिस गति से कप्यूटर और सूचना प्रौद्योगिकी का विकास हो रहा हैए उसमें 10–15 वर्षों के बाद हमारे पढ़ने–लिखने की व्यवस्था में कप्यूटर का क्या योगदान होगा। ऐसे कुछ प्रश्न हैं जो वर्तमान शिक्षा प्रणाली में डिजिटल माध्यमों के जोड़े जाने हेतु हमें प्रेरित करते हैं। ऐसी स्थिति में डिजिटल शिक्षण (Digital Teaching) और डिजिटल अधिगम (Digital Learning) जैसी प्रणालियाँ आज चल पडी है। भविष्य में उन्ही समाजों और उन्ही भाषाओं का अस्तित्व रहेगा जो डिजिटल माध्यमों से अपने–आप को जोड सकेंगे। इन्ही सब बातों को देखते हुए हिंदी को वर्तमान ग्लोबल जगत में मजबूती से स्थापित करने के लिए यह आवश्यक है कि डिजिटल हिंदी पर भी हिंदी के शोधकर्ताओं और विद्वानों द्वारा कार्य किया जाए।*

*डिजिटल हिंदी एक व्यापक सकल्पना है। इसमें मुख्य रूप से चार बातों को रखा जा सकता है– डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हिंदी सामग्री का विकास, डिजिटल कार्यक्रमों या सॉफ्टवेयरों द्वारा हिंदी शिक्षणए डिजिटल हिंदी माध्यम से अन्य विषयों का शिक्षण और हिंदी के भाषिक सॉफ्टवेयरों का विकास। प्रस्तुत शोध–आलेख मे इन पर सक्षेप में चर्चा की जा रही है।*

## डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हिंदी सामग्री का विकास

यह डिजिटल हिंदी का प्राथमिक स्तर या पक्ष है। इसका सबध किसी भाषा को डिजिटल करने, से लेकर उसको डिजिटल स्तर पर सम्पन्न करने से है, जिसका तात्पर्य है डिजिटल रूप में अर्थात कप्यूटर में उस भाषा की सामग्री का अधिक–से–अधिक विकास करना। यह दो रूपों मे किया जा सकता है– ऑनलाइन और ऑफलाइन। वैसे सामग्री ऑनलाइन हो तो उसे डाउनलोड करके ऑफलाइन प्रयोग किया जा सकता है। इसी प्रकार सी.डी, या डी. वी.डी, आदि माध्यमों से ऑफलाइन सामग्री उपलब्ध कराई जा सकती है। आज इस दिशा में हिंदी के लिए अनेकानेक कार्य हो रहे हैं। ये कार्य ऑनलाइन भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं जिनका विश्व में कहीं भी और कभी भी उपयोग किया जा सकता है। ऑनलाइन ये वेबसाइट, ब्लॉग, पोर्टल, कोश आदि किसी भी रूप में हो सकते हैं। इसी यह पाठ, चित्र, ऑडियो, विडियो आदि में से किसी भी प्रकार की सामग्री हो सकती है।

इस दृष्टि से हिंदी बहुत अधिक सामग्री उपलब्ध है जो दिनों–दिन बढ़ती जा रही है। उदाहरण के लिए महात्मा गाधी अतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के http://www.hindisamay.com/ को देखा जा सकता है, जिसमें हिंदी के प्रमुख साहित्यकारों की रचनाओं की सामग्री लगभग पाँच लाख पृष्ठों में उपलब्ध है और आगे भी कार्य निरंतर जारी है। हिंदी के विविध रचनाकारों को इसमें वर्णानुक्रम में उनके नाम के अनुसार खोजा जा सकता है, अथवा हिंदी साहित्य के विविध क्षेत्रों के लिए दिए गए टैबों को क्लिक करके भी आवश्यक सामग्री प्राप्त की जा सकती है–

## डिजिटल कार्यक्रमों या सॉफ्टवेयरों द्वारा हिंदी शिक्षण

हिंदी भारत की राजभाषा होने के साथ–साथ हमारी सपर्क भाषा भी है। यह विश्वभाषा बनने की ओर भी प्रयत्नशील है। आज देश–विदेश में हिंदी सीखने वालों की भरमार है। उन सभी को उनकी आवश्यकता के अनुसार शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराना हिंदी के शिक्षण प्रतिष्ठानों की जिम्मेदारी है। अभी तक यह सामग्री पाठ्य–पुस्तकों या ई–टेक्स्ट के रूप में उपलब्ध हो सकी है। डिजिटल हिंदी के अतर्गत हिंदी को एक भाषा के रूप में सीखने वाले सभी विद्यार्थियों और अध्येताओं को सॉफ्टवेयर और प्रोग्राम के रूप में हिंदी की भाषिक सामग्री उपलब्ध कराई जाए। इस कार्यक्रम को डिजिटल हिंदी शिक्षण नाम दिया जा सकता है। इसे दो आधारों पर देखा जा सकता है–

1. **भाषाक्षेत्र के आधार पर:** इस दृष्टि से डिजिटल हिंदी शिक्षण के तीन प्रकार किए जा सकते हैं–

   **हिंदीभाषी क्षेत्र** : हिंदीभाषी क्षेत्रों मे हिंदी शिक्षण के लिए एकभाषिक सॉफ्टवेयर प्रयोग मे लाए जा सकते हैं। इन

सॉफ्टवेयरों में हिंदी शिक्षण की सामग्री भी होगी और माध्यम भी।

**हिंदीतर भारतीय भाषा क्षेत्र** : इसका तात्पर्य उन भारतीय क्षेत्रों से है जिनकी मातृभाषा या प्रथम भाषा हिंदी नहीं है। इन क्षेत्रों में शिक्षण की सामग्री तो हिंदी होगी, किंतु माध्यम संबंधित क्षेत्र की मातृभाषा या प्रथम भाषा होगी। अतः शिक्षण संबंधी निर्देश और अन्य बातें विद्यार्थियों की अपनी भाषा में होंगी, शिक्षण सामग्री हिंदी होगी। आवश्यकतानुसार उसे भी द्विभाषी किया जा सकेगा।

**अन्य देश** : भारत के बाहर जिस देश के भी लोग हिंदी सीखते हैं या सीखना चाहते हैं, उन्हें उनकी भाषा में हिंदी शिक्षण की सामग्री सॉफ्टवेयर के रूप में उपलब्ध कराई जा सकती है। अतः इसमें माध्यम के रूप में विदेशी भाषाएँ रहेंगी।

2. **शैक्षिक स्तर के आधार पर** : इस दृष्टि से भी डिजिटल हिंदी शिक्षण के तीन प्रकार किए जा सकते हैं–

**प्राथमिक शिक्षा** : प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा–1 से कक्षा–8 तक किया जाने वाला शिक्षण इसके अंतर्गत आएगा। प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर ही डिजिटल उपकरणों का प्रयोग करने की पर्याप्त आवश्यकता रहती है, क्योंकि ऑडियो–विजुअल सामग्री और एनिमेशन आदि के माध्यम से शिक्षण को अधिक प्रभावशाली तथा मनोरंजक बनाया जा सकता है।

**माध्यमिक शिक्षा** : माध्यमिक शिक्षा से तात्पर्य कक्षा–6 से कक्षा–12 तक के शिक्षण से है। इस स्तर पर भी हिंदी की सामग्री को डिजिटल रूप में प्रस्तुत कर सॉफ्टवेयर द्वारा शिक्षण किया जा सकता है।

**उच्च शिक्षा** : इसमें उच्च माध्यमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा दोनों समाहित है। जैसे–जैसे हम उच्च शिक्षा की ओर बढ़ते हैं, वैसे–वैसे विश्लेषणात्मक सामग्री की आवश्यकता बढ़ने लगती है। अतः इस स्तर पर विश्लेषणात्मक और गंभीर सामग्री के निर्माण की आवश्यकता होगी। इसके अलावा उच्च शिक्षा में विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से सोचता है, ऐसी स्थिति में उसके अंदर कुछ बिल्कुल नए प्रश्न उठ सकते हैं। ऑनलाइन प्रश्नोत्तर का माध्यम भी होना चाहिए, जिससे विद्यार्थी विभिन्न विद्वानों और विषय–विशेषज्ञों के साथ अपने प्रश्नों को साझा करके समुचित उत्तर प्राप्त कर सकें।

## डिजिटल हिंदी के माध्यम से अन्य विषयों का शिक्षण

डिजिटल हिंदी में केवल डिजिटल स्तर पर हिंदी का शिक्षण ही नहीं है, बल्कि हिंदी माध्यम में अन्य विषयों का शिक्षण भी इसमें सम्मिलित है। आरंभ में प्राथमिक स्तर पर एक सॉफ्टवेयर के अंतर्गत सभी विषयों को रखा जा सकता है। बाद में सामग्री बढ़ने के कारण सभी विषयों के अलग–अलग सॉफ्टवेयर बनाकर कक्षा आधारित पैक बनाए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए डिजिटल हिंदी : 10 एक पैक हो सकता है, जिसमें कक्षा–10 के लिए आवश्यक और पढ़ाए जाने वाले सभी विषयों के अलग–अलग सॉफ्टवेयर एक साथ दिए गए हों। इसी प्रकार अन्य कक्षाओं हेतु सामग्री के पैक भी बनाए जा सकते हैं।

## हिंदी के भाषिक सॉफ्टवेयरों का विकास

यह हिंदी को डिजिटल स्तर पर ले जाने की उच्चतम अवस्था है। इसका संबंध हिंदी के लिए और हिंदी से संबंधित सभी प्रकार के सॉफ्टवेयरों के विकास से है। ये सॉफ्टवेयर भी कई प्रकार हैं। इन्हें निम्नलिखित उपशीर्षकों के अंतर्गत समझा जा सकता है–

1. **टंकण और फॉन्ट**: इनका मुख्य संबंध कंप्यूटर पर हिंदी माध्यम से टंकण करने और उसका किसी भी कंप्यूटर पर प्रयोग करने से है। इससे संबंधित कुछ प्रमुख कार्य इस प्रकार हैं–

   (क) फॉन्ट डिजाइनिंग

   (ख) फॉन्ट परिवर्तन

   (ग) यूनिकोड तकनीक आदि।

2. **शोधन**: यहाँ शोधन से तात्पर्य है– किसी टंकित पाठ में आवश्यक सुधार करना। यह सुधार विराम–चिह्न, वर्तनी, मानक प्रयोग और व्याकरण आदि में होने वाली त्रुटियों के संबंध में हो सकता है। अतः इसके अंतर्गत निम्नलिखित कार्यों से जुड़े सॉफ्टवेयर आते हैं–

   (क) विराम चिह्न सामान्यीकरण संबंधी प्रणाली ऐसे सॉफ्टवेयर जो विराम–चिह्न संबंधी त्रुटियों में सुधार करते हैं।

   (ख) वर्तनी परीक्षण प्रणाली/वर्तनी जाँचक ऐसे सॉफ्टवेयर जो वर्तनी संबंधी त्रुटियों की पहचान करते हैं और सुझाव प्रस्तुत करते हैं।

   (ग) मानक प्रयोग संबंधी प्रणाली किसी भाषा में लेखन में मानक और अमानक और प्रयोग होने की स्थिति में अमानक प्रयोगों को मानक में परिवर्तित करने वाले सॉफ्टवेयर इस वर्ग में आएँगे।

   (घ) व्याकरण परीक्षण प्रणाली/ व्याकरण जाँचक: व्याकरण संबंधी त्रुटियाँ होने पर उनका परीक्षण कर सुधार प्रस्तुत करने वाले सॉफ्टवेयर इसके अंतर्गत आते हैं।

3. **हिंदी का भाषिक अनुप्रयोग** : इसका संबंध हिंदी के भाषायी ज्ञान को मशीन में स्थापित करने से है, जहाँ हिंदी के सभी भाषिक स्तरों– ध्वनि, शब्द, पदबंध, वाक्य से संबंधित विश्लेषण से संबंधित नियम दिए जाते हैं। इसके अंतर्गत निम्नलिखित प्रकार के सॉफ्टवेयर आते हैं–

   (क) इलेक्ट्रानिक शब्दकोश (Electronic Lexicon) इसमें मशीन में और मशीन के लिए बनाए गए शब्दकोश (lexicon) आते हैं। ये शब्दकोश एकभाषी, द्विभाषी अथवा बहुभाषी हो सकते हैं।

(ख) रूप विश्लेषक (Morph Generator) : ऐसे सॉफ्टवेयर जो पदों (वाक्य में प्रयुक्त होने वाले शब्दों) का रूपिमिक विश्लेषण करते हैं।

(ग) रूप प्रजनक (Morph Analyzer) : ऐसे सॉफ्टवेयर जो शब्दों से पदों (वाक्य में प्रयुक्त होने वाले रूपों) का प्रजनन करते हैं।

(घ) टैगर (Tagger) : ऐसे सॉफ्टवेयर जो किसी पाठ के प्रत्येक शब्द के साथ उसके टैग से संबंधित सूचनाएँ जोड़ देते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं– संदर्भ–मुक्त और संदर्भ–युक्त।

(ङ) टोकनाइजर (Tockenizer) : यह प्रत्येक पद (शब्द) या पद (शब्द) स्तरीय इकाई को चिह्नित करने की प्रणाली है।

(च) पदबंध चिह्नक (Phrase Marker) : किसी वाक्य के पदबंधों को उनके संरचनात्मक और व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर चिह्नित करने वाले सॉफ्टवेयर इसके अंतर्गत आते हैं।

(छ) चंकर (Chuncker) : यह भी एक प्रकार्य को सपन्न करने वाले शब्दघ्पद समूहों को चिह्नित करने वाली प्रणाली है।

(ज) पार्सर (Parser) : किसी वाक्य के सभी घटकों को उनकी रचना के अनुसार विश्लेपित करने वाली प्रणाली पार्सर है, जो सभी इकाइयों के बीच रैखिक और अधिक्रमिक सबधों को व्यक्त करती है।

4. **कार्पस संबंधी प्रणालियाँ**: आज भाषा सबंधी संगणकीय उपकरणों के निर्माण में कार्पस का विशेष महत्व है। अतः कार्पस निर्माण, अनुरक्षण (maintenance) एवं कार्पस आधारित ससाधन हेतु प्रयोग में आने वाले सॉफ्टवेयर इसके अंतर्गत आएँगे। उदाहरण के लिए इस प्रकार के कुछ प्रमुख सॉफ्टवेयर शब्द आवृत्ति गणक (Word Frequency Counter) संदर्भ में शब्द प्राप्तकर्ता (Key Word in Context Finder), कॉनकॉर्डेंस प्रोग्राम, कार्पस, लाइनर, शब्द–गुच्छ प्राप्तकर्ता (Word Clusters Finder) आदि हैं।

## डिजिटल हिंदी : संभावनाएँ

वास्तव में डिजिटल हिंदी एक बहुत ही व्यापक संकल्पना है जिसका उद्देश्य डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हर तरह से हिंदी को अनुप्रयोग और संसाधन हेतु सक्षम बनाना है। भाषावैज्ञानिक दृष्टि से हिंदी का यदि अर्थ और प्रोक्ति स्तर पर भी विश्लेषण कर लिया जाता है, तो मशीन को हिंदी में तर्क करने और निर्णय लेने में भी सक्षम बनाया जा सकेगा। यदि संभव हो पाता है तो हिंदी माध्यम के रोबोट भी विकसित किए जा सकेंगे। यद्यपि इसके लिए शब्दकोशीय स्तर पर एक संरचित निरूपण की आवश्यकता है, जो अभी तक नहीं हो सका है। किंतु अगले 5–10 वर्षों में निश्चय ही इस दिशा में कोई–न–कोई उल्लेखनीय कार्य आ जाएगा।

इस प्रकार संक्षेप में, डिजिटल हिंदी के अंतर्गत कंप्यूटर में हिंदी माध्यम से और हिंदी से संबंधित डाटा को उपलब्ध कराने से लेकर मशीन को हिंदी में तर्क करने और निर्णय लेने में सक्षम बनाने तक के सभी कार्य आ जाते हैं। ऑनलाइन और ऑफलाइन सामग्री उपलब्ध कराना इस दृष्टि से प्राथमिक स्तर का कार्य है। आज यह कार्य पर्याप्त मात्रा में हो रहा है। सॉफ्टवेयर द्वारा हिंदी शिक्षण को डिजिटल हिंदी शिक्षण नाम दिया जा सकता है। अभी इस दिशा में काम आरंभ हुए हैं। इसी प्रकार भाषिक सॉफ्टवेयरों के निर्माण का कार्य भी विविध स्तरों पर चल रहा है। संरचित निरूपण और तार्किक संजाल निर्माण के क्षेत्र में अभी बहुत अधिक कार्य किए जाने की संभावना है।

## संदर्भ

1. भाषाविज्ञान का सैद्धांतिक, अनुप्रयुक्त एवं तकनीकी पक्ष (2011)
2. सी–शार्प प्रोग्रामिंग एवं हिंदी के भाषिक टूल्स (2012)
3. कार्पस भाषाविज्ञान (2014)
4. हिंदी का कंप्यूटेशनल व्याकरण

❑❑❑

# आधुनिकता के दर्पण में खोता हुआ बचपन

यासमीन
रविन्द्रनाथ टैगोर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कपासन

*बचपन एक ऐसी उम्र होती है, जब बगैर किसी तनाव के मस्ती से जिंदगी का आनंद लिया जाता है। नन्हे होठों पर फूलों से खिलती हंसी, वह मुस्कुराहट वह शरारत वह रूठना, मनाना, जिद पर अड़ जाना यह सब बचपन की पहचान होती है, सच कहें तो बचपन ही वह वक्त होता है, जब हम दुनियादारी के झमेलों से दूर अपनी ही मस्ती मे मस्त रहते हैं। परंतु आज बच्चों का वह बेखौफ बचपन कहीं खो गया है। आज मुस्कुराहट के बजाय उनके चेहरे पर उदासी व तनाव का आलम छाया रहता है। प्रस्तुत लेख में बचपन की सरलता का वर्णन किया है साथ ही उनके चेहरो पर जो उदासी छायी है उनके पीछे छिपे कारणो का भी उल्लेख किया गया है।*

## प्रस्तावना

बचपन एक प्राकृतिक घटना ना होकर समाज की एक रचना है। इतिहासकार फिलिप एरिस ने अपनी पुस्तक सेंचुरी ऑफ चाइल्डहुड में इस बात को उठाया है। इस विषय को कनिंघम द्वारा अपनी पुस्तक इन्वेशन ऑफ चाइल्डहुड में आगे बढाया गया, जो मध्यकाल में बचपन के ऐतिहासिक पहलुओं पर नजर डालता है, जिसे वे विश्व युद्ध के बाद के 1950, 1960 तथा 1970 तक की अवधि के रूप में सदर्भित करते है।

बचपन बच्चे के सपूर्ण विकास का एक महत्वपूर्ण पहलू है। बचपन प्रायः जन्म के बाद तब शुरू होता है जब बच्चा शिशु अवस्था मे अपने आसपास की वस्तुओं से परिचित होने लगता है वह सर्वप्रथम अपनी मां को पहचानने लगता है ,हंसने लगता है स्पर्श करने लगता है वस्तुओं को पहचानने लगता है।

प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास के अपने संदर्भ होते हैं, जिसमें बचपन के अनुभवों का अपना एक विशेष स्थान होता है बचपन व्यक्ति के सामाजिक सांस्कृतिक परिपेक्ष्य के अनुरूप विशिष्ट होते है। अलग–अलग समाज व सस्कृतियों मे बच्चों को भिन्न–भिन्न रूपों में समझा जाता है।

जब बचपन परवान चढता है अर्थात जब शिशु बोलना चलना सीख जाता है, तब उसका अगला कदम लोगों, जीव– जंतु तथा वातावरण से संपर्क हेतु तीव्र हो जाता है यह तीनों शिशु के मस्तिष्क के विकास मे बहुत बडी भूमिका अदा करते है। उसमे संस्कार, संस्कृति, व्यवहार और प्रतिभा की उत्पत्ति करते हैं। हर बच्चा एक दूसरे से अलग प्रवृत्ति का होता चला जाता है। उसमे मस्तिष्क का विकास चारो दिशाओं में जाकर किसी एक प्रतिभा का चुनाव करने लगता है। इसी बचपन की अवस्था मे यह कहा जाता है कि "पुत् के पाव पालने में नजर आने लगते हैं" अर्थात उसमे एक विशेष प्रतिभा का उदय होने लगता है।

बचपन में की गई बाल सुलभ गतिविधियाँ विभिन्न क्रियाएँ खेल शरारतें आदि बचपन का नाम लेते ही हमारे मन मस्तिष्क मे उभर जाती है। हर व्यक्ति की चाहत होती है कि वह प्यारा बचपन पुनः लौट आए।

परंतु आधुनिकता के दर्पण मे वर्तमान में ना वह शरारतें हैं न गतिविधिया, न क्रियाए हैं जो प्राचीन मध्यकाल मे थी। आज हर कोई अपनी इच्छाओं को थोपने लगे हैं। माता–पिता की इच्छा हमारा बेटा डॉक्टर, इजीनियर, शिक्षक आदि बने। वे यह नही जानना चाहते कि बच्चे मे क्या प्रतिभा है प्रतिभा के अनुरूप बच्चा अच्छा जीवन बना सकता है लेकिन माता पिता की इच्छाओं ने बच्चों का बचपन बिगाड दिया है इसके अतिरिक्त कंप्यूटर मोबाइल ने बच्चों का बचपन छीन लिया है। और इन्हें बीमार बना दिया है। आधुनिकता एक सोच है एक विचार है जो व्यक्ति को इस दुनिया के प्रति अधिक जागरूक व मानवीय दृष्टिकोण से जीने का सही मार्गदर्शन दिखाते हैं, परंतु आधुनिकता के इस दौर मे बच्चों का बचपन खो रहा है। आधुनिकता पूर्ण रूप से मानसिक प्रक्रिया है मन ही अपने अनुसार परंपरा एव आधुनिकता की परिपाटी बनाता है जब मन यह प्रक्रिया पूर्ण करता है तो मनुष्य उसके अनुरूप कार्य करने लग जाती है।

बचपन एक ऐसी उम्र होती है, जब बगैर किसी तनाव के मस्ती से जिंदगी का आनन्द लिया जाता है। नन्हे होठों पर फूलों सी खिलती हँसी, वो मुस्कुराहट, वो शरारत, रूठना, मनाना, जिद पर अड़ जाना ये सब बचपन की पहचान होती है। सच कहें तो बचपन ही वह वक्त होता है, जब हम दुनियादारी के झमेलों से दूर अपनी ही मस्ती मे मस्त रहते हैं।

क्या कभी आपने सोचा है कि आज आपके बच्चों का वो बेखौफ बचपन कहीं खो गया है? आज मुस्कुराहट के बजाय इन नन्हे चेहरो पर उदासी व तनाव क्यों छाया रहता है? अपनी छोटी सी उम्र मे पापा और दादा के कधो की सवारी करने वाले बच्चे आज कधो पर भारी बस्ता टाँगे बच्चों से खचाखच भरी स्कूल बस की सवारी करते है।

छोटी सी उम्र मे ही इन नन्हों को प्रतिस्पर्धा की दौड में शामिल कर दिया जाता है और इसी प्रतिस्पर्धा के चलते उन्हें स्वय को दूसरो से बेहतर साबित करना होता है। इसी बेहतरी व प्रतिस्पर्धा की कशमकश मे बच्चों का बचपन कहीं खो सा जाता है।

इस पर भी माँ–बाप उन्हे गिल्ली–डडे, लट्टू, कैरम व बेट–बॉल की जगह वीडियोगेम थमा देते है, जो उनके स्वभाव को और अधिक उग्र बना देते हैं। अक्सर यह देखा जाता है कि दिनभर वीडियोगेम

से चिपके रहने वाले बच्चों में सामान्य बच्चों की अपेक्षा चिड़चिड़ापन व गुस्सैल प्रवृत्ति अधिक पाई जाती है।

आजकल होने वाले रियलिटी शो भी बच्चों के कोमल मन में प्रतिस्पर्धा की भावना को बढ़ा रहे हैं। नन्हे बच्चे जिन पर पहले से ही पढ़ाई का तनाव रहता है। उसके बाद कॉम्पीटिशन में जीत का दबाव इन बच्चों को कम उम्र में ही बड़ा व गभीर बना देता है। अब उन्हें अपने बचपन का हर साथी अपना प्रतिस्पर्धी नजर आता है, जिसका बुरा से बुरा करने को वे हरदम तैयार रहते हैं। क्या आप जानते हैं कि एनिमिनेशन के द्वारा बच्चों को प्रतियोगिता से अचानक उठाकर बाहर कर देना उनके कोमल मन पर क्या प्रभाव डालता होगा? नौकरीपेशा माता–पिता के लिए अपने बच्चों को दिनभर व्यस्त रखना या किसी के भरोसे छोडना एक फायदे का सौदा होता है क्योंकि उनके पास तो अपने बच्चों के लिए खाली वक्त ही नहीं होता है इसलिए वे बच्चों के बचपन को छीनकर उन्हें स्कूल, ट्यूशन, डास क्लासेस, वीडियोगेम आदि में व्यस्त रखते हैं, जिससे कि बच्चा घर के अदर दुबककर अपना बचपन ही भूल जाए। बाहर की हवा, बाग–बगीचे, दोस्तों के साथ मौज–मस्ती यह सब क्या होता है, उन्हें नहीं पता। हाँ नया वीडियोगेम कौन सा है या कौन सी नई एक्शन मूवी आई है, ये इन बच्चों को बखूबी पता होता है।पढाई–लिखाई अपनी जगह है, आज के दौर में उसकी अहमियत को नजरअदाज नहीं किया जा सकता है परतु बच्चों का बचपन भी दोबारा लौटकर नहीं आता है। कम से कम इस उम्र में तो आप उन्हें खुलकर जीने दें और उन्हें बचपन का पूरा लुत्फ उठाने दें।

बचपन गुजर जाने के बाद उसे लौटाया नही जा सकता मशहूर गजल गायक जगजीत सिह ने यह गजल बरसों पहले गई थी जिसे आज भी सुनकर हमे अपना बचपन याद आता है –

**यह दौलत भी ले लो यह शोहरत भी ले लो,**
**भले छीन लो मुझसे मेरी जवानी,**
**मगर मुझको लौटा दो बचपन का सावन,**
**वह कागज की कश्ती वो बारिश का पानी।।**

## शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र में विवरणात्मक शोध प्रविधि के माध्यम से मैंने आधुनिकता के दर्पण में खो रहा है बचपन को समझने एव समझाने का प्रयास किया गया है क्योंकि किसी के बारे में जानना है तो उसकी अवधारणा स्पष्ट और प्रक्रिया को जानना अनत आवश्यक है।

## विचार विमर्श

प्रस्तुत शोध पत्र उन तमाम मसलों को उजागर करता है जो आधुनिक तो है लेकिन कहीं ना कहीं मानसिक गुलामी का शिकार है। आधुनिकता को अपनाने में उसकी प्रसगिकता तथा समाज को उसकी अभूतपूर्व देन क्या है समाज को वह कहा तक मददगार है बचपन की बदलती शक्ल में अब मासूमियत और अल्हडपन खोता जा रहा है। रोजाना टीवी और अखबारों पर प्रतिभाओं का उदय होने की जानकारी तो मिलती है पर कई घटनाए बुद्धिजीवी वर्ग को जक–जोर देती है मासूम के मन में अब आधुनिकता अगड़ाई ले रही है।

इन सबके बाद यह सोचनीय है कि अब बचपन बचा कहा है? गलिया सुनसान हैं और मैदान जितने भी बचे हैं, वे वीरान है। दरअसल गलियों में धमा–चौकडी करने वाला बचपन आज इटरनैट के मकडजाल में फसता जा रहा है। यही कारण है कि बच्चों को अपने होमवर्क के बाद जो समय मिल रहा है, उसे वे सोशल साइट्स व गेम्स खेलने में गवा रहे हैं, इसके कारण उनकी आखों पर विपरीत प्रभाव पड रहा है तथा वे चिडचिडेपन का शिकार हो रहे है।

हाल ही में ब्लू व्हेल नामक एक मोबाइल गेम के कारण भारत में एक के बाद एक बच्चों द्वारा आत्महत्या करने की खबर ने सबको हैरत में डाल दिया था। आखिर ऐसी नौबत क्यों आई? क्योंकि बच्चों को कभी भी अभिभावकों ने मैदान में खेलने के लिए प्रोत्साहित किया ही नहीं। कभी मैदान में खेले जाने वाले खेलों के प्रति उनकी जिज्ञासा उत्पन्न करने की कोशिश की ही नहीं। इसका कारण धनोपार्जन की अधी दौड में अभिभावकों का अपने बच्चों व परिवार से कट जाना है।

कहते हैं कि बच्चे भगवान का रूप होते हैं। चचलता, मासूमियत, भोलापन, सादगी व सच कहने की गजब शक्ति बच्चों में होती है लेकिन आज उसी निर्भीक बचपन को अत्याधुनिकता की नजर लग गई है। यहा फिर अभिभावकों की बच्चों को शीघ्र बडा बनाने की तलब ने कहीं न कहीं उनके बचपन को छीनने का प्रयास किया है। अगर यही स्थिति रही तो फिर बचपन और बुढापे में क्या अतर रह जाएगा? हमे इन समस्याओं को लेकर गभीरतापूर्वक चितन–मनन व मथन करने की महती आवश्यकता है।

आज आधुनिकता की आड में कई ऐसे कार्य हो रहे हैं जिसकी अभिव्यक्ति करना शायद सभव भी ना हो सके जब बचपन याद आता है तो हम चोरियों खेल और शरारती का इतिहास मन को मन के किसी कोने से निकलकर आखों के सामने तैरने लगता है बदलते दौर में क्या हम अपना ही पुराना बचपन कहीं दिखता है आधुनिकता ने बचपन पर पिछले दशक में काफी अतिक्रमण कर लिया है और समाज के बीच मुन्ना गुड्डू राम शाम को बदल लिया है। इनके हिसाब से बचपन ने भी अपना रूप बदल लिया है।

## सन्दर्भ

1 मैकमिलन डिक्शनरी फॉर स्टुडेंट्स मैकमिलन, पैन लिमिटेड (1981), पृष्ठ 173

2 मर्लिन गार्डनर (2006), क्रिश्चियन साइस मॉनिटर, 29 जून

3 स्टीनबर्ग, शर्ली आर और जो एल किन्चेलो. किडरकल्चर: द कॉर्पोरेट कस्ट्रक्शन ऑफ चाइल्डहुड वेस्टव्यू प्रेस इक, 2004

4 यू.एस. चिल्ड्रन एड टीन्स स्पेंड मोर टाइम ऑन एकडेमिक्स Archived 2 जुलाई 2007

□□□

RNT (Ravindra Nath Tagore) P.G. College
Kapasan, Chittorgarh (Raj.)
Email : rntkapasan1@gmail.com